रमल नवरत्न

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

॥ श्रीः ॥

रमलनवरत्न

सीतारामसूनुपरमसुखोपाध्याय रचित, श्रीरंगलाल
विशदीकृत, टीहरीगढवालनिवासीज्योतिर्वित्पण्डित
महीधरशर्मा दानाधिकारी कृत-
भाषाटीकासहित।

रमलदानियाल भाषा.

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण- सन् २००० सम्वत् २०५७

मूल्य ३० रुपये मात्र

सर्वाधिकार-प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

श्रीः ।

अथ रमलनवरत्न विषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठाङ्क.
मङ्गलाचरणम्	१
अवसानसिंह व उसके पुत्रोंसे लब्ध-प्रतिष्ठत्व	,,
स्वज्ञाति और वंशवर्णनपूर्वक अवन्तीपुरिमें ग्रन्थकानिर्माणकरना	,,
ग्रन्थशोधकवानाम	२
नवरत्नोंकेनाम	,,
नवरत्नोके कंठमेंधारणकरनेकाफल	,,
नवरत्नोंकोगोप्यरखनेकी आज्ञा	३
पांशेबनानेका काल और क्रम	,,
पांशोंका चित्र पाँशा गेरनेमें काल तथा नियम	४
पांशाअभिमंत्रितकरनेकामंत्र	५
प्रस्तारप्रकार	,,
प्रस्तारकासचित्रउदाहरण	६
सोलहशकलहोनेमेंकारण	७
शकुनक्रमसेशकलोंकेनाम	,,
शकलोंकेस्वरूप	,,
खारिज दाखिलआदिसंज्ञा और दिन रात्रिमेंबलाबलत्वस्त्रीपुरुषआदि संज्ञा और शुभाशुभादिकथन	८
शकलोंकेतत्ववर्ण और दिशावर्णन	९
शकलोंकेराशिस्वामी और दिशावर्णन....	१०
शकलोंकेराशिस्वामी और चरस्थिरआदि संज्ञा	,,
लह्यानसे जमाततक गुणवर्ण	११
फरहासे अतवेखारिजतक गुणवर्ण	१३
नकोंसे तरिखतक गुणवर्ण	१५
उम्महाँतादिसंज्ञा	१६
स्थानोंकीकेंद्रादिसंज्ञा	,,
अथशकलोंके साक्षी	१७
भाषाकारसंमति	,,
शकलकिरक्कादशक्रमफाचक्र	१९
शकलोंकासंज्ञाचक्र	२०
शकलोंकीमृदुकाठिन्यादिसंज्ञाओंकाचक्र	२१
शकलोंकीआतशीखाकीआदिसंज्ञाओंकाचक्र	२२
शकलोंकीअंधचिपिटआदिसंज्ञाओंकाचक्र	२३
शकलोंकेबलाबल	२४
खण्डोंकामैत्र्यादिचक्र	२५
सप्तग्रहोंकावर्णन	,,
शकुनअब्दहादिक्रम	,,
उदाहरण	२६
गुप्ततत्वोंकोस्थापनविधि	,,
अब्दहविजदहकोपरिभाषा	२७
अब्जद परिभाषा	२८
मीजानक्रम	२९
फर्हाक्रमपरिभाषा	३०
अस्सहपरिभाषा	,,
सातोंपंक्तियोंकाप्रयोजन	३१
दृष्टिबल	,,
प्रश्नोपकरण	३२
छःप्रकारकेलक्षणोंके नाम औरलक्षण	,,
पांशोंकेबिनाप्रस्तारबनानेकीविधि	३३
इन्किलाबकीविधि	,,
मरातिबउपकरणकेभेद	३४
इमतियाजउपकरणकेभेद	३५
तसीरउपकरणकेलक्षण	,,
तकरारसंज्ञकउपकरणकेलक्षण	३६
उपकरणोंकेबिनाप्रश्नकहनाव्यर्थ	,,
प्रथमघरसे छठे घरतक कहनेयोग्यप्रश्न	३७

विषय.	पृष्ठाङ्क.
सप्तमसे बारहघरोंतकप्रश्न	३९
इसीप्रकारअन्यग्रहोंकाजानना	४०
प्रश्नकेअर्थइष्टदेवनति	४१
पृच्छकोंकीसंख्याकाविचार	४२
पृच्छकोंकेमनःकल्पितकाकथन	,,
प्रश्नोंमेंचारमुख्यकारण	४४
प्रश्नकेचारकारणोंकाउदाहरण	४५
मूकप्रश्नकेपांचप्रकार और बद्ध प्रस्तार कथन	४६
बद्धप्रस्तारकाउद्घाटनअर्थात्खोलना	५१
शून्यचालन	,,
भावप्रश्ननिरूपण	५२
निर्गमागमप्रश्नसिद्धि	५५
स्थिरप्रश्न	५७
संशयमें नियमप्रकार	,,
इक्किलावकाप्रयोजन	५८
प्रथमभावमे विशेषविचार....	५९
समयावधिजाननेकेचक्रोद्धार	६०
विजदहांकचक्र	६१
द्वितीयभावमें विशेषकथन....	६२
कर्णमार्गदेखनेका क्रम	६३
तृतीयभावमें विशेषकथन	,,
चतुर्थभावमें विशेषकथन	६४
पंचमभावमें विशेषकथन	६६
गर्भका निर्णय	,,
संतानकी संख्याका विचार	६७
गर्भमें कन्या वा पुत्रका कथन	६८
संततिसंख्यामेंयवनोक्तअन्यकारण	,,
संततिकाजन्मकालतथाआयुकाकथन	६९
संततिकेधननिर्धनताकाप्रश्न	७०
षष्ठभवनकाविशेषविचारमेंरोगकथन	७१
रोगीके जीवनमरणकाज्ञान	७२
सप्तमभवनमें विशेषसेचौरप्रश्न	,,
चौर अपना है वा दूसरा यह ज्ञान	७३
चोरस्थान आदिज्ञान	७५
ग्रामस्थ और विदेशस्थचौरकाज्ञान	,,
चौरकेगमनमेंदिशाकाज्ञान	,,
समीपस्थ और ग्रामस्थ चौरके मार्गका प्रमाण	७६
दूरगतचौरऔरधनीकेमध्यमवर्तीग्रामोंकी संख्याका कथन	७७
चौरस्वरूपज्ञान	७८
लाभालाभप्रश्न	,,
अष्टमभवनमें विशेष ऋण छूटनेका-प्रश्न	७९
नवमभवनमें विशेषकथनपूर्वकजीवते मरेका प्रश्न	८०
दशमभवनमें वादियोंके जय-पराजयका विचार	,,
भोजनप्रश्नमें रस आदिका कथन	८१
लाभमें विशेषकथन	८३
व्ययमें विशेषकथन	८४
सपूर्णप्रश्नोंका अवधिज्ञान	,,
उम्महान्त आदि संज्ञाओंसे दिनघटी आदिकी अवधिका कथन	८६
उम्महान्तचक्र	८७
अवधिकेआदिमध्यअन्तमेंकार्यसिद्धि	,,
उम्महांतकाप्रयोजन	,,
मुष्टिकप्रश्नकथनमेंशकलोंकामृदुकठोरभाव	८९
लह्मानकआदिकोंकावर्णन	९०
शकलोंकीआकृति	,,
शकलोंकेनिवासस्थान	,,
शकलोंकेमौल्यअमौल्य	९१
लघुत्वगुरुत्व	,,
अन्यसंज्ञा	,,
शकलोंकीपूर्णआदिसंज्ञा	,,
शकलोंकेरस....	९२
भूमिकथन	,,

विषय.	पृष्ठाङ्क.	विषय.	पृष्ठाङ्क.
शकलोंकीधातुआदिसंज्ञा	.... ९२	बहुतप्रकारोंसेसम्वत्सरफलकथन	.... १०८
शकलोंकाशकुनक्रमसेरूपआदिचक्र	.... ९३	मासखण्ड गृहखण्डोंसे शुभाशुभ फल कथन	.... १०९
मुष्टिगतवस्तुकाप्रश्न	.... ,,	मासखण्डतत्वोंसे शुभाशुभकथन	.... ,,
मुष्टिप्रश्न	.... ९४	साबितशकलकेवशसे दशा और सूक्ष्म दशाफल	.... ११०
वस्तुकीकठोरता कोमलता आदिका कथन	.... ९५	मासखण्ड और दशाखण्डसे उत्पन्नहुई शकलसे फल	.... ११२
खण्डयोगसे मुष्टिगतवस्तुमें छिद्रादि विशेषकथन	.... ९७	अब्देशप्रकार	.... ११३
नामबन्ध	.... ९८	मासेशप्रकार	.... ११४
नामवर्णसंख्याकाकथन	.... ९९	दिनफलप्रकार	.... ११५
वर्णकथन	.... ,,	जगद्दर्पसाधन	.... ११६
चौरआदिकेनामनिकालनेका चक्र	.... १००	लह्यानकाफल	.... ,,
नामाक्षरनिकालनेकीविधि	.... १०१	कब्जुल खारिंजसे जमाततककाफल....	११७
नामाक्षरकाउदाहरण	.... १०२	फरहासे अङ्कीश तककाफल	.... ११८
अन्यप्रकारसेनामाक्षरकाकथन	.... १०३	हुम्रासे बयाज तककाफल	.... ११९
चोरकाप्रकटकरना	.... १०४	नुसुत्खारिजसे नुसुदाखिलतक	.... १२०
अन्यमतसे विभागकथन	.... १०५	अतबेखारिजसे तरीक तक फल	.... १२२
वर्षफलविचार	.... १०६	विद्वानोंसे प्रार्थना	.... ,,
प्रथमआदिखण्डसेद्वादशभाव पर्यंतफल	.... ,,	ग्रन्थकर्ताकेपितृपितामहादिकोंका नाम	.... १२३
ग्रहोंकेयोगवशसे फल	.... १०७	ग्रन्थसमाप्ति	.... १२४

इतिरमलनवरत्नानुक्रमणिका।

रमलप्रश्नावली–अनुक्रमाणिका ।

दैवी व परोक्षवार्ता प्रकटकरनेवाली जन्त्री...	.... १२५	इकारसे	.... १२८
उत्तरनिकालनेकी रीति....	.... ,,	ईकारसे	.... १२९
उपरोक्त चिह्नोंमें उदाहरण	.... १२६	उकारसे	.... १३०
प्रश्नकेदिन	.. ,,	ऊकारसे	.... १३१
अकारसे सोलह शकलोंका फल	.... १२७	ऋकारसे	.... १३२
आकारसे	.... १२८	ॠकारसे	.... १३३
		ऌकारसे	.... ,,
		ॡकारसे	.... १३४

विषय.	पृष्ठांक.
एकारसे	१३५
ऐकारसे	१३६
ओकारसे	१३७
औकारसे	१३८
अंकारसे	,,
अःकारसे सोलह शकलोंका फल	१३९

इतिरमलप्रश्नावल्नुक्रमणिकास्समाप्ता ।

अथ रमलदानियाल.

विषय.	पृष्ठांक.
मेराकार्यकितनो दिनोंमें होगा	१४१
धन होगा कि नहीं	,,
फलानेकेपास मेराजानाशुभहैयाअशुभ	,,
मेरीअवस्थाअवसेआगेकैसीबीतेगी	,,
मेराभाईमुझपरखुशीहैयानहीं	१४२
औरतसेविवाहका प्रश्न	,,
मेरीखोईवस्तुमिलेगीयानहीं	१४३
वर्षा होगी या नहीं	,,
अन्न महँगा होगा या सस्ता	,,
मेरा बाप मुझेकैसा चाहता है	१४४
मेरारोजगारहोवेगायानहीं	,,
परदेशीकाखरचाआवेगायानहीं	,,
फलानामेंमांगीवस्तुदेगायानहीं	,,
माशूक हाथ आवेगा या नहीं	१४५
गर्भवती प्रश्न	,,
खोया हुआ पशुका प्रश्न	१४७
चोरकाप्रश्न	,,
रोगीके प्रश्न	१४९
अमुकस्त्रीकोयहपुरुषछोडेगाकिनहीं	१५१
गयापरदेशीमरगयाहैसुखीयादुःखीहै	,,
अमानत (धरोहर) सोंपदेवेगायानहीं	,,
लडाई झगडाका प्रश्न	,,
मूकप्रश्न	१५२
मुझकोकिसवस्तुमेंफायदाहोगा	१५४
मैंनकिसीजगहआदमीभेजाहैसोवहाँ पहुँचा या नहीं	,,

विषय.	पृष्ठांक.
स्त्री रूसकरचलीगईसोकौनदिशामेंगई	१५४
मेरी वस्तुखोगई है	१५५
चोरने वस्तुकहाँ धरी है....	,,
परदेशमें जाना चाहताहूँफायदाहै ?....	,,
मेरा कौनदिशामें जाना अच्छा है	१५६
मेरा मिलना किन लोगोंसे होवेगा ...	,,
वहपुरुषमुझपर प्यारकाता है किनहीं...	,,
मेरे हाथमें क्या वस्तु है....	१५७
परदेशीनेस्त्रीकीहैकिनहीं....	,,
राजाबादशाहमुझको इनाम०	१५८
चोरशहरमेंहैअथवाबाहिरनिकलगया	,,
गतवस्तुमिलेगीकिनहीं	,,
मुझकोकलानकेपाससे०	१५९
मुष्टिप्रश्नकथन	,,
मूकप्रश्नका विचार	,,
मूकप्रश्न कहनेका दूसरा प्रकार	१६०
क्रमसे सोलह शकलके नाम तथा स्वरूप आदि	,,
लह्यानके नामस्व०	,,
कब्जुल्दाखिलके नाम स्व०	१६१
कब्जुलखारिजके नाम स्व०	,,
जमातके नामस्व०	,,
फरहाके नामस्व०	,,
उक्लाके नाम स्व०	,,
अंकीशके नाम स्व०	,,
हुमराके नाम स्व०	,,
बयाजकेनामस्व०	,,
नुसुरवारिजफेनामस्व०	,,
नुसुद्दाखिल	१६२
अतबेखारिजेनामस्व०	,,
मुन्कलीबकेनामस्व०	,,
अतबेदाखिलकेनामस्व	,,
इज्जत्माके,तारीखकेनामस्वरूपआदि	

इति रमलदानियालअनुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीगणेशाय नमः ।

रमलनवरत्न ।

भाषाटीकासमेत ।

यस्य प्रसादमधिगम्य सुराः समस्तास्तिष्ठन्ति सद्मसु निजेषु गतारिशंकाः । ध्यायन्तियं मुनिगणाः प्रणमामिशश्वल्लंबोदरंसकलविघ्नविनाशहेतुम् ॥ १ ॥

यस्याङ्घ्रिश्रीः सुश्रियं संतनोति तं श्रीनाथं श्रीगणेशं च नत्वा ।
भाषां कुर्वे खेमराजाज्ञयाङ्करत्नस्य प्रीत्या धरांतो मही सन् ।

जिस (श्रीनाथ) लक्ष्मीपति विष्णु यद्वा निज गुरुकी (चरणलक्ष्मी) पादपद्मशोभा संसारमें मङ्गल यद्वा ऐश्वर्य शोभा भलेप्रकार विस्तारित करती है ऐसे निजेष्टको तथा विघ्नविनाशक गणेशजीको भी नमस्कार करके (सन्) साधु मैं महीधर नामा "टीहरीगढ़वाल निवासी" श्रीसेठ खेमराजजीकी आज्ञासे रमलके नवरत्नग्रंथकी भाषाटीका करताहूँ–

टीका–ग्रंथकर्ता निर्विघ्नतापूर्वक ग्रंथसमाप्त्यर्थ अपने इष्ट देवताको प्रणाम करता है कि, जिसके प्रसाद पायके समस्त देवता दानवादि शत्रुओंका भय दूर करके अपने २ (स्थान) अधिकार वा लोकोंमें स्थित रहते हैं और मुनिजन अपने तपसिद्ध्यर्थ जिसका ध्यान करते हैं ऐसे (लंबोदर) गणेशको मैं ग्रंथकर्त्ता ग्रंथरचनामें विघ्नविघातार्थ वारंवार प्रणाम करताहूँ ॥ १ ॥

वाराणसीनृपतिगौतमवंशमुख्यबलवंतसिंहसचिवादवसानासिंहात् ॥ लब्धात्मवृत्तिपरमाद्यसुखः सनाढ्योरम्लेङ्करत्नमकरोन्निवसन्नवन्त्याम् ॥ २ ॥

टीका–श्रीकाशिराजबलवंतसिंह (जो गौतमऋषिके वंशमें मुख्य हैं) का मंत्री तिन अवसानसिंहसे पाई है आजीविका जिसने

ऐसा अवंतिदेशमें वसताहुआ सनाढ्यकुलोद्भव परमसुखनामा पण्डितने नवरत्ननामा रमलग्रन्थ बनाया ॥ २ ॥

तदस्त्यशुद्धं नितरां समंतान्नतत्रविद्वज्जनचित्त मोदः ॥ विज्ञार्थितः संप्रति तस्य शुद्ध्यैतद्रङ्ग लालो विशदीकरोति ॥ ३ ॥

टीका- वह ग्रन्थ सब जगह अत्यर्थ अशुद्ध है उसमें विद्वानोंका चित्त प्रसन्न नहीं होता तब इस समय विद्वज्जनोंने उसके शुद्ध करनेके हेतु प्रार्थित किया गया ऐसा रंगलालनामा इस नवरत्नको प्रगट करता है ॥ ३ ॥

अथ तावन्निर्मितनवरत्नानां नामानि क्रमं चाह ।

संज्ञाबलाबलदलोपकराणिमूकप्रश्नोतराऽवधि कमुष्टिहराख्यबंधाः॥४संवत्फलंचनवरत्नमिदं मनोज्ञंस्वान्तेचमत्कृतिकरं भुविसज्जनानाम् ॥ ५ ॥

टीका--अब ग्रंथकर्ताके बनाये नवरत्नोंके नाम एवं क्रमभी कहतेहैं कि (यहां रत्नसंज्ञक अध्याय हैं) प्रथम संज्ञा रत्न है, दूसरा बलाबल, तीसरा प्रश्नोपकरण " प्रश्नके साधन बतानेवाला " चौथा प्रश्नकहना, पाँचवाँ (अवधि) मियाद बताना, छठा मुष्टिगतद्रव्य बताना, सातवाँ (मूकप्रश्न) बेप्रकट किये प्रश्न बताना, आठवाँ चोरका नाम बताना, नवम वर्षपत्र बनाना, इन नौरत्नोंसे यह ग्रंथ मनोज्ञ तथा संसारमें सज्जनोंके मनमें चमत्कार करनेवाला है॥४।५

कृत्वास्वकंठगमसुंनवरत्नसंघंप्रोतंस्वबुद्धिव्रतती प्रसरप्रतानैः ॥ संप्राप्तभूरिमहिमामलकीर्तिछत्रो विद्वान्विभातुबुधराजसभास्वभीक्ष्णम् ॥ ६ ॥

टीका--इस नवरत्नके समूहको अपनी बुद्धिलताके विस्तारित

सूत्रमें ग्रथित करके अपने कंठमें धारणकरके अर्थात् बुद्धिसे विचारपूर्वक कंठोपस्थित करके विद्वान् बडी महिमा पायके निर्मल कीर्तिरूपी छत्र धारण करके पंडित राजसभामें वारंवार शोभायमान होवै ॥ ६ ॥

नवरत्नमदोतिगोपनीयं नहि देयं कुहाचित् सु
दुर्जनेभ्यः ॥ न गुरुद्विजदेवनिंदकाय नहिनष्टाय
वदेदिदंसुगोप्यम् ॥ ७ ॥

टीका–यह नवरत्न अतिगुप्त रखनेयोग्य यद्वा अतिरक्षा करनेयोग्यहै दुर्जनोंको कदाचित् भी न देना, तथा गुरु ब्राह्मण और देवता की निंदा करनेवालेको तथा, नष्टबुद्धि, नास्तिक, नष्टधर्म कर्मवालेकोभी सुगोप्य यह नवरत्न न कहना ॥ ७ ॥

अथास्मिन् शास्त्रे पाशकप्राधान्यात् प्रथमं पाशक-
निर्माणविधिरुच्यते ।

वस्वक्षंगुरुसायनेसुललितंस्निग्धंरवौमेषगेकृत्वो
र्ध्वेश्रुतिशून्यलक्षितमधः शून्यद्वयाङ्काङ्कितम् ।
पार्श्वद्येकखचिह्नितंव्ययनभानौत्वचतुष्केस्थंप्रा
त्वालोहशलाकयोरथचतुस्तत्त्वात्मिकेभावयेत् ॥ ८ ॥

टीका–अब इस रमलशास्त्रमें पाशेकी प्रधानता होनेसे पहिले पाशा बनानेकी विधि कही जातीहै कि, सायन सूर्य मेष राशि पर जिसदिन आवै अर्थात् रा० अं० क० वि० स्पष्टसूर्य उस दिन होताहै जिस दिन दिनरात्रि चैत्रके महीनेमें बराबर हों उस दिन पाशा बनावै. किसीग्रंथमें अष्टधातुका बनाना लिखाहै, चतुरस्र चौपहल ८ टुकडे भारी और सुहावने चिकने बनायके ऊपरके तर्फ ४ बिंदु नीचेके ओर २ बिंदु और बगलोंमें ३–३ बिन्दु बनावै ऐसे आठों

खण्डोंको बनायके दो शलाका लोहेकी बनायके एक एकमें चार चार टुकड़े ऐसे पिरोवे कि, निकलें नहीं परंतु परस्पर घूमते चलते अर्थात् ढीलेरहें ऐसा पाशा बनायके प्रथम हाथमें लह्यान शकल बनायके पाशा फेंकनेका नियम है ॥ ८ ॥

पाशकस्वरूपम् ।								
o	o	o o	o	लह्यान	o o	o	o	o
o	o o	o o	o o		o o	o o	o	o o

अथ पाशक्षेपणकालमाह ।

चंद्रोदयादहनिवह्निशराष्टविश्वेशक्रेधृतिप्रकृति वेदकराष्टितत्त्वे ॥ भौमेभृगौरविसुतेऽथचसार्द्धं यामादूर्ध्वंदिवानिशिचपाशयुगंक्षिपेज्ज्ञः ॥ ९॥

टीका-प्रथम पाशा फेंकनेका समय कहते हैं कि, हिजरीसन् (मुसलमानी तारीख) चाँदकी गिनती की ३। ५। ८। १३। १४। । १८ । २१ । २४ । १६ । २९ । इन तारीखोंमें तथा मंगल, शुक्र, शनि वारमें डेढपहर दिनसे ऊपर और रात्रिमें भी विद्वान् प्रथम पाशा फेंके ॥ ९ ॥

अथ पाशकक्षेपणविधिः ।

प्रातः स्नात्वा शुद्धवस्त्रावृतोज्ञः स्वेष्टं ध्यात्वा संस्मरन् गौरवांघ्री ॥ लह्यानं प्राक् पाशयुग्मे निधाय मंत्रं जप्त्वा सप्तवारंक्षिपेद्वै ॥ १० ॥

टीका-अब पाशा फेंकनेकी विधि कहतेहैं कि, प्रातःकाल स्नानकरके शुद्ध वस्त्र पहनके विद्वान् अपने इष्टदेवताका ध्यान करके तथा गुरुके चरणकमलोंका स्मरण करता हुआ दोनों

पाशकोंमें प्रथम अपने हाथमें उद्दान शकल ☰ बनायके सातवार मंत्र जपके पाशा पट्टीमें फेंके ॥ १० ॥

तत्रजपनीयमंत्रमाह ।

ॐ नमोभगवतिकूष्माण्डिनिसर्वकार्यप्रसाधिनिसर्वनिमित्तप्रकाशिनिएहि २ त्वर२वरंदेहिहिलि२ मातङ्गिनिसत्यं ब्रूहि२स्वाहा ॥

यहमंत्रपाशामंत्रनेका है ॥

अथ प्रस्तार प्रकारमाह ।

पतितपाशकयुग्मयुतौ पुरः स्थितसुधांशुखतोविलिखाशुखम् ॥ खयुगतस्तुतिरोगतरेखिकां पुनरमुं विधिमूर्ध्वमुखात्कुरु ॥ ११ ॥ खण्डमेकं विधाया दावेकंकृत्वाचतुष्टयम् । तिर्यक्क्रमेणतेभ्यश्चपंचमाद्धदसंख्यकम् ॥ १२ ॥ रेखयोः शून्ययोर्योगे रेखांकुर्यात्खरेखयोः । शून्यमेवं भवेद्योगः सर्वत्रैवंयुतिं करु ॥ १३ ॥ आद्यद्वितीययोरङ्कंदशमांत्रिचतुर्थयोः ॥ पंचमेद्विषतोलाभ व्ययंचनगनागयोः ॥ १४ ॥ नवांशयोर्विश्वमथायरिष्कयोर्योगेनचैन्द्रं च तिथिस्तयोर्भवेत् ॥ तन्निघ्नमाद्येनचषोडशंदलं प्रस्तारएवंयवनैः पुरोदितः ॥ १५ ॥

टीका–अब (प्रस्तार) जायच्चा बनानेकी विधि कहतेहैं जब पट्टीमें पाशा फेंक दिया तब दोनोंको बराबर मिलायके रक्खे तब अपने दाहिने ओरके प्रथमखण्डके ऊपरका बिन्दु लिखे तब नीचेका लिखे ऐसेही आठों खण्डोंके बिन्दुओंको लिखे इसमें इतना विशेष है कि, एक बिन्दुका बिन्दु और दो बिन्दुकी एक

आडी(–)रेखा लिखे ॥ ११ ॥ प्रथम खण्डका ऐसा चिह्न करके अन्य ३ खण्डोंके भी ऐसेही करे ऐसे ४ खण्ड होगये जैसे प्रथम

उदाहरण.			
४	३	२	१
० ०	० ००	० ००	०० ००
० ०	०० ००	०० ०	०० ०

पाशा ऐसा पड़ा तो प्रथम खंडमें ऊपरके २ बिंदुकी रेखा दूसरे पाशेमें प्रथम खंडके ऊपर २ बिंदुकी रेखा नीचे एक बिन्दुका बिंदु भया तब चार मिलके एक सकल ≡̣ अंकीशहुई ऐसेही चारों खंडोंके रूप बनायेते ऐसा स्वरूप भया अब चारोंके ऊपर ऊपरके पहिले लेके पंचम ⁝ अतबेशः दूसरे दूसरे लेके छटा ≡̣ अंकीश तीसरा तीसरा लेके ≡̣ अंकीश और चौथा २ लेके –: फरहा ऐसे ४ शकल और भये ये सब ८ हुए ॥ १२॥ १३ ॥

सकलरूपम्.			
४	३	२	१
∙∙∙∙	≡̇	=̇	≡̣
तरीक	लह्या	उक्ल	अंक

इनकानियमहैकि, जहाँ रेखा रेखामिलाई जावे वहाँरेखा और बिंदु बिंदुसे भी रेखा होतीहै बिंदु रेखाके मेलसे, बिंदु होताहै ऐसा सर्वत्र योगकरना ॥ १४॥अब १ । २ शकल ≡ =̣ मिलायके ≡ लह्यान नवम शकल हुई ऐसेही ३ । ४ शकल ≡̇ ⁝ मिलायके ⁝ अतबे दाखिल दशम शकल भई ५।६ ⁝ ≡̣ से =̇ इज्जतमा ग्याहवीं ७।८ ≡̣ –: के योगसे =̇ नस्रुतखारिज बारहवीं ९।१० ≡̇ ⁝ के मेलसे ⁝ तारीख तेरहवीं ११ । १२ ⁝ =̇ से =̇ कब्जुल खारिज चौदहवीं १३ १४ ⁝ =̇ से =̣ कब्जुल दाखिल पंद्रहवीं ऐसेही १५।१ =̣ ≡̣ से ≡ हुआ सोलहवीं शकल हुई इस प्रकार

प्रस्तारोदाहरणम् ।							
८	७	६	५	४	३	२	१
÷	≡̣	≡̣	⁝	⁝	≡̇	=	≡̣
१२		११		१०		९	
=		⁝		⁝		≡̇	
१४		१५		१३		१६	
÷		÷		⁝		≡̣	

प्रस्तार यवनोंने पहिले कहा है क्रम चक्रमें देखो ॥ १५ ॥

अथगृहखंडसंख्यानियमानाह ।

अग्निवाताविलाऊर्ध्वादधः क्रमगताः क्रमात् ।
व्युत्क्रमाच्चापितद्भेदाः षोडशैवगृहाद्धंकम् ॥ १६ ॥

टीका-अब १६ घरोंके खंड संख्यानियम कहतेहैं कि, खंडोंके ऊपर चिह्न अग्नितत्त्व दूसरा वायुतत्त्व तीसरा जलतत्त्व चौथा पृथ्वीतत्त्व होतेहैं इन्हीको पारशीमें आतसी, खाकी, आबी, बादी भी कहते हैं ऊर्ध्वाधःक्रम कहा है परंतु उनके कभी उलटे क्रमसेभी गणना होतीहै जिससे १६ भेद और कभी २ भेद भी होतेहैं ॥ १६ ॥

अथ खंडानां नामानि शकुनक्रमश्च ।

लह्यान्कब्जुलदाखिलाख्यकब्जुल् खारिज्जमाता
त्वयाः फर्हांक्कांकिशहुम्रिकाश्चशकुनेचाग्रेबयाजा
ह्वयम् ॥ नुस्रुत्खारिजदाखिलाख्यअतबेखारिज्
नकीचातबेदाखिलखण्डमिहेज्तमाश्चतरिखाः प्रो
क्ताः क्रमेहेतुके ॥ १७ ॥

टीका- अब खंडोंके नाम और शकुनक्रम कहते हैं कि, प्रथम शकल लह्यान ☰ दूसरी कब्जुल दाखिल ☰ तीसरी कब्जुल खारिज ☰ चौथी जमात ☰ पंचमफरहा ☰ छठी उकला ☰ सातवीं अंकीश ☰ अष्टम हुम्रा ☰ नवम बयाज ☰ दशम नुस्रुतखारिज ☰ ग्यारहवीं नुस्रुद्दाखिल ☰ बारहवीं अतबेखारिज ☰ तेरहवीं नकी ☰ चौदहवीं अतबे दाखिल ☰ पंद्रहवीं इज्तमा ☰ सोलहवींतारीख ☰ ये सोलह शकल हैं यह क्रमोंमसे मुख्य शकुनक्रम है अन्य क्रम आग चक्रमें लिखेंगे ॥ १७ ॥

अथ शकलरूपाणि ।

लह्या ☰ नमुखैर्गतखंत्रिरेखंव्यस्तांकि ☰ शं
कब्जुलदाखिलंस्यात् । रेखाखयुग्मं ☰ च तथा

विलोमंतत्खारिजं =: रेखयुगं जमातं ≡ ॥१८॥
व्यस्तंतरीका ⁝ अयुगंचरेखाशून्यं -: चफर्हान
कि -: तद्विलोमम् । उक्लांखमध्यस्थितरेखयुग्म
=: व्यस्तेज्तमा =: रेखनभोद्विरेखं =: ॥ १९ ॥
हुम्रिकाप्यस्तमेतद्वयाज ≡ द्विखंरेखिका =:
युङ्नुस्रुत्खारिजं नुस्रुद्दाखिलं =: व्यस्तमुच्चै
स्त्रिखा =: प्रांत्यरेखातवेखारिजाख्यंभवेत् ॥ २०॥
अतबतुद्दाखिलं -: व्यस्तमेतन्मतंरूपमुक्तंमया
पूर्वधीरोदितम् ॥ २१ ॥

टीका-ऊपर शून्य नीचे तीन रेखा ≡ उह्यान शकल इसका विपरीत ≡ अंकीश रेखा शून्य रेखा शून्य -: कब्जुल दाखिल इसका विपरीत =: कब्जुलखारिज चाररेखाओंकी जमात ≡ चार शून्योंकी तरीख ⁝ दो शून्यरेखाशून्य -: फरहा इससे विपरीत =: नकी दो रेखा शून्योंके बीच उकला =: इससे विपरीत =: इज्तमा रेखा शून्य दो रेखा हुम्रा =: इससे विपरीत बयाज ≡ दो शून्य दो रेखानुस्रत्खारिज =: इससे विपरीत नुस्रुतदाखिल =: तीन शून्य एक रेखा अतवेखारिज =: विपरीत अतवेदाखिल -: इस प्रकार १६ शकलोंके रूप पूर्वपंडितोंके बताये मैंने कहे हैं ॥ १८-२१ ॥

अथ शकलानां खारिजादिसंज्ञा ।

यस्य चोर्ध्वाधरौशून्यरेखान्वितौ खारिजं दाखिलं
तद्विलोमाद्भवेत् ॥ रेखयासंयुतौतौयदासावितंतद्वि
लोमान्वितौमुन्कलीवं भवेत् ॥ २२ ॥

टीका–जिनके ऊपर बिन्दु नीचे रेखाहैं वे 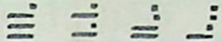
खारिज ऊपररेखा नीचे बिन्दुवाले 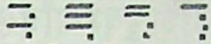 दाखिल
ऊपर नीचे रेखावाले 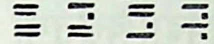 सावित ऊपर नीचे बिन्दु-
वाले मुन्कलीव 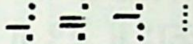 संज्ञक होते हैं ॥ २२ ॥

लह्यानातवखारीजनुस्तुत्कन्जुलखारिजाः पुंखारि
जाह्नवीर्याश्चक्रमतः स्युःशुभाशुभाः ॥२३ ॥ क
न्जुह्दाखिलअङ्कीशावतबेनुस्तुदाखिलौ ॥ योषिन्नि
शावलाशेषाविनांकीशंशुभास्त्रयः ॥ २४ ॥ जमा
तेज्जत्तमाहुम्रावयाजासाविताह्वयाः ॥ क्लीवाः सं
ध्यावलामध्यावशुभश्च शुभस्तथा ॥ २५ ॥
पुंक्लीबःस्याद्धुम्रा स्त्रीक्लीबंस्याद्व्यस्तम् ॥२६॥
नकीतरीकफरहोक्तामुन्क्लीबसंज्ञकाः ॥ संध्यावे
लामध्यसंतः पुमान् फर्हाऽपरोस्त्रियः ॥ २७ ॥

टीका--लह्यान, अतवेखारिज, नुस्तुतखारिज, कन्जुलखारिज, पुरुषसंज्ञक हैं तथा खारिजहैं दिनमें बलवान् हैं और क्रमसे एक शुभ एक अशुभ है ॥२३॥ कन्जुलदाखिल, अंकीश, अतवेदाखिल, नुस्तुत्दाखिल स्त्रीसंज्ञक, रात्रि बली बाकी अंकीशको छोडके तीनों शुभ हैं ॥ २४ ॥ जमात, इज्जत्तमा, हुम्रा, वयाज, सावित संज्ञक, नपुंसक संध्यामें बली, मध्यमबली और क्रमसे शुभाशुभहैं ॥२५॥ हुम्रा पुरुष तथा नपुंसक है इसका विपरीत वयाज स्त्री और नपुंसकहै ॥ २६ ॥ नकीतरीक, फरहा, उक्ता, ये मुन्कलीव हैं तथा संध्या बली शुभ अशुभ कुछ नहीं मध्यम हैं इनमें फरहा पुरुष अन्य स्त्रीसंज्ञकहैं ॥ २७ ॥

लह्यानातवखारीजनुस्रुत्कब्जुलखारिजाः ॥ आग्ने-
य्यांदेशिपूर्वस्यांबलाढ्याःपीतवर्णकाः ॥ २८ ॥ हु
म्राफरहेज्तमाअातवेदाखिलंतथा ॥ वायवीयाश्च
वारुण्यांबलाढ्यारक्तवर्णकाः ॥ २९ ॥ बयाजाख्यु
नकीनुस्रुद्दाखिलंतरिखाभिधम् ॥ आप्य च बल
संयुक्तमुत्तरे श्वेतवर्णकम् ॥ ३० ॥ कब्जुद्दाखिल
अङ्कीशोकलाख्याश्चजमातकम् ॥ पार्थिवं दक्षिणा
शायांबलाढ्यंश्यामवर्णकम् ॥ ३१ ॥

टीका--लह्यान, अतवेखारिज, नुस्रुत्खारिज, कब्जुलखारिज, अग्नितत्व पूर्व दिशामें बली पीले रंगके हैं ॥२८॥ हुम्रा, फरहा, इज्जत्तमा, अतवेदाखिल, वायु तत्व पश्चिम दिशा बली लालरंगके हैं॥२९॥ बयाज, नकी, नुस्रुद्दाखिल, तरीक, जलतत्व उत्तर दिशा बली श्वेतरंगके हैं ॥३०॥कब्जुलदाखिल, अंकीश, उक्ला, जमात, पृथ्वीतत्ववाले दक्षिणदिशा बली श्याम रंगके हैं ॥ ३१ ॥

नुस्रुद्दाखिललह्यानौचापमीनौचगौरवौ॥ नुस्रुत्खारि
जंकब्जुद्दाखिलंचहरीरवौ ॥ ३२ ॥ जमातेज्जतमेयु
ग्मंकन्येज्ञेयेबुधस्यच ॥ तरीकाख्यबयाजाख्यौकु
लीरौचंद्रदैवतौ ॥ ३३ ॥ फर्हातवेदाखिलंचतुलाग
वौचभार्गवा ॥ हुमराचनकीशेयोभौमेयौमेषवृश्चि
कौ॥३४॥उक्लांकीशनकीनक्रकुंभौज्ञेयौतथाशनिः॥
कब्जुलातवखारीजौराहुकेत्वोर्घटेणकौ ॥ ३५ ॥
मुन्क्लीवंचरसंज्ञंस्यात्स्थिरंस्यात्साबितंदलम्॥द्विस्व
भावंद्विधैवंस्यात् खारिजचापिदाखिलम् ॥ ३६ ॥

टीका–तुम्तुद्दाखिल लह्यानकी ९।१२ राशि बृहस्पति स्वामी है तथा तुम्तुत्खारिज, कब्जुलदाखिल ५ राशि सूर्यस्वामी ॥३२॥ जमात इज्जतमां ३।६ राशि बुध स्वामी तरीक वयाजके ४ राशि चंद्र स्वामी ॥ ३३ ॥ फरहा, अतवेदाखिल ७।२ राशि शुक्रस्वामी हुमा, नकी, १।८ राशि भौम स्वामी ॥३४॥ उक्ता, अंकीश, नकी १०।११ राशि शनिस्वामी, कब्जुलखारिज, अतवेखारिज १०।११ राशि राहु केतु स्वामी हैं ॥३५॥जो शकल मुन्कीव है उनकी चरसंज्ञा हैं साबित स्थिर दल होते हैं द्विस्वभाव दोनहूँ प्रकारके खारिज आर दाखिलभी होते हैं ॥ ३६ ॥

अथ शकलानांजातिवर्णस्वभावाकृत्यादिस्वरूपाणि ।

मुखजगौरसुधर्मकृतीष्टवाङ्मधुरभुक्तनुकण्ठसु
नीलदृक् ॥ अमरपाठतपः स्थितिमाणिकंतनुसु
गंधिमवेहिदलादिमम् ⠇ ॥ ३७॥ क्षत्रः कब्जु
लदाखिलोमधुरगीगोधूमभाः श्यामदृक्दक्षोवि
क्रयाशिल्पकर्मसुसुरागारः सुरथ्यापणः ॥ मध्यो
क्षौमधुराशनश्चधनपोद्रव्यालयः स्यात्सुधीः मा
णिक्य धनकमठोतिचतुरः सौगन्धिकश्चाकृतिः
⠇॥ ३८ ॥ म्लेच्छोऽव्रणोऽतिनयनोऽतिरवोऽ
नयीचपीतासितोतिपिशुनोऽशुभतुंगदंतः ॥ ति
क्तप्रियोतिमलिनालयदेहवासाः निंद्योश्मयुग्म
वनिकब्जुलखारिजार्धम् ⠇ ॥३९॥गोधूमभाः
साध सुवर्णःचित्रीशूद्रोगुणीकृष्णदृगास्यदीर्घः ॥

मिष्टाशिहिंस्रव्ययिवैद्यवंद्यो गारुत्मकं पाठगृहं जमातम् ☰ ॥ ४० ॥

टीका—अब शकलोंके जाति, रंग, स्वभाव, आकार आदिस्वरूप कहते हैं ॥ लह्यान ☰ शकल, ब्राह्मण, गौरवर्ण, धर्म करनेवाला, मीठीवाणी, मीठाभोजन कंठवाला, नीलेनेत्र, देवताओंका पाठ तपस्या करनेवाला, स्थिर कार्यकर्त्ता, सुगंधि प्रिय है ॥३७॥ कं॰ दा॰ ☱ क्षत्रिय मीठीवाणी, गेहूँकासा रंग, श्याम नेत्र, चतुर, सौदा बेचनेवाला, शिल्पविद्या जाननेवाला देवतामंदिर बाजार दुका-नोंमें रहनेवाला मध्यम ऊँचा मीठाभोजन, धनपति, खजानची, बुद्धिमान् माणिक्य धातु धनके कामोंमें निपुण अति चतुर सुगं-धिवाला, कुत्तेका आकार ॥ ३८ ॥ कब्जुलखारिज ☲ म्लेच्छ दाग-रहित, गहरे नेत्र बडाशब्दवाला, न्यायवान् नहीं, पीत कृष्णरंग, चोर, अशुभ, ऊँचेदाँत, कटुभोजी, देह, घर, वस्त्र, मलिन, निंद्य, पत्थर सहित पृथ्वी तत्त्व, अर्द्धभाग ॥ ३९ ॥ जमात ☰ गेहूँकासा रंग, संध्याबली, सुवर्णधातु चित्रकारी, शूद्र, गुणवान्, कृष्णनेत्र, बडा मुख, मीठा खानेवाला, हिंसक, खर्च करनेवाला, वैद्यश्रेष्ठोंसे भी वंदनीय, गारुत्मक धातु पाठशालामें वास ॥ ४० ॥

फरहाख्यः सुभगोतिदीर्घदेहोगौराभोलिपिहास्यचित्तवृत्तिः ॥ भिन्नभूः शुभलोचनोल्पकोष्ठोमुक्ताढ्यः शुभभूः सुमिष्टभुक्स्यात् ☷ ॥ ४१ ॥ कृष्णाङ्गः कृषिकारकोतिमलिनोव्यादीर्घदेहः श्रमी स्वल्पाक्षस्तमसावृतांबुपरिखाकारगृहः पैशुनः ॥ उक्लाख्यः ☱ कुशलश्चशाकविपणेकृष्णात्मवाणात्मकः सालस्यः परिखागृहोगतमतिर्भारंवहश्चांत्यजः ॥ ४२ ॥

टीका-फरहा =: सुन्दर बडा लम्बा शरीर गौरवर्ण, लिखने तथा (ठट्ठा) मसखरी करनेमें चित्तवृत्ति रहे भ्रुकुटि अलग २ हों, नेत्र सुहावने, पेट छोटा, मोतियोंसे युक्त अच्छी भूमिमें रहे मीठा भोजनकरे॥४१॥ उक्ता =: इयाहरंग खेती करनेवाला अति मलिन लम्बाशरीर परिश्रम करनेवाला छोटेनेत्र तमोगुणसे युक्त जलकी शहरपनाह तथा कैदखानेमें रहनेवाला चोर शागभाजीकी दुकान करनेवाला काला शरीर बाणके समान आकार आलस्य युक्त सहर पनाहमें रहनेवाला बुद्धिहीन भार ढोनेवाला और चाण्डाल भी॥४२॥

म्लेच्छोंकीशो =ऽतिकृष्णः कृषिकरणतः कृष्णहृ ग्ग्रामवासोमिथ्याभाष्यल्पनेत्रः सुदृढनखरदश्चा म्लभुक्सालसः स्यात् ॥ दीर्घास्योगेहसेवी सुवि पुलनिनदो भीषणोनिर्दयश्च कृष्णाश्मायोतिदीर्घो विभतनुवदनोदास्यकृत्येतिदक्षः॥४३॥ हुम्रा =: हरोनापितलोहकारकः क्षत्रोवृणीहेतिभिषक् समो ग्रकः ॥ पीताल्पनेत्रः कलिकृद्धिहिंसकोऽरण्यादि गस्तिक्तरसोबृहच्छिरः॥४४॥ श्वेतोगौरः समुच्चा कृतिगमनमतिः सिद्धियुग्वर्तुलास्यः श्यामाक्षः प्रष्ठ भाषीसजलतरुलतास्थानवासः सुगंधिः ॥ मुक्ता ढ्यः स्फाटिकाढ्यः शुभललितरुचिर्दुग्धमिष्टान्न भुक्चदेवार्चासक्तचित्तो व्यवहृतिविभवः सौख्ययु क्तोबयाजः =: ॥ ४५ ॥ राजकीयः शुभोदीर्घच क्षुस्तनुः क्षत्रधर्मान्वितोगौरभाः स्वर्णहृत् ॥ माणि कस्वर्णरत्नापणी मिष्टभुक्सुस्वरः काश्यदोत्रुस्तुल

खारिजः =ः ॥४६॥ मुखजासिततपस्वीस्वर्णवृत्ता स्यदीर्घः प्रविततततनुनेत्रः सिंधुसेवी सुवासाः ॥ स्फटिकरजतकांतिः सद्भुजिः श्रेष्ठगंधिः श्रुतिविलसितचेतानुस्तुतुद्दाखिलं =ः स्यात्॥४७॥ विपिनागिरिसकूपोच्चाश्रितोदुर्गसद्मकृषिविवलसपीतः कृष्णदेहोव्रणांकः ॥ कपिलनयनरोमाम्लेच्छदीर्घः कुगंधिर्भवतिवसनमूर्णाचाऽतवेखारिज =ः स्य ॥ ४८॥

टीका–अंकीश ≡ म्लेच्छ, अतिस्याहरंग, खेतीके काममें तत्पर, स्याहनेत्र, ग्रामवासी, झूठ बोलनेवाला, छोटेनेत्र, नखून तथा दांत मजबूत, थोडा भोजन करे, आलसी, बडामुख, घरका सेवन करनेवाला, बडा शब्द कहे, भयानक रूप, निर्दयी; काले पत्थर एवं लोहा धातु, बडा लम्बा शरीर और मुख कांतिहीन दक्ष कर्म करनमें चतुर॥४३॥ हुम्रा =ः चोर;हजाम, लुहार,क्षत्रिय, शरीर, दागरहित, डंडा हाथमें, वैद्यविद्या जाननेवाला, सम तथा ऊंचा शरीर पीलारंग, छोटेनेत्र, कलह करनेवाला, जीवघाती, वन पर्वतादिकोंमें जानवाला, कडुआ रसखानेवाला, बडाशिर ॥ ४४ ॥ वयाज ≡ श्वेतवर्ण, गौररंग, ऊंची आकृति, चलनेमें वृद्धिरहे, सिद्धिवाला, गोलमुख, कालेनत्र, मनोनुकूल वचन कहनेवाला, जलयुक्तस्थान, वृक्षलताओंके स्थानमें निवास करनेवाला, सुगंधि द्रव्य,मोती, स्फटिकसे युक्त,सुन्दर रमणीय कांति दूध तथा मिष्टान्न खानेवालाभी, देवताके पूजनमें आसक्तचित्त, व्यापरसे ऐश्वर्य पावे और सुखसे युक्त ॥ ४५ ॥ नुसुत्खारिज =ः राजाका आदमी शुभ, दीर्घनेत्र, दीर्घशरीर, क्षत्रियोंके धर्मसे युक्त, गौरवर्ण, सुवर्ण धारी, माणिक्य सुवर्ण रत्नोंकी दुकान करनेवाला, मीठा खाने-

वाला, धनमें श्रेष्ठ, और कांसी धातु देनेवाला ॥ ४६ ॥ जुलुहा- खिल =: ब्राह्मण, श्वेतवर्ण, तपस्वी, सुवर्णधातु गोल और बडा मुख, शरीर और नेत्र वडे, समुद्रसेवी, अच्छे वस्त्रवाला, स्फटिक यद्वा चांदीके समान कांति, अच्छे पदार्थ खानेवाला, उत्तम सुगन्धधारी, वेदसे विराजमान चित्त ॥४७॥ अतवे खारिज =: वन पर्वत कूंआं ऊंची जगोंमें रहनेवाला, किलामें घर कृषिसे निर्बल, पीतरंग काला दद्द (खोट) दागयुक्त, नेत्ररोम भूरेरंग, म्लेच्छ, दीर्घ शरीर, दुर्गंधि, ऊन वस्त्र पहिने ॥ ४८ ॥

नकी =: गौरः क्षत्रःकृशतनुसुपीताल्पनयनःस
शास्त्रो मांसाशी हरितवसनोलोहितकचः॥भटः
स्थूलग्रीवःसतिमिरजलप्रांत्यवसतिः पराधीनो
हिंस्रोविततदशनोबालभृतकः ॥ ४९ ॥ सुदीर्घः
क्लिष्टांगः सुमुखभ्रकुटीभिन्नतिलयुक्सुवस्तूद्यत्प्रे
मातवदखिलमाकुंतिकगृहः॥सनीरेवृक्षौघेस्य कि
लवसतिः कांतनयनःसुगोधूमात्वासःसुललितत
नुर्भाग्यविभवः ॥ ५० ॥ नरेन्द्रलेखीगणकोगुण
स्पृहः सुलोचनः श्मश्रुमुखोऽद्रिधातुकः॥विचि
त्रवस्त्वंशुकपाठभूषितः शूद्रोमृदुर्लाजवृतीज्त
मा =:भवेत् ॥ ५१ ॥ वैश्यःसितासक्ततनुर्महा
द्यों दीर्घांगनेत्रश्चरराजगेहः ॥ मार्गीसहाम्ब्वाद्रि
गइष्टभुक्स्यात् सुचारुवासास्तारिखंदलं च ॥५२॥

इति शकलस्वरूपस्वभावजात्यादयः ॥

टीका--=: गौरवर्ण क्षत्रियजाति, कृशशरीर, पीले और छोटे नेत्र, शास्त्रसहित, मांसभक्षी, सबज रंगके वस्त्र, सुर्खकेश, योधा,

मोटीगर्दन अंधेरा, जलाशय और नगरके अंतमें वसनेवाला, पराया तावेदार जीवहिंसक बडे दांतवाला बालकोंके पालनेवाला ॥ ४९॥ लंबाशरीर कडे अंग, सुन्दर मुख और सजीली भ्रुकुटी अलग होरहा अंगजिससे ऐसे तिल चिह्नसे युक्त, अच्छीवस्तुवाला, प्रेममें तय्यार लुहार वा शस्त्रागारमें रहनेवाला अतवेदाखिल ⁝ शकल ॥ ५० ॥ इज्जत्तमा ⁝ राजाका लेखक; ज्योतिषी, गुणचाहनेवाला सुहावने नेत्र दाढीवाला पर्वत धातु, अनेक रंगके वस्तु एवं वस्त्रधारी, पाठशालामें रहनेवाला, शूद्रवर्ण, कोमलस्वभाव लज्जायुक्त॥५१॥ तारीख वैश्यजाति, श्वेतवर्ण, शिथिल शरीर, बढपनवाला, प्रत्येक अंगोंमें विशेषता, नेत्र बडे, राजभवनमें रहनेवाला, चतुर, रास्ताचलन जलपर्वत चारी, उत्तम वस्तु भोगनेवाला, रमणीय वस्त्रपहिने द्विस्वभावभी है ॥ ५२ ॥

अथउम्महांतादिसंज्ञामाह ।

आद्यंमहान्तंचततोवनांतंमुन्तुल्लदातंचतथातृतीयम् ॥ तुरीयमेषांचजवायदातंचतुश्चतुष्केष्विति नामसंज्ञा ॥ ५३ ॥ आद्यंतुर्यसप्तमंदिग्मितंच स्यादवतादंकेंद्रसंज्ञंतदेव ॥ द्विपंचनागेशमितं चमायलं ज्ञेयंबुधैस्तत्खलुपणफराख्यम् ॥ ५४ ॥ तृतीयषष्ठांकदिवेशतुल्यमापोक्लिमंजायलसंज्ञकं च ॥ विश्वादिकस्यापि चतुष्टयस्य सदल्युतं स्यादवतादसंज्ञम् ॥ ५५ ॥

टीका–अब उम्महांतादि संज्ञा कहते हैं,पहिला उम्महांत-दूसरा वनांत, तीसरा मुन्तुल्लदात चौथा जवायदात ये ४।४ घरोंकी संज्ञा

हैं ॥५३॥ प्रथम चौथा सप्तम दशम १।४।७।१० घर केन्द्र हैं इन्हीं को अवताद कहते हैं तथा २।५।८।११ पणफर एवं मायल संज्ञक पण्डितोंने जानने ॥ ५४ ॥ ऐसेही ३।६।९।१२ आपोक्लिम एवं जायल संज्ञक हैं अब शेष १३।१४।१५।१६ स्थानोंकी सदुल एवं अवताद संज्ञाहै ॥ ५५ ॥

विश्वाष्टकंतनोरस्तशक्रंचधनसद्मनः ॥ सहजस्ये षुषट्कंचसुखस्यनृपसंख्यकम् ॥ ५६ ॥ पुत्रस्य नं दंदशमंरिपोश्च मदस्यलाभंव्ययभंचमृत्योः॥ श रेन्दुनन्दस्य रिपुः खभस्य लाभस्यकामोपिगजो व्ययस्य ॥५७॥ विश्वस्याद्यंशक्रगेहस्यवित्तंपंचे न्दोर्वानंदसंख्यंनृपस्य ॥ तुर्यं ज्ञेय साक्षिगेहं गृहाणां सर्वेषां स्यात्साक्षिगेहंशरेन्दुः ॥ ५८ ॥

इति श्रीरमलनवरत्ने संज्ञारत्नं प्रथमम् ॥ १ ॥

टीका-अब साक्षिस्थान कहते हैं कि १३।८।१।७।१४।२।३। ५।६।४।१०।५।९।१०।६।७।११॥८।१२॥९।१५॥१०।६॥११।७। १२।८॥१३।१॥१४।२।१५।९॥१०।४॥ अर्थात् तेरहवेंका साक्षि-गृह अष्टम है प्रथमका सप्तमहै इत्यादि लिखत अंकोंसे जानना इस प्रकार सभी घरोंके साक्षि घर हैं और पंद्रहवां घर तो सभी घरोंका साक्षिस्थानहैं ॥ ५६-५८ ॥

इति महीधरकृतायां रमलनवरत्नभाषायां प्रथमं रत्नम् ॥१॥

भाषाकारसंमतिः ।

रमल शास्त्रमें ११ प्रकारके क्रम अलग अलग कामोंके देखनेके लिये कहेहैं यहां छोटा ग्रंथ होनेसे सात क्रम कहेहैं उनमेंभी सर्वोप-योगी शकुन क्रमही लिखाहै, यद्यपि यही क्रम मुख्य है तथापि

औरके जो मुख्य कार्यहैं वे उन्हींसे जैसे सधेंगे ऐसे अन्यसे नहीं इसलिये मै अन्य ग्रन्थोंका मत लेकर ग्यारह क्रम उनके मुख्य कार्यभी लिखताहूँ-

(१) शकुनक्रम॥स्वभाव सिद्धिहै सभीकार्य प्रथम इससेदेखेजाते हैं।
(२) अन्दहक्रम ॥ जोरका स्वरूप और संतानके निर्णयमें विशेष काम आताहै ।
(३) बिजदहक्रम ॥ कार्यकी (अवधि) मियाद बतानेमें ।
(४) अब्जदहक्रम ॥ वस्तुकानाम तथा अंग बतानेमें ।
(५) मिजाजक्रम ॥ कार्य सिद्धिके काममें ।
(६) हर्फाक्रम ॥ खंडोंकी पुष्टता बलाबल विचारमें ।
(७) असहक्रम ॥ न सुनी न देखी बात बतानेमें ।
(८) हुम्रा क्रम ॥ हुक्म लेना, आर्यलाब्धि बिनापरिश्रम कार्य सिद्धिके काममें ।
(९) अर्जक्रम ॥ बिनाश्रम लाभ और आर्यलाब्धि ।
(१०) माआदक्रम ॥ बिना परिश्रम कार्य सिद्धि जंग फतअ ।
(११) मुसल्लसक्रम ॥ त्याग विसर्जन आदि कार्य सिद्धि निर्णय।

ये ग्यारह क्रम हैं इनके रूप आगे--पाठकोंके सुगमताके हेतु चक्राकारमें लिखे हैं। और संज्ञारत्नमें जो संज्ञा शकलोंकी कही हैं वेभी पाठकोंके सुगमताके हेतु आगे चक्राकारमें लिखी जाती हैं इसमेंभी ग्रंथकर्ताने छोटे ग्रंथ होनेसे थोडी थोडी मुख्य संज्ञा कही हैं इसमेंभी में पाठकोंके हितार्थ अन्य बृहत् ग्रन्थोंसे उद्धृतकरके और भी विशेष संज्ञायें लिखताहूँः-

एकादशक्रम।

श्रीः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१ शकलक्रम	0111 लहात	010 कवजुल दाखिल	0101 कवजुल खारिज	1111 जमात	0010 फारहा	0110 उक्ल	1110 अंकीश	1011 हुला	1101 वयाज	0011 नखुत खारिज	1111 नखुत दाखिल	0000 अतवे खारिज	0100 नकी	1000 अतवे दाखिल	1001 इज्जतमा	0000 तरीख
२ अवदहक्रम	0111	1011	0011	1101	0101	1001	0001	1110	0110	1010	0010	1100	0100	1000	0000	1111
३ विजदहक्रम	0010	0111	1000	1101	0000	0101	1011	1110	0011	0110	1001	1100	0001	0100	1010	1111
४ अबजदक्रम	0111	1011	1101	1110	0110	1010	0010	0100	1000	0000	0011	0101	1001	0001	1100	1111
५ मिजाजक्रम	1010	000	1111	1101	0110	0111	1011	0101	0010	0010	1001	0000	1000	1100	0100	0001
६ हर्फीक्रम	0111	1110	1011	1101	1100	0011	1000	0001	0010	0100	1010	0101	1111	0110	1001	0000
७ असहक्रम	0111	1000	0001	1111	0010	1011	0100	0110	0011	1100	1010	0101	1101	1110	1001	0000
८ हुक्माक्रम	0100	1100	0010	1010	0110	1110	0001	1001	0101	1101	0011	1011	0111	1111	0000	1000
९ अर्जक्रम	1100	0010	1010	0110	1110	0001	1001	0101	1101	0011	1011	0111	1111	0000	1000	0100
१० माआदक्रम	1000	0100	1100	0010	1010	0110	1110	0001	1001	0101	1101	0011	1011	0111	1111	0000
११ मुशल्लसक्रम	0010	1001	0111	1100	0001	1011	0100	1110	0011	1000	0110	1101	0000	1010	0101	1111

अथ शकलानां संज्ञाचक्रम् ।

१	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
२	शकल नामानि	लह्यान	क.दा.	क.दा.	जमात	फरहा	क्ला.	अंकीश	हुम्रा	वयाज	न. खा.	न.दा.	अ.खा.	नकी.	अ.दा.	इज्ज.	तरीख
३	स्वरूप	। – – –	– । – ।	। – । –	– – – –	। । – ।	। – – ।	– – – ।	– । – –	– – । –	। । – –	– – । ।	। । । –	। – । ।	– । । ।	– । । –	। । । ।
४	राशयः	धनु	सिंह	कुंभ	कन्या	तुला	मकर	कुंभ	वृश्चिक	कर्क	सिंह	मीन	मकर	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क
५	स्वामिनः	गुरु	सुर्य	केतु	बुध	शुक्र	शनि	शनि	मंगल	चंद्र	सूर्य	गुरु	राहु	मंगल	शुक्र	बुध	चंद्रमा
६	शुभाशुभ मध्यम	शुभ	शुभ	अशु.	मध्यम	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ
७	दिग्बल	पू.	द.	पू.	द.	प.	प.	द.	प.	उ.	पू.	उ.	पू.	उ.	प.	द.	उ.
८	वर्णा	पीत	धूसर	श्याम	पाण्डु	विचि	श्याम	कर्बुर	रक्तश्याम	श्वेत	धूसर	द्वद्ववर्ण	श्याम	रक्त	श्वेत	शुक्ल	हशाश्वे
९	खारिजादी	खारिज	दाखिल	खारिज	साबित	मुन्कली	मुन्कली	दाखिल	साबित	साबित	खारिज	दाखिल	खारिज	मुन्कली	दाखिल	साबित	मुन्कली
१०	चरादि	द्विस्व.	दिस्व.	द्विस्व.	स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	स्थिर	द्विस्व	द्विस्व	चर	द्विस्व	स्थिर	स्थिर	चर
११	पुस्त्रा	पुरुष	स्त्री	पुं.	नपुंसक	नपुं.	नपुं.	स्त्री	नपुं.	नपुंसक	पु.	स्त्री	पु.	नपुं.	स्त्री	नपुं.	नपुं.
१२	तत्वानि	अ.	भू.	अ.	भू.	वा.	भू.	भू.	वा.	ज.	अ.	ज.	अ.	ज.	वा.	वा.	ज.
१३	साक्षिस्थान	१३/८ मातृ	१४/७ मातृ	५/६ मातृ	१६ मातृ	८ दुहित्र	१० दुहित्र	११ दुहित्र	१२ दुहित्र	१५ दौहित्र	६ दौहित्र	७ दौहित्र	८ दौहित्र	१ साक्षी.	२ साक्षी.	९ साक्षी.	४ साक्षी.
१४	रसाः	कटु	कट्वम्ल	कटु	कट्वम्ल	मधुर	कट्वम्ल	कट्वम्ल	मधुर	क्षारमिष्ट	कटुक	क्षारमिष्ट	कटुक	क्षारमिष्ट	मधुर	मधुर	मधुर
१५	भूत भविष्य वर्तमान	वर्तमान	आकस्मित	वर्तमान	आकस्मित	भविष्य	आकस्मित	आकस्मित	भविष्य	भूत	वर्तमान	भूत	वर्तमान	भूत	भविष्य	भविष्य	भूत
१६	विज-दहाकाः	१	२	६	१०	१५	२१	२८	३६	४५	५५	६६	७८	९१	१०५	११०	१३६
१७	धातुमूल जीव	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	मूल	मूल	जीव	मूल	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	जीव	मूल
१८	दिनरात्री बली	दिवा-बली	रा. ब.	दि. ब.	उभयब.	उ. ब.	उ. ब.	रा.ब.	उ.ब.	उ. ब.	दि. ब.	रा. ब.	दि.ब.	उ. ब.	रा.ब.	उ.ब.	उ.ब.

	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१९	मृदुकाठिन्यादि	मृदु	काठिन्य	मिश्र	का.	मृ.	मृ.	मि.	का.	मृ.	का.	मृ.	का.	का.	मृ.	मृ.	मि.
२०	आकृति	दिर्घ	वर्तुल	दिर्घ	चतुरस्त्र	वर्तुल	वर्तुल	चतुर	वर्तुल	दिर्घ-विस्तृत	दिर्घ	दिर्घ	दिर्घ-विस्तृत	वर्तुल	वर्तुल	दिर्घ-विस्तृत	वर्तुल
२१	तंत्रमते	वर्तु.	चतुर	चतुर	त्रिकोण	सम.	चतु.	वर्तु.	त्रि.	त्रि.	व.	च.	वर्तु.	सम.	वर्तु.	त्रि.	व.
२२	हेतु	पोषणे	पुष्टिके	पो.	पु.	पु.	पु.	पु.	पु.	पु.	पो.	पु.	पो.	पु.	पु.	पु.	पु.
२३	एकायुता	एका	युता	युता	एका	एका	युता	एका	युता	एका	युता	एका	एका	एका	एका	एका	युता
२४	पूर्णखंडित	खं.	पूर्ण	खं.	पू.	खं.	पू.	खं.	खं.	खं.	खं.	पू.	खं.	खं.	खं.	पू.	खं.
२५	वयःप्रमाण	अतिबल	वृध्द	अतिबल	वृध्द	कौमार	वृध्द	वृध्द	कौमार	तरुण	अतिबा	तरुण	अतिबल	तारुण्य	कौमा	कौमा	तारुण्य
२६	वासस्थान	नगर-आरण्ये	स्वर्णरूप्ये हट्टे	नपर्वते	स्व. रू. हट्टे	नृत्यारामे	अंधकारे	चित्रहट्टे	हिंसागारे	क्षेत्रारामे	नगर-आरण्ये	पाटशा-लोद्याने	नगर-आरण्ये	वनग्रामे	वनवृक्षे	चित्रहट्टे	कृषिमार्गे
२७	मूल्यप्रभा	अतिमौल्य	सममौल्य	मौल्यहीन	मौल्यहीन	स्वल्पमौल्य	सममौल्य	मौल्यहीन	स्वल्पमौल्य	मध्यमूल्य	अतिमौल्य	अतिमौल्य	मौल्यहीन	स्वल्पमौल्य	स्वल्पमूल्य	स्वल्पमौल्य	सममौल्य
२८	कार्यहेतु	निमार्ण	भूमिशिल्प	शिल्पकार	भूमिशिल्प	शिल्पकार	शिल्पकार	निर्माण	शिल्पकार	निर्माण	शिल्पकार	निर्माण	शिल्पकार	शिल्पकार	शिल्पकार	शिल्पकार	शिल्पकार
२९	सादादि	साद	साद	नेश	नेश-मुमुजी	सादम	नेशमु.	नेशमु.	नेश.	साद.	साद.	साद.	नेश	नेशमु मुजीज	साद	नेश	सादमु.
३०	चिंतामणिमतेमु	०	०	०	मुमु-ज्जीज	मु.	मु.	०	मु.	मु.	०	०	०	मु.	०	मु.	मु.
३१	काबिलआसलास	०	असलास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अस	अस	०
३२	अनादिसाकित	०	०	०	सा.	०	सा	०	०	०	०	०	०	०	०	सा	सा.
३३	असलीउन्मताहा	उ.	०	०	०	०	०	उ.	उ.	उ.	०	०	०	०	०	०	०

	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
३४	आबीभाकी वारीआत	आतसी	खाकी	आ.	खा.	वारि.	खा.	खा.	वारि.	आबी	आत	आबी	आत	आबी	आदि	वादि	आबी.
३५	वर्वरदेना	ज्वाहव	लाग	तत्वाल	मेहक	अदृहा	स्वकाक	नतकुश	मतत्फ.	ताईक	अजली	अशकीला	सावीत	औजाग	कायमे	वाराल	अवराद
३६	अज्ञातदेशना	कमरुह करवत २	सोग सालुफ २	सलामत ४	कौसज ५	तमकल मनफल ६	जवावर	हुमर आस्तिक ८	अमानप वतज ९	लीन ४	हिंदफि ला १०	अकल अतिपति	०	अशाकर फलसुर	अकार कापने	अतब अ नलदुला	निकार
३७	चिन्हाना	लहः	कद	कजः	जम	फर	वक	मन	हुम	वी.	नख	नद	अज	नकी	अह	इज	तर
३८	एकवर्णना	अ.	क.	ल.	भ.	अ.	न.	व.	ज.	द.	व.	ह.	ह.	प.	अ.	स.	अ.
३९	संस्कृतना	वाल्मी	तीक्ष्णांशु	पातः	सौम्य	दैत्याचिंः	मंदगः	सौरि	लोहित	विधु	उष्णगुः	सूरि	वक्रः	आर	कवि	बोधन	शीतांशु
४०	निर्गमादि संख्या	निर्गम	प्रवेशी	निर्गम	यथा-स्थित	मिश्र	मिश्र	प्रवेशी	यथा स्थित	यथा स्थित	निर्गम	प्रवेशी	निर्गम	मिश्र	प्रवेशी	यथा स्थित	मिश्र
४१	बिंदुसंख्या	स्वल्पबिंदु	समबिंदु	सम.	स्वल्प.	बध्दविन्दु	सं. बिं.	स्वल्पबिंदु	स्व.	स्व.	सम.	सम.	बहु	बहु	बहु	सम.	बहु
४२	पंचसंख्या दिसंज्ञा	पंचशांत	पं. द्वी.	पंचक्रूर	सौम्य-क्रूर	सौम्य-क्रूर	पं.क्रू.	पं.क्रू.	पं.क्रू.	सौ.क्रू.	पं. शां.	पं. शां.	पं.क्रू.	सौ. क्रू.	पं. शां.	सौ. क्रू.	सौम्य-क्रूर
४३	उत्पत्ति समयना	पुत्र १	द्वि. पौ. दायाद	द्वि. पौ	नसीकु-ल्यमाता	तृतीय पुत्र	तृ. पौ. दायाद	पुत्र ४	पुत्र २	तृतीय पुत्र	पौत्र	पौत्र दायाद	पुत्र ४	पुत्र २	पुत्रः १	तृतीय पौत्र	अल्पीकु ल्यपिता
४४	शस्त्राणि	छुरिका	लत्ताप्रहार	पाषाण	गुरज	खंजर	गुरज	पाषाण	बाण	परशु	धर्नुबाण	धनुः	भल्ल	खड्ग	अवल	परशु	बाण
४५	सामान्यउत्पातिस्थान	धातु	रत्न-खान	धातु	र. खा.	पशु	र. खा	र. खा.	पशु	वृक्ष	धातु	वृक्ष	धातु	वृक्ष	जीव	पशु	वृक्ष
४६	मासाः	रमजान	जमदीउअ	सधाल	रविला	रविलासर	रजब	शासन	सवाल	मोहरम	सफर	जीकाद	रजब	जमा.खर	रविला	जिल्हिज	मोहरम
४७	अल फाघसा	अलफ	कर्बु	वे. गे.	मी	तोजो	तुं	स्वाफडे	वावृजी	दालूरे	वा. वृते	रेशीन	हे. से.	ईऐज्वात	सेरे	सीन	तोय
४८	उम्महां-तादिस	उम्माल	अवज-दात.	मुतल-लव	आय दात	नावात	आय दात	उम्म-हात	उम्म	उम्म	ज्वाय	मुतल	नावात	नावात	अवा	युत	युत
४९	केंद्रादि संज्ञा	केंद्र अवदाल	पणफर मायल	आपो आगल	कें. अ.	प. मा.	आ. आ.	के. अ.	प. मा.	आ. आ.	के. अ.	पण मा	आ. मा.	जकोरात संधि	आ. सं.	आ. सं.	आय. जे.

	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
५०	अंधादिस	अंध	चिपिट	दिव्यचक्षु	काण	अंध	चिपिट	दिव्यचक्षु	काण	चिपिट	अंध	दिव्यचक्षु	चिपिट	काण	चिपिट	काण	अंध
५१	अवस्था	अवलोक यति	वियोगी	अवलो	वियो.	वदती	वियो	वियो	मैलापी	अवलो.	मैलापी	वदति	मैलापी	अवलो	वदति	वदति	मैलापी
५२	लघुवृ हत्वमौल्य	लघुभार	वृहन्दार	ल.	वृ.	मिश्रभार	वृ.	वृ.	मि.	मि.	ल.	मि.	ल.	मि.	मि.	मि.	मि.
५३	अर्वनामा	ल.	क.दा.	क.सा.	ज.	फ.	उ.	अं.	हु.	व.	न.सा.	न.दा.	अ.सा.	नका.	अ.दा.	इ.	त.
५४	पुनर्नि· देशाना	सेताम	अकी· मसृ	अमलग	आजाद	कौस जसू	नामक· कत	अपका· रस	म क ह	आजत· फरान	इकाम	काश्मी	जकीर खारीज	जकीरे	औकजा जकोरवा	औकजा	अलदे· यरोद
५५	कंकर	मूल	लाल	माणिक	पत्थर	नगीना	पिरोजा	कंकर	नकीक	कंकर	हंकीक	पिरोजा	पाषाण	कादरु	पिरोजा	पत्थर	रेती
५६	धातु	सोना	रूपा	शीसा	पंचधातु	सोना	लोहा	लोहा	तांवा	रूपा	काँशा	सोना	शीशा	पितल	सोना	पंचधातु	रूपा
५७	पदार्थ	शकरा	वेत्र	पान	अनार	लकडी· लाल	धान्य	मेसखूटी	शुष्क लकडी	सेलक	पान	फावसा	सोप्पारी	मेवा	मेवा	शेयता	दर्खत वृक्ष
५८	मेवा	खडभुजा	नारंगी	ककडी	नारंगी	खजूर	आलु	कन्द	आलु	सहतूत	अंगूर	अमरूद	ककडी	कंदलल	अंगूर	अनार	शाफतालु
५९	वासस्थान	आसमान	उच्च· स्थल	कुसली फोड	पद्धभु· पर	वाडेमें	ग्राममें	भोयरेमें	मलिन जगमें	नदी उपर	हवेलीमें	जमिन उपर	विलायत	खाडेमें	जमिनमें	बाजारमें	नदी किनारेपर
६०	जिन्स	मोती	कस्तूरी	आड काशा	वीलानु छल	रेशम	पसम	हरु.चर्म	गोवरी	घोडेके नख	मोती	किस्मत	पसम	रेशम	मोती	रेशम	चमडा
६१	जानवर	रोझ ऊंट	घोडा	घोडा गधा	हाथी गधा	खच्चर गधा	बकरा	भैस गधा	सेझ भूड	रोझ	घोडा	खच्चर मृग	खच्चर मिढा	खच्चर घोडा	गाय बकरी	गाय खेचर	बकरा
६२	हेशान जानवर	व्याघ्र	गौ.	भैस	रीछ	बकरा सपेद	जंबुक कुत्ता	स्वान	बकरा	जल मुर्गी	कुमरी	कुलिंन	कागडा	छोला	पोपट मैना	मुरगा	बगला
६३	पक्षी	कुलिंग	नमरा	चाल्ली तोता	कुकडा चोंचडी	कावर	तीतर बदक	बदक	काग	विलाउ	घोडा	वानर	वानर	बाकर	बीलावु	हरिण	हरिण
६४	वनजीव	हरिण	सिंह	शशक	चीता	घुड	वोलीश	मयूर	वेल	सिंह	पोय	सर्प	कछवा	कलेणा	गाडर	मार्जार	हरिण

अथ बलाबलरत्नं द्वितीयम् ।

शुभाशुभप्रदातारः सबलाः स्वफलप्रदाः॥ निर्बला निष्फलाज्ञेयास्तस्माज्ज्ञेयं बलाबलम् ॥ १ ॥ आग्नेयंवायवंचाप्यंपार्थिवंचमुहुःक्रमात्॥ प्रस्तारे स्युर्ग्रहाण्येतद्योगात्खण्डबलाबलम् ॥२॥ आग्नेयादीनिखण्डानित्वाग्नेयादिगृहेषुच ॥ गतानिस बलानिस्युर्मित्रगेहेतथैवच ॥ ३ ॥ उदासीनगृह स्थानांबलस्यसमताभवेत् ॥ शत्रुगेहेबलाभाव एवंज्ञात्वाफलंवदेत्॥४॥ अग्निवायूनीरभूमीमित्र शत्रूजलानलौ ॥ तथाभूम्यनलावन्यथोदासीनाः परस्परम्॥५॥ एवंतत्त्ववशाद्वीर्यंखण्डानांप्रथमं भवेत् ॥ पंक्तिसप्तक्रमेणाद्याद्वितीयंबलमुच्यते॥६ ॥

टीका-अब दूसरे रत्नमें शकलोंका बलाबल कहते हैं कि,संपूर्ण खण्ड शुभ अशुभके देनेवाले सबल निर्बलताके अनुसार अपना फल खण्ड देते हैं बलवान् अपना पूर्ण फल देताही है निर्बल निष्फल होताहै इसलिये प्रथम बलाबल विचार जानना चाहिये॥१॥ सो ऐसा है कि अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी जिनको क्रमसे आतशी, बादी, आबी, खाकी कहते हैं. क्रमसे प्रत्येक घर इन तत्त्वोंके होते हैं इनके योगसे बलाबल विचारना॥२॥आग्नि खण्ड(अग्नि) आतशी घरमें वायु खण्ड वायुस्थानमें ऐसे जल जलमें पृथ्वी पृथ्वीमें सबल होते हैं और मित्रस्थानमें भी सबल होते हैं ॥३॥ समके स्थानमें बलभी सम और शत्रुस्थानमें निर्बल होता है इस प्रकार जानके फल कहना ॥ ४ ॥ अग्नि वायु तथा जल भूमि परस्पर मित्र हैं

जल अग्नि भूमि अग्नि शत्रु अन्य सम हैं प्रकट चक्रमें हैं ॥ ५ ॥ इस प्रकार शकलोंके तत्व वशसे प्रथम बलाबल होता है दूसरा बल सात पंक्ति क्रम कहा जाता है ॥ ६ ॥

मित्रामित्र चक्रम्.				
–:	अ	वा	ज	भू
सम	भू	ज	वा	अ
शत्रु	ज	भू	अ	वा
मित्र	वा	अ	भू	ज

शकुनाब्दहौविज्दहमब्जदाख्यमिजाजकौ ॥
हर्फासहेतिसप्तानांक्रमाणांस्थापनंब्रुवे ॥ ७ ॥
अहैतुको विनिर्दिष्टः पुरस्ताच्छकुनक्रमः ॥
इदानीमब्दहाख्यस्यस्थापनेकारणं ब्रुवे ॥ ८ ॥

टीका–शकुनक्रम १ अब्दहक्रम २ विज्दहक्रम ३ अब्जदक्रम ४ मिजाजक्रम ५ हर्फाक्रम ६ असहक्रम ७ इन सातों क्रमोंका स्थापन कहतेहैं॥७॥सबसे प्रथम शकुन क्रम विना कारणही सर्वोपयोगी है सभी कामोंमें मुख्यहै अन्य क्रम अपने २ कामोंमें प्रधानहैं इस समय अब्दहक्रमके स्थापन करनेका कारण कहतेहैं ॥८॥

खण्डैककेस्थितत्वानांवह्न्यादीनांचतुष्टयम् ॥
ऊर्ध्वादधः क्रमस्तेषांव्यक्तिगुप्तीखरेखयोः ॥९॥
अबदाहाश्चवेदार्णः कुद्व्यब्धिगजसंख्यकाः ॥
युक्ताव्यक्तिविभागेषुतदैक्यात्स्थितिरब्दहे ॥ १०॥

टीका–सभी खंडोंमें अग्न्यादि ४ तत्त्वोंकी स्थिति होती है सो ऊपरसे नीचे तक क्रमसे जहां बिंदु तहां तत्व प्रकट जहां रेखा तहां तत्व गुप्त जानना ॥ ९ ॥ अब्दह क्रममें४वर्ण हैं इनके अंक ऐसे हैं कि अ० १ ब २ द ४ ह ८ इनके योग प्रकट तत्वका करके जितनी संख्या हो उतने स्थानमें उस खंडकी

स्थिति जाननी इसीसे यह अ० ब० द० ह० क्रम० हैं ॥ १०

यथालह्यानके वह्नितत्त्वेनाकारसंयुतिः ॥ तत्सं
ख्येचाब्दहेत्वाद्योलह्यानस्यास्थितिर्भवेत् ॥ ११ ॥
तरीखेवेदतत्त्वानां व्यक्तिस्तत्वाब्दहार्णजाः ॥ सं
ख्यायुक्तास्तदैक्येनाब्दहेत्तरिस्वास्थितौ ॥ १२ ॥
व्यक्तिर्नयत्रतत्त्वस्यतदंकं नैव लभ्यते ॥ शेषंगेहे
चतत्खण्डं जमातं षोडशे यथा ॥ १३ ॥ स्तेय
रूपकृतेगर्भसंतत्योर्गणनेऽब्दहः ॥ ज्ञेयस्तथैव
विज्ञेयाविज्दहेखण्डसंस्थितिः ॥ १४ ॥

टीका—जैसे कि लह्यान खण्डमें ऊपर अग्नितत्व प्रकट अर्थात् बिंदु है और अब्दह प्रथमवर्ण अ १ है तो इसका १ एक अंकही होनेसे इस क्रममें प्रथम गृहमें लह्यान शकल आई ॥ ११ ॥ तथा तरीख शकलमें चारों तत्व प्रकट ⁝ हैं तब अ १ ब २ द ४ ह ८ सभी अंक पाये इनका योग १५ है इस कारण पंद्रहवें घरमें तरीख शकलको स्थान इस क्रममें मिला ॥ १२ ॥ जहां कोईभी तत्त्वप्रकट नहीं है तहां अंकभी नहीं मिलता इस कारण जमात ☰ शकलने सोलहवें घरमें स्थान पाया अर्थात् जहां तक अंक इस क्रममें मिलते हैं तहां योग १५ हीतक पहुँचता है जमात विना अंक होनेसे १६ वें घरमें गयी यह अब्दह क्रम है ॥ १३ ॥ यह क्रम चोरके रूप और गर्भ विचार सन्तान विचारमें गिना जाताहै ऐसेही विज दह क्रममेंभी खण्डोंकी स्थिति जाननी ॥ १४ ॥

जकारेतत्रशैलांकंशेषेस्वब्दहवर्णजाः ॥ पूर्वव
द्युतिसंख्यैक्येविज्दहेखण्डसंस्थितिः ॥ १५ ॥

यथा लह्यानकेवह्निर्बिंदौवस्याद्विसंख्यके ॥ युक्ते तत्रैवलह्यानास्थितिः स्याद्विज्दहेक्रमे ॥ १६ ॥ अत्यष्टिसंख्याफरहेनृपेनोर्वरितेतनौ ॥ फरहस्य स्थितिर्ज्ञेयातरीखेखिलवर्णजाः ॥ १७ ॥ प्रकृति नृपोनितेशेषेपंचमेतारिखास्थितिः ॥ अबदंक य विज्ञानमस्यचान्यत्प्रयोजनम् ॥ १८ ॥

टीका-विज्दह क्रममें जकारके ७ अंक अन्योंके पूर्ववत् अर्थात् व २ द ४ ह ८ हैं पहिले अब्दहके तरह संख्या जोडनेसे इसमेंभी खण्डोंकी स्थिति है ॥ १५ ॥ जैसे लह्यान शकलमें अग्नि बिंदुके वकारके २ अंक होने दूसरे घरमें लह्यानकी स्थितिहै॥ १६॥ फरहा शकलमें अग्नि वायु पृथ्वीके ३ तत्त्व प्रकट हैं इन वके २ जके ७ इके ८ अंक लिये इनका योग १७ भया १६ से अधिक होनेसे १६ कम किये १ बाकी रहा इससे प्रथम घरमें फरहाकी स्थिति जाननी तारीखमें सभी तत्त्व प्रकट होनेसे सभी अंक व २ ज ७ द ४ ह ८ लिये योग २१ इसमें १६ कम किये ५ बाकी रहनेसे पंचम गृहमें तरीखकी स्थिति है यह इसका अंकक्रम ५६: इसका अन्यप्रयोजन है ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथाव्दहविज्दहयोः पारिभाषे ।

लह्यानंहुम्रातथाचनुस्रुत्खारिज्ज्याजाभिधाकब्जु लखारिज मिज्तिमाख्यमतवेखारिज्तथांकीशक म्॥ उत्काकब्जुलदाखिलंच फरहाख्यानुस्रुतुल्दा खिलं नक्याथोतवदाखिलंतरिखजामातेब्दहे षोड श॥१९॥विज्दहेचाहंफर्हार्थलह्यातवदं वयाजंतरी

खंचकब्जुलखारिजम् ॥ हुम्राअंकीशंचनखंतथोक्तं ज्तिमनदं चातवखं नकीच॥२०॥कदंजमातं किलवि ज्दहेस्मिन् खंडानि वै षोडशकीर्तितानि ॥ २१ ॥

टीका -इन १९ । २० । २१ श्लोकोंमें अब्दह विज्दहक्रम कहे हैं इनका स्पष्ट अर्थ रूप संख्या सहित पूर्वोक्त चक्रमें है पाठक देख लेवें ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

अथाब्जदपरिभाषा ।

रूपाक्षिरामाब्धिभिरब्जदस्यदशालयोतपत्तिरिह क्रमेण ॥ पूर्वं परस्ताच्छकुनालयाभ्यां पूर्वा पराभ्यांतनुतोगृहाद्वा ॥ २२॥ अस्मिन्दशांका तारिखास्थितिः खे नृपेजमातंयवनैः प्रदिष्टम् ॥ लह्यानहुम्रेवयजे नकीशावुक्ताभिधं कब्जुलदा खिलं च ॥ २३ ॥ फर्हानकीचातवदं तरीखं नुस्र त्खकं कब्जुलखारिजोस्तिमा ॥ अतवेखनुखुद खिलेजमातमख्यार्णसंख्येत्वमुनाविधेये ॥२४॥

टीका—अब्जदक्रमकी परिभाषा कहते हैं कि, अ १ ब २ ज ३ द ४ ये अंक इस क्रममह इनका योग १० होनेसे क्रम करके १० गृहोंमें इन अंकोंके क्रमसे लिखेहैं इससे ऊपर १६ पर्यंत शकुन क्रमके पूर्वापर देखके घरसे स्थापनहोते हैं ॥ २२ ॥ इसमें१०अंक होनेसे दशवें घरमें तरीखकी स्थिति है और इससे ऊपर ९ छोडके एकसे गिनती करनी ११ घरकेवास्ते २ अंकसंख्या ९ छोडके हैं घरमें सरेंती बयाज है यहाँ ३ संख्या नुस्रुत्खारिजकी भी है परन्तु शकुन पंक्तिमें पहिले बयाजहै इसलिये यहाँ ३ घरमें बयाजही

आया ऐसे सब जानना इस क्रममें १६ घरमें जमात यवनोंने कही है और उह्यान हुम्रा बयाज अंकीश उक्का कब्जुलदाखिल ॥२३॥ फरहा नकी अतवेदाखिल, तरीख, १० नुमुत्खारिज, कब्जुल खारिज, इस्तिमा अतवेखारिज, नुमुद्दाखिल जमात, १६ ऐसेनाम इस क्रममें जानने ॥ २४ ॥

अथ मीजानक्रममाह ।

सूर्यतः षष्ठषष्ठग्रहाणां क्रमाच्छाकुनेयादिमात्रा हुखंडान्तिमान् ॥ भूयएवंपुरोनन्दतः संलिखेत् केतुखण्डान्तिमान्स्यान्मिजाजक्रमः ॥ २५ ॥ कब्जुद्दाखिलफरहौ जमातवयजौ कलाश्चलह्या नम् ॥ हुम्राकब्जुलखारिजनुम्नुत्खारिजात् वेदाखिलाः ॥ २६॥ इस्त्यातरीखेकीशानुम्नुद्दाखिल नकीतथातवेखारिजम् ॥ अस्यान्योर्थोज्ञेयोवार ज्ञानेविधौतुकार्याणाम् ॥ २७ ॥

टीका--मिजाज व मिजान क्रममें सूर्यसे ६ । ६ ग्रहोंके क्रमसे स्थापन हैं जिनके आदिमें शकुनऔर अंत्यमें राहु खण्ड हैं ये सब ८ स्थान हुए पीछे ९ सेऊपर भी ऐसेही ८ लिखे जाते हैं जिनके अंत्यमें केतु खण्ड होता है इसको मिजाजक्रम कहते हैं ॥ २५ ॥ इनका न्यास ऐसा है कि कब्जुल दाखिल, फरहा, जमात, बयाज उक्का, लह्यान, हुम्रा, कब्जुलखारिज, नुमुत्खारिज, अतवेदाखिल, ॥ २६ ॥ इस्तिमा, तरीख, अंकीश, नुमुद्दाखिल, नकी, अतवेखा-रिज १६ इस क्रमका और प्रयोजन है कि वार जानने तथा कार्यका समय जाननेमें काम आता है ॥ २७ ॥

अथ फरहाक्रमपरिभाषा ।

ये चाब्दजाद्याः किल या वजार्णअष्टाधिका विंशति रत्रतेषाम् ॥ लह्यानमंकी हुमराबयाजो नुसुद्दाखि लनुस्तुतखारिजौच ॥ २८ ॥ तथातवेदाखिलखा रिजौ च फर्हानकीकब्जुलदाखिलं स्यात् ॥ कब्जुल खरीजंच जमातमुक्काज्तमातरीखा फरहक्रमस्युः ॥ २९ ॥ फाद्यांकवर्णप्रभवोपिभूयो लह्यानतोद्वाद शखण्डकानि ॥ पृष्ठिर्गिराद्यर्णचतुष्कखण्डैः प्रस्ता रमक्षेसाति पूर्ववत्स्यात् ॥ ३० ॥

टीका-अब फरहाक्रम कहते हैं कि, जो अब्जद क्रममें पारसी अक्षर हैं उनकी संख्या यहां २८ होती हैं तब प्रथम तत्वमें शून आद्यवर्ण अकार होनेसे पहिले घरमें लह्यान हैं दूसरेमें इसका विरोध अंकीशहै तीसरेमें वकारका वायुबिंदु होनेसे हुम्रा, चौथेमें उसक विरोधी बयाज है ऐसे क्रमसे लह्यान, हुम्रा, अंकीश, बयाज, नुसुद्द खिल, नुस्तुतखारिज ॥ २८ ॥ अतवेदाखिल, अतवेखारिज, फरह नकी, कब्जुलदाखिल, कब्जुलखारिज, जमात, उक्का, इजतम तरीख यह फरहा क्रम है ॥ २९ ॥ फकारके १२ अंक होनेसे बा रह घरोंमें लह्यानआदिहैं अपने अपने तत्वोंके अंकक्रमसे स्थापन पाते हैं पीछे ४ गिर अक्षरोंसे हैं प्रस्तार पूर्ववत् जानना ॥ ३० ॥

अथास्सहपरिभाषा ।

अदृष्टिखण्डस्थितिबीजकोसौक्रमोस्सहाख्योलि खितः पुराणैः ॥ यथातथैवाहमसुंविधास्येवयो धिकाध्यानुगतौविशंकः ॥ ३१ ॥ लह्यानातबदा तवेखरिजकाजामातफर्हाभिधो हुम्रानक्युकलाह

याश्चनुस्तुत्खारिजदाखीलकौ ॥ कञ्जुलदाखिल
खारिजौचवयजौंकीशाह्वयौचाग्रतः इज्जतमा
तरिखातथैवयवनैरुक्ता क्रमेणास्सहे ॥ ३२ ॥

टीका--अस्सह क्रममें खण्डोंकी स्थितिका कारण न देखा गया इसलिये पहिले आचार्योंके लिखेके अनुसार जैसेका तैसा यहां लिखा जाता है इसमें उमरकी अधिकता मार्गका विचार निःशंकताका विचार होताहै क्रम इसका ऐसा है कि, इख्वान अ० दा० अ० खा जमात, फरहा, कुम्रा, नकी, उकला, नु० खा० नु० दा० क० दा० क० खा वयाज, अंकीश, इज्जतमा, तरिखा ऐसे अस्सह क्रममें यवनोंने कहे हैं ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

एवं पंक्तिक्रमाः सप्त सार्थाः प्रोक्ता मया पृथक् ॥
पंक्तिगेहैक्यभेदेन द्वितीयं बलमुच्यते ॥ ३३ ॥
खण्डप्रस्तारगेहानि पंक्तिगेहसमानि चेत् ॥ बल
प्रदानिद्वित्र्याद्येगेहैक्येबलवत्तरम् ॥ ३४ ॥ अभा
वेपंक्तिगेहानां प्रश्नार्द्धं निर्बलं भवेत् ॥ ३५ ॥

टीका--इस प्रकार मैंने यहां सात क्रम पंक्तियोंके अलग अलग कहे हैं पंक्ति एवं स्थानके ऐक्यताके भेद करके दूसरा बल कहा जाताहै ॥३३॥ शकल, प्रस्तार और घर तीनों तुल्य हों तो बलवान् होतेहैं दोतीन आदि घरोंकी ऐक्यता होनेमें विशेषबलवान् होता है ॥३४॥ यदि पंक्ति तथा घरके ऐक्यतामें भेद होतो प्रश्न खण्ड निर्बल होजाता है ॥ ३५ ॥

अथ दृग्बलम् ।

मिथः पश्यंति खण्डानि सप्तमं रविसद्मसु ॥
नाग्रेषु दृग्भवंवीर्यं तृतीयं प्रोच्यतेधुना ॥ ३६ ॥

दृष्टं यच्छुभमित्राभ्यां खण्डं तद्बलसंयुतम् ॥
निर्बलं पापशत्रुभ्यामुदासीनेन मध्यमम्॥३७॥
एवंहिपृच्छालयखण्डतत्सुहृत् साक्ष्यर्द्धकानां
बलमाशु चिन्त्यम् ॥ कार्यस्य सिद्धिस्सबलैर्न
हीनैर्वीर्य्यान्विते शत्रुदलेन तद्वत् ॥ ३८ ॥

इति रमलनवरत्ने बलाबलनिरूपणं द्वितीयं रत्नम् ॥ २ ॥

अब दृष्टिबल कहते हैं, बारह खण्डपर्यंत सप्तमस्थानमें पू
दृष्टि होती है १२ से ऊपर दृष्टिबल नहीं होता यहाँभी ताजिकोक्त
दृष्टि ली जातीहै अब तीसरा बल कहतेहैं ॥३६॥ जो शकल शुभ
तथा मित्रसे दृष्टहो वह बलवान् पाप तथा शत्रुसे निर्बल और समसे
सम मध्यमबली होता है ॥३७॥ इस पृच्छा प्रश्नखण्डसे उसका मित्र
साक्षिखंडोंका बल प्रथम विचारना बलवा-
न्से कार्यसिद्धि होतीहै हीनबलीसे नहीं
होती शत्रुखंडमें बलवान् भी हो तो भी
वैसी कार्यसिद्धि नहीं होती सुगमताको
मित्र शत्रु सम चक्रमें लिखे हैं ॥ ३८ ॥

शकलानामित्रादिचक्रं				
अ	वा	ज	भू	संज्ञा
भू	ज	वा	अ	सम
ज	भू	अ	वा	शत्रु
वा	अ	भू	ज	मित्र

इतिरमलनवरत्नेमाहीधरीभाषाटीकायां बलाबलनिरूपणंनाम
द्वितीयं रत्नम् ॥ २ ॥

अथ प्रश्नोपकरणं तृतीयम् ।

प्रश्नोपकारेण विनात्र सिद्धिःप्रश्नस्यनस्याद्गुरुवाक्य
तोऽपि॥तस्मात्प्रवक्ष्येखिलसिद्धिहेतुं प्रश्नोपकारंलघु
षट्प्रकारम् ॥ १ ॥ आदीन्किलावंचबलाबलंद्वयंतृती
यमत्रास्तिमरातिवाहयम् ॥तूर्य्यैस्मितयाजंनिगमंतसी
रकंशरोन्मितंस्यात्तकरारमात्त्वम् ॥ २ ॥

टीका–अब तीसरे रत्नमें प्रश्नके उपकरण कहते हैं विना उपकरणोंके यहां गुरुके शिक्षा कियेमेंभी सिद्धि नहीं होती. तस्मात् समस्त प्रश्नसिद्धिके हेतु सूक्ष्म छः प्रकार प्रश्नोपयोगी कहताहूं॥ १॥ इमतियाज पांचवां निगमताशीर छटा तकरार आर्तव है ॥ २ ॥

मूलीभूतेतुसर्वत्रपाशकेतदसंभवे ॥ यवनोक्तविधिं वक्ष्येशकुनोत्पादनेऽधुना ॥ ३ ॥ श्वासंनियम्या स्तरवर्तुलाकृतिंरेखास्तदुच्चैर्विगणय्य ताः पुनः ॥ तदंकतुल्यंशकुनं तनुस्थितं नृपाधिकाश्चेन्नृपपा तितेर्द्धकम् ॥ ४ ॥ तस्मान्नगयुग्मगृहेविधायत न्नच्छैलमग्रंतुदगंतुरीयम् ॥एवं विधायार्द्धचतुष्टयं वाप्रस्तारमाद्युक्तविधेः प्रसाध्यम् ॥ ५ ॥

टीका–प्रस्तारका प्रथम मूल कारण पूर्वोक्तपाशा है कदाचित् पाशा न होतो शकुल उत्पन्न करनेमें इस समय यवनोक्त विधि कहताहूं ॥ ३ ॥ प्रश्नकर्त्ता अपना श्वासा वंदकरके गोल आकार एक वृत्तमें जितने बिन्दु श्वासा छूटनेतकहोसके उतने लिखने तब गिनने १६ से अधिक हों तो १६ का भागदेकर शेष जो अंक १६के भीतरका बचे उतनेई शकल शकुन क्रमकी प्रथम लेनी ॥ ४ ॥ उससे सातवीं दूसरीमें इससेभी सातवीं तीसरी और तीसरीके भी सातवीं चौथे घरमें लेनी पंचम आदि शकल पूर्वोक्त रीतिसे तयार करनी तौ प्रस्तार होजाता है ॥ ५ ॥

कृत्वा कथंचित्प्रस्तावमिन्किलावमनन्तरम् ॥ कुर्वीततात्क्रियांवक्ष्येतनुपंचमयोस्तथा ॥६॥ द्व्यङ्ग योस्त्रिसप्तयोस्तूर्यनागयोर्योगतोदलान् ॥ चतुरो विनिधायादौतेभ्यःप्रस्तारमाचरेत् ॥ ७॥ इन्कि

लावोथप्रस्तारेतिथिगेहेसदैवहि ॥ जमातमेवहि भवेत्तन्मूलेचविलोकयेत् ॥ ८ ॥ तलान्निगदतां प्रश्नस्तथातामुपयातिहि ॥ इन्किलावाह्वयादद्या द्गणवर्णाइतोन्यथा ॥ ९ ॥

टीका--प्रथम किसीप्रकार प्रस्तार बनायके तब इन्किलाव करना उसकी विधि कहताहूँ कि पहिले पांचवेंका ॥ ६ ॥ दूसरे छठेका तीसरे सातवेंका और चौथे आठवेंका योग पूर्वोक्त रीतिसे करके ४ शकल तयार करनी तब उन चारोंसे प्रस्तार बनाना ॥७॥ इस संस्कारका नाम इन्किलाव कहते हैं इसके पंद्रहवें घरमें सर्वदा जमात आतीहै उसका मूल देखना॥८॥ उसके (तल) मूलसे प्रश्न कहनेवालोंकी सत्यता होती है इन्किलाव नाम संस्कारसे गण वर्ण व्यवस्था देनी इससे सिवाय औरसे ऐसा नहीं होता॥९॥

बलाबलविचारस्स्यादुपकरणंद्वितीयकम् ॥ मरातिवं पञ्चविधं संज्ञया तत्क्षणेन च ॥ १० ॥ रुवाईखुमासी सुदासी सवाई समानीतिसंज्ञाः पुराक्ताः पुराणैः ॥ द्वियुग्माभ्रतोष्टांतखानांक्रमेणा त्रपूर्वेषुनेत्राब्धिकं स्यात्सुवैरम् ॥ ११ ॥ स्वल्पं तुजिह्वति तथा लोके कार्ये च विघ्नदम् ॥ निर्वैरं त्रितयं त्वत्र विज्ञेयं सुविचक्षणैः ॥ १२ ॥ प्रस्तारसर्वखण्डानि स्थितानि जिह्वके गृहे ॥ ज्ञेयानि विघ्नकर्तॄणि शकुनक्रमतस्त्विह ॥ १३ ॥

टीका--बलाबल विवेक दूसरा उपकरण पूर्वोक्त है तीसरे मरातिब संज्ञा है पाँच प्रकारकी संज्ञासे तत्काल प्रस्तारसे भि

जानना ॥ १० ॥ चार बिन्दुका रुबाई पांचका खुमासी छःका सुदासी सातका सबाई और आठ बिन्दुका समानी य संज्ञा पूर्वाचार्योंने चार बिन्दुसे आठ बिन्दुतक कही हैं पहिले पाँचवें तथा दूसरे चौथेका जिद संज्ञक स्वल्पवैर होता है ॥ ११ ॥ यद्यपि यहाँ (जिद्) स्वल्पवैर है तथापि संसारके कार्यावसरमें विघ्नही देते हैं इनमें तीसरा निर्वैर है यह शुभ होता है ऐसा बुद्धिमानोंने जानना ॥ १२ ॥ प्रस्तारमें सभी खंड (जिद्) शत्रु घरमें हों तो विघ्नकरनेवाले जानने यह विधि शकुन कममें देखनी ॥ १३ ॥

अथेम्तियाजम् ।

इम्तियाजंतुरीयंयद्द्विखंडोत्थंदलंभवेत् ॥ तत्सि
द्धिदंशुभाभ्यामशुभाभ्यामतिविघ्नदम् ॥ १४ ॥
शुभाशुभाभ्यां तज्जातमादौ शुभमसत्परम् ॥
असच्छुभाभ्यांतज्जातमसदादौशुभंपरम् ॥ १५ ॥

टीका-अब इम्तियाज चौथा उपकरण कहते हैं, यह दो शकलोंसे मिलके जो शकल हो उसकी संज्ञा है इसमें इतना विचार है कि जो दोनहूँ शुभ शकलोंके मेलसे बनी हो वह कार्य सिद्धि देती है जो अशुभोंसे बनी हो वह कार्यमें अति विघ्न करती है ॥ १४ ॥ जो एक शुभ दूसरी अशुभसे बनी हो वह प्रथम शुभ पीछे अशुभ देती है जो अशुभ और शुभसे निकली हो वह प्रथम अशुभ पीछे शुभ देती है ॥ १५ ॥

अथ सीरम् ।

संबन्धाद्गृहविज्ञानंतसीरंप्रोच्यतेऽधुना ॥ प्रष्टुरा
द्यंगृहंतत्संबन्धादपराणिच ॥ १६ ॥ ममात्मज
श्याकवित्तलाभः कदेति प्रष्टुः प्रथमंगृहंस्यात् ॥

तस्माच्च पुत्रं चततोऽङ्गनाख्यंलाभंत्वतोवाह्निमितं तनुःस्यात् ॥ १७॥ तनोर्द्वितीयंधनमुक्तमेवमाद्या
द्धनाद्धातनुवित्तसौख्यम् ॥ तसीरमेतच्छरसंख्य
मुक्तमनेन पृच्छालयभिन्नकोशः ॥ १८ ॥

टीका--संबंधवश स्थान जाननेको तसीर कहतेहैं सो कह
जाताहै कि प्रश्न करनेवालेको प्रथम घरहै उसके सम्बन्धसे अ
घर जानने ॥ १६ ॥ जैसे कोई पूछे कि मेरे बेटेके शालेको धनला
कब होगा तो पूछनेवालेका तो प्रथमही घर ठहरा उससे पांच
शकल उसके पुत्रकी उससे सप्तम पुत्रवधूकी उससेभी तीसरा घ
प्रश्न कर्ताके पुत्रके शालेका ठहरा उस घरसे दूसरे घरमें उसक
धनलाभ देखना अथवा उस शालेके घरसे देखना यह तीसरा ना
पंचम उपकरणहै इस विधिसे प्रश्नका स्थान अलग निकाल
जाताहै ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथ तकरारम् ।

खण्डंयत्पुनरुक्तं स्यात्तकरारंतदुच्यते॥ प्रश्नगेह
स्थितंखण्डं पुनरुक्तंयदाभवेत् ॥ १९ ॥ तद्वशेन
फलंवाच्यं पूर्वोक्तेनैववर्त्मना ॥ शुभस्थानेशुभंज्ञे
यमशुभेचाशुभंवदेत् ॥ २० ॥ जिह्नस्थानेऽशुभं
प्रोक्तमरातिबवशादिदम् ॥ ज्ञात्वैवंप्रवदेद्विद्वान्
नैवंप्रश्नोवृथाभवेत् ॥ २१ ॥

इति श्रीरमलनवरत्ने प्रश्नोपकरणं तृतीयरत्नम् ।

टीका--जो एक सकल पुनरुक्तिसे हो उसे तकरार कहतेहैं प्रश्न
घरमें स्थित खण्ड जो किसी दूसरे घरमें भी हो तो इसके वशसे
पूर्वोक्त प्रकारसे फल कहना, जैसे धनभावमें लह्यान है धनका

प्रश्न है और दशम भावमें भी लह्यानहो तो राजपक्ष संबंधि धन प्राप्ति जाननी परंतु इसमें इतना विशेष विचारहैं कि, जो वह शकल शुभ स्थानमें होतो शुभफल अशुभमें होतो अशुभ फल कहना ॥ १९ ॥ २० ॥ यदि जिद्दस्थानमें होतो अशुभ अन्योंमें शुभ मरातिबके वशसे जानना इस प्रकार तकरार संज्ञक अनुकरणसे जो विद्वान् प्रश्न कहे उसका व्यर्थ नहीं जाता ॥ २१ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषाटीकायां तृतीयं रत्नम् ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थरत्नम् ।

मूलीभूतानिसर्वत्रप्रश्नप्रश्नालयानिहि॥ तेनतन्वादिभावानांप्रश्नभेदान्ब्रुवेऽधुना ॥ १ ॥ तनोःसुखजनिष्फलावयवजीव्यजीवायुषां प्रयत्नबलकार्यकंनृपतिनीतिशान्तिस्तनोः ॥ वराकधनिवित्तदा गमनसाह्यपार्श्वस्थिताः क्रयेतरधनोद्यमाः कृपणदातृजीव्याधनात् ॥ २ ॥

टीका–प्रश्नोंके मूलभूत प्रश्नालयहै इसलिये तनु आदि भावोंके भेद यहाँ कहे जातेहैं ॥ १ ॥ प्रथम घरमें शरीर सुख दुःख जन्म स्थान, शरीरके अंगुलि आदि अवयव, आयु, मृत्यु, उद्यम (यत्न) बल, कार्यबल, राजनिति, शांति इतने प्रश्न प्रथम घरसे विचारने तथा कंगाल, धनवान्, धन देनेवाला, धनागमन, सहायक पार्श्वमें बैठे मनुष्यका, पडोसीका, खरिदसे सिवाय धनके उद्यम मूंजीका दाताका, और आजीविका इतने विचार दूसरे घरसे करने ॥ २ ॥

तार्तीयकेस्वजनसेवकबन्धुमित्रसंतोषसोदरभगिन्युरुचेष्टितानि ॥ विद्यापराक्रमविनोदसमी

पयात्रास्वप्रेक्षितानि च मिलंति विलोकितानि
॥ ३ ॥ तुर्येगृहस्थितिकृषीः पितृमातृवित्तपाता
लभूगततरुस्वपरप्रदेशाः ॥ कार्यावधीपरिणति
मृतिभूमिचिंताक्षेत्रागदेतरणिवाहजलाश्रयाणि
॥ ४ ॥ बुद्धिप्रसादसुतमोदसुहृत्सुशिल्पमांगल्य
मादककुतूहलपैतृकाणि ॥ दूतागमप्रमदपात्रशु
भांशुकानिस्युःपंचमेकुशलपत्रिकगर्भचेष्टा॥५॥
दासर्णपाचनहरापहृतार्थरोगदोषाल्पदेहपशुप-
क्षिगणार्थचिंता ॥ संतोषचेटकशुचोरिपुगर्भचेष्टे
प्रच्छन्नदोषकृपणावगतीरिपौस्युः ॥ ६ ॥

टीका—तृतीय घरमें अपने आदमी, दास, बंधु, मित्र, संतोषित भाई, बहिन, विशेष चेष्टा, कार्यारंभ, विद्या, पराक्रम, विनो[द] नजदीक यात्रा, स्वप्न, देखनेके कर्म, इतनी बात तृतीयभाव देख नेसे मिलतीहैं ॥ ३ ॥ चौथे घरमें, गृहकी स्थिति, खेतीका का[म] पिता, माता, धन, खत्ता आदि भूमिगतकर्म, वृक्ष स्वदशे परदे[श] कार्यकी अवधि, कार्यका परिणाम, मृत्युविचार, भूमिविचार, खे[त] फसल नैरुज्य, सुखवान्, जलकृत्य, जलआश्रय वाहन इतने विचा[र] देखना ॥ ४॥ पंचममें बुद्धिका प्रसाद, पुत्रविचार, प्रसन्नता, मित्र शिल्पकर्म, मंगलकर्म, मादककर्म, खेल, पिताका द्रव्य, वा ता[ऊ] चाचा दूतका आगमन, प्रमाद, पात्र, शुभवस्त्र, कुशलवात[ी] चिठ्ठीपत्री और गर्भसंबंधि चेष्टावोंका विचार करना ॥ ५ ॥ छ[ठे] घरमें दास ऋण, परिपाक, आपत्हरणकरी वस्तु, दूसरेने हरण करी वस्तु चोरागया धन, रोग, दोष, देहदुर्बलता, पशुपक्षिसमू[ह] धन, चिंता, संतोष, चेटक, शोक, शत्रु, गर्भचेष्टा, गुप्तदोष कृप णगति इतने विचारने ॥ ६ ॥

उद्वाहनष्टवनितोन्मुखशत्रुवादयुग्मोद्यमागमधवा रतिचोरभेदाः ॥ स्थानांतरस्थितिजयस्वपरप्रवेशावाणिज्यमार्गरणचिंतनमद्रिगेहे ॥७॥ शोकर्णदानभयमृत्युहराहतार्थप्राग्जीव्यदुःस्थितिमृतार्थगतार्थदुःखम् ॥ दुर्नीतिकोटिगिरिशून्यविषादचिन्तानिद्रालसप्रहरणानि तथाष्टमेऽपि ॥ ८ ॥ भाग्यर्द्धिधर्मव्यभिचारदानदूरेगतिस्वप्नयातित्वविद्याः ॥ पितृव्यवित्तेष्टरतिश्रमाणि भाग्येपि विश्वासकथा विलोक्याः ॥ ९ ॥

टीका—सप्तस्थानमें विवाह, खोयीगयी वस्तु, स्त्री आदिका विचार, शत्रुसे कलह, युद्ध आदि, संधि, उद्यम, प्रवासिका आगम, स्त्रीकापति, रति, चोरके भेद, अन्यस्थान गमन, स्थिति, युद्धमें जय, स्वचक्रपरचक्र, व्यापार, मार्गसफर, रणका विचारकरना॥७ अष्टमस्थानमें, शोक, ऋण, दान, भय, मृत्यु, गया आया द्रव्य पूर्वाजीविका, दुष्टस्थिति मृत्युसंबंधि कार्य, गयाधन, दुःख, दुष्टनीति, किला, पहाड, शून्यस्थान, विषाद, चिंता, निद्रा, आलस्य, चोट, इतने, विचारना ॥ ८ ॥ नवमभावमें भाग्य, वृद्धि, धर्म व्याभिचार, दान, यात्रा, स्वप्न, अज्ञान, चाचा ताऊका वित्त इष्ट रति, श्रम और विश्वासकी कथा विचारनी ॥ ९ ॥

राज्याधिकारजनकीर्तिबलप्रतापवृष्ट्युद्यमागदजनित्रिभिषग्गुरूणाम् ॥ स्वामिस्वजातिसलिलागममंत्रयंत्राः सेवेष्टपूर्तिविशदा दशमे विलोक्याः ॥ १० ॥ सुहृन्मतीसात्विकराजकोशोभाग्योद

यामात्यानिजेप्सिताप्तिः॥ आशास्तुतीः सत्यवि
तथ्यचिंतारौद्रेनृपन्यायकृतोर्नुतिश्च ॥ ११॥ करि
वृषाद्यारिबंधविमुक्तयोर्निगडगेहमृणस्य विमोच
नम् ॥ अलघुरुग्रिपुदंभभयाक्षितिव्यवहरप्रसरार
विसद्मनि॥ १२॥ पृच्छकस्यगुणवर्णचिंतनंसाक्षि
ताग्निसदनत्रयस्यच ॥ उम्महम्मगृहसाक्षितांच
केचिद्वदंतिभवनेत्रयोदशे ॥ १३ ॥

टीका–दशमस्थानमें राज्याधिकार, राजकीय मनुष्य, की
बल, प्रताप, वर्षा, उद्यम, निरोगिता, माता, वैद्य, गुरु, स्वा
स्वजाति, जलागम, मंत्र, यंत्र, सेवा, इष्टापूर्ति, विशदको वि
रना ॥१०॥ मित्र माति, सात्विकभाव, राजपक्ष, खजाना, भाग
दय, मंत्री, अपनी इच्छाके कार्यकी प्राप्ति, अभिलाषा, स्तु
सत्य झूंठकानिर्णय, राजपक्षाधिकारीन्याय करनेवालेका विच
नम्रता ग्यारहवें भावमें विचारने ॥ ११ ॥ हाथी, बैल आ
शत्रुके बंधनसे छूटना, कैदखानेका विचार, ऋणनिर्मुक्ति, बडारो
शत्रु, दंभ, भय, पृथ्वी, व्यापार व्यय इतने विचर बारहवें घ
देखना ॥ १२ ॥ प्रश्न पूछनेवालेके गुण रंगआदिकाविचारसा
स्थान १३। १४। १५। में देखना, इसमें भी उम्महां घरकी सा
ताभी कोईक तेरहवें घरमें कहते हैं ॥ १३ ॥

प्रोच्यतेसदसतोर्द्वयोर्मिथः कार्यकारणमिदंच
तुर्दशे ॥ आनिलालयवनातसाक्षिताऽऽदशंएत
दुपनामतः स्मृतम् ॥ १४ ॥ प्राड्विवाकसदने
शुभाशुभंप्राणिकार्यमथानिश्चयोमतः ॥ यद्वदत्र

खलुपंचचन्द्रकेमुत्पलस्थ सलिलस्य साक्षिणि ॥ १५ ॥ षोडशेतुसुखदुःखसमुत्थांचिंत्यमेवपारिणामफलंयत् ॥ विश्वविग्रहहराविव सर्वं भूगृहादिशकलैकसाक्षिणि ॥ १६ ॥

इतिगृहषोडशगृहविचार्य्यवस्तुभेदः ॥

टीका–कार्य्यं एवं उसका कारण दो मुख्य विचार्य होते हैं चौदहवें घरसे इन दोनोंका परस्पर संबंधसे विचारकरके शुभाशुभकहा जाताहै अग्नितत्त्व स्थानके वश वनात क्रममें इस घरका साक्षिताहै इसीका उपनाम आदर्श भी कहाहै क्योंकि यह कार्य कारणको प्रतिबिंब सदृश दिखाय देताहै ॥ १४ ॥ पंद्रहवां घर सर्वसाक्षी है इसीसे इसको (प्राड्विवाक) शिरिस्तेदार वा न्याय विचार कहते हैं इस घरमें प्राणीके कार्य्यका शुभाशुभनिश्चय होताहै बुद्धिकाभी निश्चय इसीसे होता है निश्चय है कि जैसे फल एवं कमलकी साक्षिता है ऐसेही यह पंचदशम घर सभी स्थानोंका साक्षी है ॥ १५ ॥ सोलहवें घरमें सुख दुःखसे उत्पन्न जो परिणाम फल उसका विचार करना जैसे तेरहवेंसे मुख्य शकल और उसके गुणकसे साक्षीखण्ड निकालकर कार्य लियाजाता है ऐसेही भूमितत्त्व आदि करके साक्षिताम यह खण्डकाम देता है ॥ यह इन १६ शकलों विचारणीय वस्तुभेद कहा ॥ १६ ॥

प्रश्नार्थमिष्टदेवप्रार्थना ।

निधायहृदिमंजुलंगणपपादपंकेरुहं प्रमथ्यरमलांबुधिंसकलमत्रभूमीतले ॥ चमत्कृतिकरपरं विबुधमण्डलीमण्डनंप्रकारमधुनाब्रुवे सकलरम्लविद्योपितम् ॥ १७ ॥

टीका—अब ग्रंथकर्ता प्रश्नचमत्कार कहनेकेवास्ते प्रथम अ
इष्ट देवताको प्रणाम करते हैं कि अपने हृदयमें गणेशजी
रमणीय चरण कमलको धारण करके इस संसारमें संपूर्ण र
रूपी समुद्रको मथन करके; परम चमत्कार करनेवाला विद्वानों
मण्डलीको भूषित करनेवाला प्रकार, जो समस्त रमलशास्त्र जा
वालोंसे गुप्त है, उसे प्रकट करके इस समय कहताहूँ ॥ १७ ॥

प्रागुत्थितो रमलवित्स्वगुरुं प्रणम्य ध्यात्वा पदा
म्बुजयुगं सुशुचिर्मुरारेः ॥ प्रश्नार्थिनः कति
ममांतिकमागमिष्यंतीत्थं विवित्सुरमलाक्षयुगं
क्षिपेज्ज्ञः ॥ १८ ॥

टीका--प्रातःकाल रमल जाननेवाला, शयनसे उठके शौचा
नित्य कर्मसे पवित्र होके अपने गुरुको प्रणाम एवं श्रीविष्णु भ
वान्के चरण कमल युगलोंका ध्यान करके आज मेरे पास कि
प्रश्न पूछनेवाले आवेंगे इसके जाननेके प्रथम पाशाओं
जोडी पट्टीमें फेंके ॥ १८ ॥

प्रस्तारमाद्यवत्कुर्यादत्रचेद्विजद्दहालये ॥ खण्डानि
स्युस्तदाप्रष्टागंतानोचेन्नचाव्रजेत् ॥ १९ ॥ यावंति
तानिखंडानि तावत्संख्यागमोनृणाम् ॥ पुंखंडै
स्त्रीदलैः स्त्रीणां क्लीबैः क्लीबागमो भवेत् ॥ २० ॥
अयमञ्जदखण्डैर्बाह्यागमः प्रोक्तवद्दलैः ॥ आद्य
विश्वौरुद्रशक्रौहत्वाद्वैत्वैकमेतयोः ॥ २१ ॥
कुर्यात्तत्प्रश्नगंचेत्स्यात्प्रष्टापूर्णकरोऽन्यथा ॥ रिक्त
पाणिश्चतत्पाणौकिमस्तीतिविचिंतयेत् ॥ २२ ॥

प्रष्टुः करगतोधातुस्तत्खण्डेत्वग्निखे भवेत् ॥
जीवोत्थं वायुजेम्भोजेमूलंभौमेमणिंवदेत् ॥ २३॥
इत्थमागामिसंख्याद्यं कृत्वाद्यात्क्रमतः पृथक् ॥
तत्तत्प्रस्तारकानादौकृत्वा प्रश्नं विलोकयेत्॥२४॥

टीका--पाशाके अनुसार प्रस्तार करना तहाँ यदि विजूदह घरमें वे खण्ड होंतो प्रश्न करनेवाले आवेंगे जानना उक्त घरमें न होतो नहीं आवेंगे जानना जैसे प्रस्तारमें जो शकल प्रथम घरमें हो वह विजूदह क्रममें भी प्रथम घरकी हो ऐसेही जो खण्ड जिस स्थानमें वह विजूदह क्रमके उतनेही घरकाहो ऐसे जितने खंड मिले उतने प्रष्टा आवेंगे कोई भी ठीक अपने स्थानमें न होतो कोई नहीं आवेगा ॥ १९ ॥ इसमें भी विशेष विचारहै कि जितने खण्ड मिले उतने मनुष्य तो आवेंगे परंतु उन खण्डोंमें भी जितने पुरुष खण्डहैं उतने मर्द, जितने स्त्री खण्डहैं उतनी स्त्री और नपुंसकों तुल्य नपुंसक प्रश्न पूछनेवाले आवेंगे ॥ २० ॥ यह क्रम अथवा अबजद खण्डसे उक्त प्रकारसे देखना और पहिले तेरहवेंसे ग्यारह चौदहसे दो शकल निकालके फिर उनसे एक बनायके देखे कि वह खण्डप्रश्न प्रस्तारमें हैं तो पूछनेवाला हाथमें कुछ लेके आवेगा यदि वह सकल प्रस्तारमें न हो तो प्रष्टा खाली हाथ आवेगा जानना अब यह विचार करना कि प्रश्न कर्ताके हाथमें क्याहै॥२१॥२२॥जो वह एक खण्ड निकालाहै उसमें ऊपरके स्थानमें अग्नितत्त्व हो तो प्रष्टाके हाथमें धातु वस्तु है वायुतत्त्व होतो जीव है जलतत्त्व होतो मूलहै,भूमि तत्त्व होतो मणि है कहना॥२३॥ इस प्रकार आगामी संख्या आदि जानके क्रमसे पृथक् २ विचार करना जिसमें जैसा प्रस्तार कहाहै वैसा बनायके प्रश्न देखना॥२४

मनोगतं किंकिमुतत्रबीजं कोवास्तिभेदः किमु
सिद्धयासिद्धिः॥ इत्थं विमर्शायततोद्यमानांतत्प्रा
तये संप्रवदामि युक्तिम् ॥ २५ ॥

टीका-पूछनेवालेके मनमें क्याहै उसका बीज क्याहै प्रश्
भेद क्याहै उसमें सिद्धि असिद्धि क्या होगी इस विचारके व
और उद्यम तथा उसके प्राप्तिके वास्ते युक्ति कहताहूं ॥ २५ ॥

मनोगतं स्यात्प्रथमं द्वितीयं तत्कारणं भेदमथो
तृतीयम् ॥ तुरीयमत्रास्ति च सिद्ध्यसिद्धिः स
र्वेषु प्रश्नेषु चतुः प्रकाराः ॥२६॥तेषां क्रमाच्छा
कुनकेन्द्रगार्द्धाविश्वान्नृपांताःकिलपाशकोत्थाः॥
तत्साक्षिणस्तैः क्रमतो विनिघ्नास्तज्जाब्धिखंडा
स्तुपृथग्विधेयाः ॥ २७ ॥ प्रस्तारकेन्द्राणि तथा
पराणि तत्पंचमाः साक्षिण एव तेषाम् ॥ मिथो
विनिघ्नाश्च तदुत्थखण्डाश्चत्वारएवं पुनरत्रकार्याः
॥ २८ ॥ पूर्वागतस्तं क्रमतोविनिघ्नाश्चत्वारिचै
भ्यः प्रकटीकृतानि ॥ प्रश्नोहदुत्थाद्यखिलप्रभे
दास्तेषां ग्रहैः स्युः शकुनाः क्रमेण ॥ २९ ॥

टीका-प्रश्नमें मुख्यकारण पहिला मनकी बात दूसरा
प्रश्नका कारण तीसरा उसका भेद और चौथा कार्यकी सिद्धि
असिद्धि हैं ये चार कारण चार प्रकारके सभी प्रश्नोंमें है ॥ २
इनकी युक्ति कहतेहैं कि शकुन क्रमसे केन्द्र १।४।७।१० के श
≡ ≡ ≡ ≐ इनके साक्षीप्रस्तारमें १३।१४।१५।१६घरो
घरोंमें जो शकल हों उनसे उक्त केन्द्र खंडोंको गुनके चार श

नायके पृथक् रखनी ॥ २७ ॥ तब प्रस्तारमें जो केन्द्र १ । ४ । ७ । १० शकल हैं उनकी पंचमपञ्चम, अर्थात् ५ । ८ । ११ । १४ साक्षी हैं, इनमें स्थित शकलोंसे केन्द्र स्थित शकलोंको गुणके ४ शकल होती हैं तब पूर्वानीत पृथक्स्थ खण्डोंसे; इन चार शकलोंका मेल करके चारही शकल तयार करनी ॥ २८ ॥ पूर्वगत ४ खण्डोंसे क्रमकरके पहिलेसे पहिली दूसरेसे दूसरी इत्यादि क्रमसे जब केवल ४ शकल प्रकट हो जावें तब इन चारोंसे पूर्वोक्त मनकी बात आदि कहना अर्थात् पहिली शकलसे मनकी बात जिसे पारसीमें जमीर कहते हैं दूसरीसे उस प्रश्नका कारण तीसरीसे उसका भेद ये तीनोंका हाल शकुन क्रमसे जानना और चौथी शकलके शुभाशुभादि विचारसे कार्यकी सिद्धि असिद्धि कहनी २९॥

अथैषामुदाहरणम् ।

केनाप्यथागत्य कृतेति पृच्छारम्लज्ञ मे मानसहेतु भेदात् ॥ प्रश्नेङ्ककेनैव हि सिद्ध्यसिद्धीर्वदाशु चित्रं यदिहास्ति सम्यक् ॥ ३० ॥ क्षिप्तेक्षयुग्मेतनुगोत्र हुम्राधनेङ्कि शंवैत्रिचतुर्थयोश्च ॥ स्यात्कब्जुतुल्खारि जखंडमेभ्यः प्रस्तारमाद्युक्तविधेःस्फुटं स्यात्॥३१॥ शकुनादिमलह्यानप्रश्न विश्वकदाख्ययोः ॥ योगे फहोङ्कहुम्रातत्पंचमस्थानदाख्ययोः ॥३२ ॥ योगा दतबदं तस्य फहा तकरवं भवेत् ॥ तृतीयशकुने तस्य गृहं स्यान्मानसेक्षिते ॥ ३३ ॥

टीका--प्रश्नके ४ कारणोंका उदाहरण है कि किसीने आयके पूछा कि हे रम्माल ! मेरे मनके कारणके भेदोंको एकही प्रश्नमें सिद्धि असिद्धि सहित शीघ्र कहो यदि इसमें तात्पर्य अच्छा है तो॥३०॥

ऐसे प्रश्नहुयेमें पाशा डाला तो प्रथमस्थानमें हुम्रा ⁝ दू
अंकीश ⁝ तीसरे और चौथेमें भी कब्जुलखारिज ⁝ आया
प्रस्तार बनाया ॥ ३१ ॥ शकुन क्रमम
प्रथम घरमें लह्यान ⁝ है तेरहवें प्रस्ता
रमें कबजुलदाखिल ⁝ है इनका योग-
कियातो ⁝ फरहा भया, प्रथममें हुम्रा है
इसका साक्षी पाँचवाँ ⁝ नुसतदाखिल
है इनके योगसे ⁝ भया तब पूर्वागत

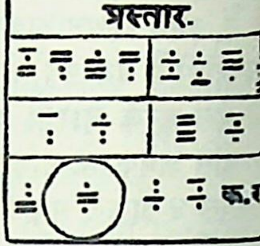

फरहासे इस अतवेदाखिलका योग कियातो ⁝ कबजुल खा
भया. यह शकल शकुन क्रममें तीसरे घरकी है इससे तीसरे घर
बंधी प्रश्न प्रष्टाके मनमें कहना स्थानोंके विचार पूर्वोक्त हैं ती
रेमें भाई वा समीप गमनका प्रश्न कहना यह प्रथमकेन्द्र १ घ
कार्य भया ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

शकुनाब्धौ जमातं तत्साक्षिप्रश्नेन्द्रगं नखम्
तयोर्योगान्नखंजातं भूयःप्रश्नेब्धिगंकखम् ॥ ३४
तत्पंचमेऽष्टमेहुम्राऽत्तवेखंस्यात्तयोर्युतेः ॥ नख
तवेखयोर्योगावयाजंशकुनेङ्कम् ॥ ३५ ॥ कारण
नंदगेहस्थं वर्त्तते तत्र चिन्तनः ॥ ३६ ॥

टीका—अब दूसरा केन्द्र चौथा घर है शकुन क्रममें चौथे घर जम
⁝ है उसका साक्षी १४ वें में प्रस्तारमें नुसुत्खरिज ⁝ है इन
योगसे ⁝ न० खा० हीभया, ॥ ३४ ॥ इस चौथेसे पंचम शकु
अष्टम हुम्रा ⁝ है फिरभी प्रश्नमें चौथे केन्द्रमें ⁝ क० खा०
इनके योगसे अतवेखारज ⁝ भया नु० खा० और अ० खा०

योगसे बयाज ☰ भया यह शकुन क्रममें नवमघरमें है इससे प्रश्नका कारण नवमघर संबंधी जानागया ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

शकुनेद्रिगृहेङ्कीशांस्थितंप्रश्नेतिथौतथा ॥ उक्का तद्घातसंभूतंलह्यानंप्रश्नशैलगम् ॥ ३७ ॥ तद्दंत स्येषुरुद्रस्थनक्यालह्यानकंयुते ॥ तद्गृहं शकुने चाद्यं तद्भेदे तस्य चिंतने ॥ ३८ ॥

टीका--शकुन क्रमके सातवें घरमें अंकीश ☰ है ऐसेही प्रस्ता रके पंद्रहवें घरम उक्काहै ☱ इनके घातसे लह्यान ☲ हुआ अब प्रश्नप्रस्तारके सप्तमकेन्द्रमें ☳ नुसुतदासलहै इससे पचम ग्या रहवें घरमें नकी ☴ है इनके योगसे लह्यान भया ☲ यह खण्ड शकुनके प्रथम घरमें है इससे प्रथम घर प्रश्नके भेदका है प्रथम गृह संबधी भेद प्रश्नका कहना ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

सिद्ध्यासिद्ध्योर्गृहंव्योमशकुने तत्र खान्वितम् ॥ तस्याःसाक्षीनृपेफर्हा ☴ प्रश्नेतद्घातजाङ्किशम् ☰ ॥३९॥ पुनः प्रश्नेजमातंस्याद्द्योम्नि ☲ तत्पं चमेन्द्रगम्। नखं ☱ तयोर्योगजातंनखंतन्निम्नमं किशम् ॥ ४० ॥ तत्रफर्हांदलंसौम्यंजातंकार्यार्थ सिद्धिकृत् ॥शकुनेपंचमेगेहेसिद्धिस्तस्यसहायतः ॥ ४१ ॥ भोपृच्छकत्वमिहवाञ्छसिसोदरस्यदे शांतरेऽत्रवसनात्सततंसुखासिम् ॥ द्व्योयमाद्य खिलकार्यविधानासिद्धिंतत्ते भविष्यति सुहृत्सुत साहचर्यात् ॥ ४२ ॥

टी०-कार्यसिद्धि असिद्धिका दशम केन्द्र है शकुनक्रममें दश
स्थानगत नुस्रुत्खारिज ⁝ है उसका साक्षी सोलहवां घर प्रस्तार
फरहा ⁝ है इनके घातसे अंकीश ⁝ भया॥३९॥ फिर प्रस्
रमें दशम घरमें जमात ⁝ है इसका साक्षी इससे पंचम प्रथम
चौदहवाँ नुस्रुत्खरिज ⁝ है इनके योगसे ⁝ नु० खा० भय
अब अंकीश और नु० खा० के योगसे ⁝ फरहाभया यह ख
सौम्यहै. इससे कार्यसिद्धि होती है यह शकल शकुनक्रमके पंच
घरमें है इससे पंचमभाव संबंधी पुत्रकी सहायतासे कार्य होगा कह
॥ ४० ॥ ४१ ॥ ऐसे चारों भेद खोलके पृच्छकसे कहना कि,
पूछने हारे तू इस वक्त देशांतरवासी अपने भाईके सुखके लि
पूछता है और द्रव्यके उद्यम आदि समस्त कार्य विघानों
सिद्धि मित्र एवं पुत्रकी सहायतासे होगी ॥ ४२ ॥

अथान्यत्।

आद्यविश्वोद्भवंखण्डंप्रस्तारेस्यात्तदाध्रुवम्॥स्वा
र्थप्रश्नस्तदावाच्योनोचेत्प्रश्नः परार्थकः॥४३॥
प्रस्तारेतद्गृहेप्रश्नोनोचेत्तच्छकुनालये॥मूकप्र
श्नेद्वितीऽयोयंप्रकारः परिकीर्तितः॥ ४४॥

टीका- और प्रकार कहते हैं कि, प्रथम और तेरहवाँ ख
जोडके जो शकल हो वह प्रस्तारके किसी घरमें होतो यह प्र
निश्चय अपने अर्थ है यदि वह शकल प्रस्तारमें कहीं भी न हो
दूसरेके वास्ते प्रश्न पूछता है कहना ॥ ४३ ॥ प्रस्तारके जि
घरमें वह शकल मिले वह शकुनक्रमसे जिस घरकी हो उस घर
प्रश्न जानना यह मूकप्रश्नमें दूसरा प्रकार कहा है ॥ ४४ ॥

मूकप्रश्नेतृतीयंतु प्रकारमधुनोच्यते ॥ कृत्वा
प्रस्तारबिन्द्वैक्यंषोडशाशावशेषतः ॥ ४५ ॥

मूकप्रश्नालयंज्ञेयंविश्वाद्यैस्तनुतोऽब्धिषु ॥ अन्य
न्मतांतरंवक्ष्येमूकप्रश्नेतुरीयकम् ॥ ४६ ॥

टीका-अब मूकप्रश्नमें तीसरा प्रकार कहा जाता है कि, प्रस्तारमें जितने बिन्दुहैं सबको संख्या करके १६ से भागलेना जो शेष रहै ॥ ४५ ॥ वह १३ । १४ । १६ । और १ से ४ तक भावोंमें देखना जहाँ उतनी शकल शकुन क्रमकी मिले उसमें उसका साक्षी मिलायके जो हो वह शकुनमें जिस घरकी हो उसके संबंधी प्रश्न कहना अब चौथा प्रकार मूकप्रश्न बतानेका मतांतरसे कहते हैं ॥ ४६ ॥

तिथिविश्वनन्दचन्द्रप्रमितालयशकलभूमिभागे-
भ्यः ॥ आद्यद्वित्रितुरीयशकलस्थितवह्निभा
गेभ्यः ॥ ४७ ॥ पञ्चमरससप्तमवसुगेहस्थित
शकलसलिलभागेभ्यः ॥ वस्वर्कालयशकलानि
लभागाभ्यां मनोश्च शकलस्य ॥ ४८ ॥ जलभा
गात्षोडशगृहशकलस्यवह्निभागाच्च ॥ आदाय
शून्यरेखाः क्रमतोऽब्धिखण्डकान्कुर्यात् ॥ ४९॥
चतुर्भ्योद्वेसमुत्पाद्य द्वाभ्यामेकं च साधयेत् ॥
तत्खण्डवशतः प्रश्नंविश्वादौ पूर्ववद्वदेत् ॥५०॥

टीका-कि १५ । १३ । ९ । १ इन स्थानोंके शकलोंके भूमि भागसे तथा १ । २ । ३ । ४ शकलोंमें स्थितअग्नि भागसे ॥ ४७ ॥ एवं ५ । ६ । ७ । ८ घरोंमें स्थित शकलोंके जलभागसे ८ । १२ शकलोंके वायु भागसे तथा १४ वीं शकलकेभी जलभागसे॥४८॥ और १६ वें घरमें स्थित शकलके अग्निभागसे क्रमसे शून्य रेखा

डेके चार शकल तैयार करनी ॥ ४९ ॥ इन चार खण्डों
मिलायके दो खण्ड करने इन दोसेभी एक करनी उसके अनु
तेरहवें आदि साक्षीदेखके पूर्ववत् प्रश्न कहना ॥ ५० ॥

अन्यच्च ।

पुनरन्यंविधिंवक्ष्येमूकप्रश्नेतु पञ्चमम् ॥ नवाशा
रुद्रसूर्याणांखण्डानांवह्निभागतः ॥ ५१ ॥ पूर्व
क्रमेणैकखण्डंरचयेद्दैवचिंतकः ॥ तस्याब्दहगृहा
द्वाच्यः प्रश्नोरमलकोविदैः ॥ ५२ ॥

टीका-अन्ययुक्ति मूकप्रश्न बतलानेकी पुनः पंचम प्रकार क
हैं कि ९।१०।११।१२ वें खण्डोंके अग्नि भागसे पूर्वोक्त विधि
दैवज्ञने एक शकल तैयार करनी वह शकल अब्दह क्रमके जि
घरमें हो उस घरसंबंधि प्रश्न रमलज्ञने कहना ॥ ५१ ॥ ५२

अथातिथिगृहाच्छून्यचालनद्वाराखिलमूकशिरोमणिंमूकप्रकारमाह ।

विषमशून्यदलंनतिथौभवेद्यदिभवेत् कुहचिभ्रमदर्श
कम् ॥ निगमरेखवियद्दलमत्रतत्कुरुतदोद्घटनंखयु
गाप्तये ॥ ५३ ॥ पंचेन्दुगेहांबरयुग्ममंतरानमूकसि
द्धिर्नफलोद्गमोपिच ॥ तस्मात्तिथौ शून्ययुगंप्रसा
धयेदुद्घाटनेज्ञानविधानतत्परः ॥ ५४ ॥

टीका-अब पंद्रहवें घरसे शून्य चालन करके संपूर्ण मूकप्रश्न
का शिरोमणि प्रकार कहतेहैं कि जो पंद्रहवें घरमें विषम शू
खण्ड न होतो भ्रम दिखाताहै अर्थात् जमात शकल १५वें में हो
बद्धप्रस्तार (जायचाबंद) कहतेहैं इससे प्रश्न नहीं हो सकता
रेखाबिंदु होनेमें बिंदुचालन होता है इसवास्ते उसके उद्घा
(खोलने) के निमित्त युक्ति करो॥५३॥पंद्रहवें घरमें दोशून्य न

तो मूकप्रश्न नहीं कहा जासकता न उसका फलही मिलता तस्मात् १५ वें घरमें दो शून्योंका साधन उद्घाटन ज्ञान विधिमें तत्पर ज्योतिषी उद्घाटन करे ॥ ५४ ॥

अथोद्घाटनम् ।

आद्यविश्वेतुर्य्यशक्रेसप्तपंचदशे तथा ॥ खनृपेच मिथोहन्यात्क्रमात्कृत्वाऽब्धिखण्डकान् ॥ ५५ ॥ तेभ्यः प्रस्तारमुत्पाद्यतस्माच्छून्येप्रचालयेत् ॥ पुनस्तत्रजमातंचेत्तदाकुर्य्यादमुंविधिम् ॥ ५६ ॥ लह्यानहुम्रावयजांकीशानांतुचतुष्टयम्॥क्रमेणोद्घाटितस्याद्यैः शकलैर्योजयेत्सुधीः ॥ ५७ ॥ चत्वार्य्युत्पाद्यखण्डानितेभ्यः प्रस्तारमाचरेत् ॥ शून्यलाभोभवत्येव तस्मात्ततुप्रचालयेत् ॥ ५८॥

टीका-अब बद्धप्रस्तार (बंदजायचा) का उद्घाटन (खोलना) कहतेहैं कि प्रथम शकलमें तेरहवीं चौथीमें १४ वीं सातवीमें १५वीं दशवीमें १६ वीं शकल गुणके क्रमसे ४ खण्ड तैयार करने ॥५५॥ इन ४ से प्रस्तार बनायके तब बिन्दु चालन करना यदि फिरभी १५ वें घरमें जमात आजावै तो तब यह विधि करनी ॥ ५६ ॥ कि लह्यान, हुम्रा, बयाज, अंकीश, इन ४ को पहिले जो खोला हुआ जायचा है उसके प्रथमके ४ शकलैं क्रमसे जोडदेना ॥५७॥ ऐसे ४ शकल करके इनसे प्रस्तार बनाना इस विधिसे अवश्य १५ वें घरमें शून्य मिलैंगी तब बिन्दु चालन करना ॥ ५८ ॥

अथशून्यचालनम् ॥

गमागमाभ्यांवियतोर्गतीस्तः स्वजन्मखण्डस्थ निजाभ्रयुक्तिम् ॥ शरेन्दुगेहादिहवामदक्षेतन्वष्ट

खंडांतरगेक्रमेण ॥ ५९ ॥ आद्याद्वितीयाभ्रगता
लयाभ्यां प्रश्नोत्तरेप्रष्टरथोविचिंत्य ॥ तात्काल
साक्ष्यर्द्धबलंतथाद्यज्ञेयंद्वये साक्षिचतुष्कवीर्यम्
॥ ६० ॥ आद्यशून्यस्थितेखण्डात्प्रश्नोवाच्यो
व्दहक्रमात् ॥ प्रश्नावधिश्चतत्सिद्धिर्द्वितीयेभ्रे
समुच्यते ॥ ६१ ॥

इतिरमलनवरत्नेमूकप्रश्ननिरूपणश्चतुर्थरत्नम् ॥ ४ ॥

टीका-विन्दुचलाना कहते हैं कि पंद्रहवें घरमें जो शून्य व
आदि तत्त्वके स्थानोंमें स्थित हैं उनका उत्पत्तिस्थान देखना
किस किस घरसे ये आये हैं जहाँसे उसकी पैदायश है वहाँ
स्थिति जाननी १५ घरसे बाँयें वा दाहिने जहाँ चले पहिले घर
ऊपर आठवेंके भीतर उसकी स्थिति मिलनी चाहिये जैसे १५
घरमें वायु आदि तत्त्वकी जगह जहाँ शून्य हो उसी स्थानमें १
१४ मेंसे किसीमें वह शून्य चलीजावे वह वहाँही स्थित जान
यदि तेरहवें घरमें जावैगी तो नवें वा दशवें घरमें उसी तत्त्व
जगह शून्य जावैगी जो चौदहवें घरमें जावे तो११वें घरमें तत्त्व
शून्य जावैगी यदि ११ वें भावमें स्थित हो तो पांचमें तथा छ
शून्य जावैगी वहाँ जिसघरमें इस शून्यके स्थानमें शून्य हो उ
जगह स्थित जाननी यदि शून्य १२ वें घरमें जावे तो ७
आठवेंमें उसी तत्त्वके स्थानमें जो शून्य जावै वह उसके स्थान
स्थित जाननी यह विधि शून्य चालनकी है ऐसेही दूसरे शून्य
चलावै वह १ से ८ भीतर जिस घरमें ठहरे वही घर प्रश्न
साक्षी जानना ॥ ५९ ॥ पहिले और दूसरे बिन्दु १५ वें घ
चलायवेमें जो घर स्थितिके मिलें उन्हींसे प्रश्नका उत्तर वि

रना उसवक्त जो साक्षिखण्ड है और जो पहिला बिन्दु चालनसे पाया घर है इनके बलाबलसे ४ प्रकारके प्रश्न कहने ॥ ६० ॥ आद्य शून्य स्थित शकलसे तो प्रश्न अन्दह क्रमसे कहना और दूसरे शून्य चालनसे जो स्थिति घर पाया इससे प्रश्नकी अवधि कार्यकी मियाद कहनी सभी प्रश्नोंमें ४ काल ऐसे होते हैं कि भूत १ भविष्य २ वर्तमान ३ और आकस्मिक ४ आकस्मिक वह है जो कुछ स्वतः सिद्ध हो परंतु अचानक कुछ उसमें और मिलाहो इसका प्रयोजन है कि वह साक्षीखण्ड उन्महांत पंक्तिमें जिस पंक्तिमें जिस घरमें हो उसी घरकी पूर्व पंक्तिमें हो तो आकस्मिक यदि अपनी पंक्तिमें पिछली पंक्तिमें होतो भूतकाल जो अपने आगे हो तो वर्तमानकाल और जो अपनी पंक्तिके नीचे अपनेही घरमें हो तो भविष्यकालका फल कहना यहाँ औरभी स्मरण रखना चाहिये कि यही पंक्तिका आकस्मिककाल बतानेवाली शकल चौथी पंक्तिम जाननी अर्थात् इसके पूर्व भागमें नीचेकी पंक्तिको समझे और चौथी पंक्तिका भविष्यकाल पहिली पंक्तिसे कहना पंक्तिके आदिमें भूतकाल ८ वीं शकलसे कहना ८ वींका वर्तमान काल पहिली शकलसे कहना अर्थात् इनके जिस भागमें आगे कोई शकल न हो तहाँ सन्मुख भागकी अंतिम पंक्तिकोही आगे समझना ॥ ६१ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषायां मूकप्रश्ननिरूपणं नाम चतुर्थं रत्नम् ।

अथ पंचम भावप्रश्ननिरूपणम् ।

नरस्तनौ यो वदनेकरीन्द्रो बालार्कदीप्तिर्ज्वलना क्षिभालः ॥ कोसाविति प्राहसमुत्स्मयंती शिवै क्ष्यसूनुंसददातुवाचम् ॥ १ ॥ यद्रमादानुकूल्या

त्तिस्तं प्रश्नं निर्गमं विदुः॥यदागमात्खरुत्पात्तिः
सप्रश्नो दाखिलो मतः ॥ २ ॥ स्याद्यत्सत्त्वै
कतःश्रेयस्तंप्राहुःस्थिरसंज्ञकम् ॥ खारिजंनिर्गमं
दाखिलागमंसावितं स्थिरम् ॥ ३ ॥ पूर्वोदितप्र
श्नगृहाणिबुद्ध्वात्रीन्निर्गमाद्यानपि तत्रभेदान्॥
शुभेपिकालेऽक्षयुगंक्षिपेज्ज्ञः स्मृत्वेष्टरम्लज्ञपदा
रविन्दे॥४॥ प्रस्तारं पूर्ववत्कृत्वा सर्वं ज्ञात्वाबला
बलम्॥मरातिबादिकमपि ज्ञात्वा प्रश्नान् विचार
येत् ॥ ५ ॥ प्रश्नोत्थश्चेत्किलायोत्थोद्विधा प्रश्न
विधिःस्मृतः ॥ तत्रादौपाशकप्रश्नात्प्रश्नसिद्धि
रिहोच्यते ॥६॥ प्रश्नालयंतुमुख्यंस्यान्मुकुरंचच
तुर्दशम्॥प्राड्विवाकंपञ्चदशंसर्वत्रैतत्त्रिकंस्मरेत्

टीका-जो शरीरमें तो मनुष्य है मुखमें हाथी है बालसू
समान कांति और भालनेत्रमें अग्नि जिसके, ऐसा यह कौन
श्रीपार्वतीजी अपने पुत्र गणेशजीको देखके मुसकाती हुई क
थी. वह गणेश वाणी देवे, यह ग्रंथकर्ताने भाव प्रश्नादिमें अ
इष्ट देवको प्रणाम रूप मंगलाचरण कहा ॥ १ ॥ जिसके गमनसे प्र
पकडा जाताहै उस प्रश्नको निर्गम और जिसके आग
शून्यकी उत्पात्ति होतीहै उस प्रश्नको दाखिल कहते हैं ॥ २ ॥
एकही तत्त्वसे शुभ हो जाता है उसको स्थिर संज्ञक कहते
खारिज, निर्गम, दाखिल, आगमन, साबित स्थिर. ये प्रश्नमें शु
भेदहैं इनके खुलासे पूर्वलिखित चक्रोंमें हैं॥ ३ ॥पूर्वोक्त प्रकारसे प्र
लय और उनके निर्गम आदि भेदोंको समझके पंडितने अच्छे

यमें अपने इष्ट तथा रमलज्ञ गुरुके चरणोंका स्मरण करके पासोंकी जोडी फेंकनी ॥ ४ ॥ उससे पूर्वोक्त विधिसे प्रस्तार बनायके संपूर्ण बलाबल जानके मरातिब आदि भेदोंकोभी जानके प्रश्न विचारने ॥ ५ ॥ एक प्रश्नसे दूसरा इन्किलाबसे प्रश्नविधि है इसमें प्रथमपाशक प्रस्तारसे प्रश्नविधि कही जाती है ॥ ६ ॥ मुख्य प्रश्नालय पहिला है तब १४ वां शुकुर और १५ वां मंत्री है सर्वत्र इन तीनोंका मुख्य स्मरण रखना ॥ ७ ॥

अथ निर्गमागमप्रश्नसिद्धिमाह ॥

प्रश्नो यदि स्यादिह निर्गमाख्यास्त्रिष्वेषु गेहेषु च खारिजाद्यैः ॥ स्यात्कार्यसिद्धिश्च शुभैश्च सम्यक् श्रमेण पापैश्च मरातिबाद्यैः ॥ ८ ॥ दाखिलैस्तेष्वसिद्धिः स्यान्नाश्रमोऽपि शुभैश्चतैः ॥ स्यादल्पश्रमाद्वापि कार्यसिद्धिर्नचाशुभैः ॥ ९ ॥ साबितैः कार्यसिद्ध्याशाकार्य्यं न स्यात्कदापि च ॥ मुन्कलीबैश्चिरात्सिद्धिः शुभैः पापैस्तनीयसी ॥ १० ॥ इत्थं वदेन्निर्गमभेदपृच्छां विज्ञाय संभाव्यबलं विपश्चित् ॥ स्यादागमप्रश्नइहात्रकंचेत्सदाखिलं सिद्धिकृदश्रमेण ॥ ११ ॥ चिरादल्पश्रमतोऽशुभं स्यान्न खारिजे सिद्धिरथाश्रमोऽपि ॥ शुभे च पापे श्रमतोऽप्य सिद्धिः सत्साबितं सिद्धिकरांविलंबात् ॥ १२ ॥ पापेन सिद्धिः किलसाबितेस्यान्मध्ये च मध्यागदितापुराणैः ॥ सन्मुन्कलीबेपि न सिद्धिरुक्ताशुभंतुपापे श्रमतोऽथ सिद्धिः ॥ १३ ॥

टीका-अब निर्गमागम प्रश्न सिद्धि कहते हैं कि, यदि निर्ग
प्रश्न हो तो जो तीनों स्थानोंमें खारिजखंड हो तथा शुभशकल
तौभी कार्यसिद्धि अच्छी होगी और मरातिब आदि शकल हों अथव
पाप शकल हों तो बडे श्रमसे कार्यसिद्धि होगी॥८॥उन तीनों स्था
नोंमें दाखिल शकल हों तो कार्यसिद्धि न होगी यदि वे दाखिल शक
शुभभी हों तो बहुतश्रम करनेसे विकल्पसे कार्यसिद्धि होगी कहन
और वे शकल अशुभहों तो बडे श्रमसेभी कार्यसिद्धि न होगी
९॥ जो वे शकल साबित हों तो कार्यसिद्धिकी आशा मात्र हो
पूर्ण सिद्धि कदापि न होगी, यदि मुन्कलीब होंतो बहुत दिनोंमें औ
कोई शुभ कोई पाप होंतो थोडीसी कार्य सिद्धिहोगी ॥१०॥ इ
प्रकार उन तीनों शकलोंको निर्गमादि जानके उनका बल विचार
विद्वानने प्रश्न कहना जो आगम प्रश्न ऐसे तीनों स्थानोंमें शुभदा
खिल होतो बिनाही श्रमसे कार्य सिद्धि करताहै॥ ११॥ अशुभ खण
इनमें होनेसे बडे श्रमसे तथा बहुत विलंबसे कार्यसिद्धि होती है
खारिजसे श्रम करनेपरभी कार्यसिद्धि नहीं होती. शुभपा
मिश्रित होंतो श्रम करकेभी असिद्धि होती है जो वे साबित हों
विलंबसे सिद्धि होती है ॥१२॥ जो साबित शकल हों तो पा
खण्ड होनेमें भी सिद्धि होतीहै और मध्यममें मध्यम फल प्राची
रमलाचार्योंने कहा है यदि वे मुन्कलीब होंतो कार्यसिद्धि न
कहीहै शुभ हुएमें पाप (निर्बल) होतो सिद्धि होतीहै यह म
न्तर कहाहै बुद्धिमानने (शुभपाप) बलाबलके तारतम्य देख
युक्तिसे फल कहना शुभपापता बलाबल विचार मुख्यहै जिध
बलअधिक देखे उधरका फल मुख्य कहे इसमें इतना स्मरण रख
कि,खारिज शकलनिर्गमदाखिलआगमऔरसाबितास्थिररूपहै॥ १

अथ स्थिरप्रश्नः ।

स्थिरप्रश्ने यदास्यातांशुभौ साबितदाखिलौ ॥ तदा कार्यंस्थिरंसौख्यात्सिद्ध्येदानेष्टयोः श्रमात् ॥ १४॥ खारिजंमुन्कलीवंचास्थिरकार्यस्य नाशकृत् ॥ एवं प्रश्नचयंसर्वं निगदेद्रम्लवित्तमः ॥ १५ ॥

टीका-अब स्थिरप्रश्न कहतेहैं कि स्थिरप्रश्नमें यदि शुभशकल साबित दाखिल हों तो स्थिरकार्य सिद्धिहोगा यदि वही साबित दाखिल अशुभ होतो कष्टसे कार्यसिद्धि होगी ॥ १४ ॥ खारिज तथा मुन्कलीव स्थिर कार्यके नाशकहैं इस प्रकार रमल जाननेवालोंमें श्रेष्ठ रम्मालने प्रश्नसमूह कहना ॥ १५ ॥

अथ संशयोनियामकम् ।

द्वयोस्त्रयाणां चविरोधसंभवे फलावरोधिन्यपि कार्य खण्डके ॥ प्रश्नार्धनिघ्ने द्रुतदुत्थिते च घातोद्भवाद त्रवदेत्पुरावत् ॥१६॥ प्रश्नेऽपितच्चेदिहतद्बलेन स्था नस्वभावादपिखारिजादेः ॥ प्रष्टुर्वदेन्निर्गमनादिभेद। च्छुभाशुभः सौख्यपरिश्रमाभ्याम् ॥१७॥ इत्थंवदे न्निगमनादिसर्व प्रश्नान्पुरःप्रष्टुरसंदिहानः ॥ विश्व स्तचेतारमलेगुरौस्वचेतोविशुद्धिर्यदितत्रसिद्धिः॥१८॥

टीका-प्रश्न जाननेमें तथा फलमें यदि दो प्रकारके शकल हों जिनमें आपका विरोधहो अर्थात् एकसे स्थिर दूसरेसे चर यद्वा एकसे खारिज दूसरेसे खारिज तथा एक शुभ दूसरा अशुभकार्य शकलहोतो प्रश्नखंडसे चौदहवां खंड गुणके जो खंड उत्पन्नहो उससे पूर्वोक्त प्रकार करके प्रश्न कहना ॥ १६ ॥ प्रश्नमेंभी यह देखलेना कि जो शकल उत्पन्न हुईहै उसका बल कैसाहै स्थानस्वभाव और

खारिज आदि कैसाहै इतना निश्चय करके पूछनेवालेके निगंम भेद इसका शुभाशुभ परिणाम सुखसे वा परिश्रमसे कहना ॥ १ इस प्रकार निर्गमनादि सब प्रश्न विचारके पूछनेवालेके आगे इसमें रम्मालकी चित्तवृत्ति स्थिर रमलशास्त्र एवं गुरुमें विश्‍ और चित्तकी शुद्धिहो तब प्रश्नसिद्धि होतीहै ॥ १८ ॥

इति निर्गमादिप्रकारः ॥

अथेन्किलावप्रयोजनम् ।

इदानीमिन्किलावोत्थात्प्रश्नाच्चापि फलं ब्रुवे ॥
तिथौतत्र जमातंस्यात्तन्मूलाभ्यांफलंवदेत् ॥१९॥
खारिजेविश्वशकारव्येशुभेनिगमसिद्धिदे ॥ दा-
खिलेत्वागमस्यैवशुभेस्यातांतुसिद्धिदे ॥ २० ॥
सावितेचशुभेतद्वत्स्थिरकार्यस्यसिद्धिदे ॥ मध्य-
मेसबलेसिद्धिरल्पासिद्धिश्चनिर्बले ॥२१॥ विपर्य
यनसिद्धिःस्याच्छुभाद्यत्रापि पूर्ववत् ॥ संविचा
र्यवदेत्सर्वंप्रश्नखण्डोपिपूर्ववत् ॥ २२ ॥ मुष्टि
मूकशरत्पत्राऽत्राधिप्रश्नहराभिधाः ॥ इन्किलावं
विनासिद्धास्तस्मादेषु न तद्भवेत् ॥ २३ ॥ एवं
सामान्यतः प्रोक्तः सर्वगेहेषुनिर्णयः॥यद्यद्गेहेवि
शेषं च तत्तद्गेहेऽधुनाब्रुवे ॥ २४ ॥

टीका-अब इन्किलावका प्रयोजन कहतेहैं कि इस समय इन्कि लावसे उत्पन्न प्रश्नसे कहनेमें यदि १५ वें घरमें जमात होतो उसके मूल १३। १४ से फल कहना ॥ १९ ॥ सो ऐसाहै कि १३। १४ से शकल खारिज और शुभ होंतो निर्गम प्रश्नकी सिद्धि देते हैं यदि वेदाखिल और शुभ होंतो आगम प्रश्नकी सिद्धि

होतीहै ॥ २० ॥ यदि सावित और शुभ हों तो स्थिरकार्यकी सिद्धि देताहै बलवान् और मध्यममें कार्यकी सिद्धि निर्बलमें कार्यकी असिद्धि होतीहै ॥ २१ ॥ उलटे होनेमें कार्य सिद्धि नहीं होती जो शुभहो तौभी ऐसे प्रश्नखण्ड पूर्वोक्त विधिसे विचारके फल कहना ॥ २२ ॥ मुष्टिप्रश्न मूकप्रश्न वर्षपत्री बनानेका प्रश्न कार्यकी अवधिका प्रश्न और चोरके नाम बतलानेका प्रश्न ये पांच प्रश्न विनाही इन्किलाव किये साधारण प्रथम जा यचेसे हो जाते हैं इनमें इन्किलाव नहीं होता ॥२३ ॥ सर्व प्रकार सभी घरोंमें निर्णय कहाहै अब जिन २ घरोंमें विशेषता विचार की है उनको कहताहूं ॥ २४ ॥

अथाद्यगेहे विशेषमाह ।

आद्यगेहे विशेषंयत्तत्फलप्रश्नगंब्रुवे॥ शिष्टमायुः कियन्मेस्यादितिप्रश्नेकृतेसति ॥ २५ ॥ प्रस्तारेप्रथमंखण्डंतेनहन्याच्चतुर्थकम् ॥ तदुत्थखण्ड तोवाच्यंफलंचायुष्यकंबुधैः ॥ २६ ॥ तद्वाखिलं सावितंचमुन्कलीवंचखारिजम् ॥ पूर्णार्द्धपादस्व ल्पायुःशेषंसौम्येशुभार्द्धयुक् ॥ २७ ॥ तस्मिन् पापेविपर्यस्तंतत्संख्यापिनिगद्यते॥ अवध्यङ्कश्च सर्वेषु प्रश्नेष्वेवप्रकीर्तितः ॥ २८ ॥

टीका–प्रथम घरमें विशेष विचार जो है उसका फल कहताहूं कि जो कोई पूछे कि मेरी आयु अब कितनी बाकी है ॥ २५ ॥ तो प्रस्तारके प्रथम शकलसे चौथा खण्ड गुनना जो खंड उत्पन्न हो उससे पंडितोंने आयुका फल कहना ॥ २६ ॥ सो ऐसेहै कि जो वह शकल दाखिल होतो पूर्ण आयु सावित होतो आधा मुन्क-

ढीव हो तो चौथाई.खारिज होतो और भी थोडा आयु शेष कह
इसमें भी यह विचारहै कि वह खण्ड सौम्य होतो शेष आयु श
और समृद्धि युक्त होकर जायगा ॥ २७ ॥ वह खण्ड पाप हो
दुःख दारिद्रतासे आयुके शेप दिन कटेंगे अब उसकी संख्या जा
नेके लिये अवधिके अंक चक्राकार कहे जाते हैं जो सभी प्रका
प्रश्नोंमें काम आनेवाले हैं ॥ २८ ॥

अथ तदर्थं चक्रोद्धारः ।

अथोर्ध्वतिर्यग्धृतिरेखिकंस्याच्चक्रंतवाह्यक्षिगृहंत
दूर्ध्वम् ॥ तिर्यग्लिखेद्द्विजदूहपंक्तिमेकादारभ्य
दक्ष्यंतमिताद्द्वयोश्च ॥ २९ ॥ सद्मांकसद्मस्थयु
तिंत्वधस्तादेवंहिसर्वेषुगृहेषुकार्य्या ॥ प्रस्तारगा
दयोक्तदलाससंख्यंकोष्ठांकतुल्यायुरिहप्रदिष्टम्
॥ ३० ॥ तत्संख्यदाखिलेवर्षमासास्तेसावित
तथा ॥ मुन्कलीवेद्दिघस्रास्तेखारिजेतदहर्गणः
॥ ३१ ॥ उत्पन्नार्धनप्रस्तारयदातद्द्विज्दहाल
यात्॥ तिर्यगूर्ध्वगतात्कोष्ठज्ञेयमंकंसदाबुधैः ॥३२

इतिप्रथमेविशेषः ।

टीका--समयके अवधि जाननेका चक्र है कि ऊपर और
१६ । १६ । रेखाका चक्र लिखके ऊपरके घरमें सीधे तिर
पंक्तिके खण्ड एकसे सोलहतक लिखे दूसरे किनारे १ से १६
अंकलिखे दूसरे आदि कोष्ठमें १ । २ । ३ । आदिक्रम पूर्
लिखे ॥ २९ ॥ घरकी संख्याका अंक और घरमें स्थित अं
जोडके उसके नीचे देखना जैसे प्रस्तारमें १ । ४ घरको जरब
लह्यान शकल हुई यह शकल प्रस्तारमें छठा घर है तो अंक च

लह्यानके नीचे ६ के सामनेका १७ अंक पाया ऐसीही विधि सभी घरोंमें करनी प्रस्तारमें पूर्वोक्त खण्डसे पाई गई संख्याके कोष्ठके अंक तुल्य आयु यहाँ कही है ॥ ३० ॥ वह शकलदाखिल होतो उतने वर्ष साबित होतो महीने मुन्कलीब होतो सप्ताह (हफ्ता) और खारिज होतो दिन जानने ॥ ३१ ॥ यदि १ । ४ । घरके मेलसे उत्पन्न शकल प्रस्तारमें न होतो बिजदह क्रमसे ऊपर तथा सीधेकोष्ठसे पंडितोंने अंकलेना यहाँ भाषाकारकी युक्ति है कि जब वह शकल प्रस्तार नहीं है तो उसका स्वामी कौनग्रह है उसकी दूसरी शकल कौन है उससे कामलेना जैसे यहाँ लह्यानका स्वामी बृहस्पति है और नुस्रुतदाखिलका भी बृहस्पति है तो इसी नु० दा० से कामलेना इसमें औरभी युक्ति है ॥ ३२ ॥

विजदहांक चक्रम् ।

क्र.																
१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
२	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
४	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
५	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
६	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
७	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
९	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
१०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
११	५६	५७	५८	६९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
१२	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२
१३	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४
१४	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७
१५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	१३२	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०	१२१
१६	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६

अथ द्वितीये विशेषमाह ।

द्वयोः पुरुषयोर्मध्येकोभवेद्बहुवित्तवान् ॥ एवं
प्रश्नेपुरोद्देशोमुख्यः सम्बन्धतोपरः॥ ३३॥मुख्य
स्यप्रथमंगेहंतसीरादितरस्यच॥ तद्द्वितीये धने
स्यातामुभयोर्हाखिलं शुभम् ॥ ३४ ॥ सावितं
वाधनंतस्यबहुस्यात्तद्द्वयेसमम् ॥ शुभेचखारि
जेकिंचिदशुभेखारिजेनहि॥३५॥ शुभाशुभेमुन्क
लीवे त्वल्पं नास्तीति च क्रमात् ॥ संख्या प्रश्ने
बिजूदहस्य स्वगृहाधस्य पूर्ववत्॥३६॥कर्णमार्गे
णाङ्कसंघंज्ञात्वा संख्यां वदेद्बुधः ॥ वराटकात्स्वर्ण
मुद्रापर्यंतंस्वमनीषया ॥ ३७ ॥ एकादिकोटि
पर्यंतां संख्यां पात्रानुसारतः ॥ द्विग्याद्येपि च
तद्योगात्संख्याभावेन तद्भवेत् ॥ ३८ ॥

टीका–अब दूसरे घरमें विशेष कहतेहैं कि दो पुरषोंमेंसे कौन
अधिक धनवान् है ऐसा प्रश्न होनेमें एकमुख्य उद्देश्य दूसरा उ
संबंधसे नियत करलेना ॥३३॥ तब प्रस्तारमें देखना कि मुख्य
शका प्रथम घर दूसरे संबंधीका दूसरा घर जानना उन घरोंके
घर उनके क्रमशः धनस्थान जानना दोनोंके धनभाव दाखिल
शुभहों ॥ ३४ ॥ अथवा सावित हों तो दोनोंको धन बहुतहै
समान है शुभ और खारिज हों तो थोडा धन है और अशुभ
खारिज हों तो धन नहीं है ॥ ३५ ॥ शुभमें बहुत अशुभमें अल्प
मुन्कलीवमें धन नहीं है ऐसा क्रमसे जानना । जिसकी धन
जैसी हो उसके पास वैसा धन बतलाना और संख्या पूँछी

तो विजदह क्रमके स्वगृही खंडसे पूर्ववत् अंकलेना ॥ ३६ ॥ जैसे वह धनवाली शकल विजदह क्रममें जिस घरकी है प्रस्तारमेंभी उतनेही संख्याके घरमें हो तो अंक चक्रमें कर्णमार्गसे अंक जानना तब संख्या कहनी इसमें पंडितने कौडीसे लेकर मोहरतक अपनी बुधिके बलसे कहना ॥ ३७ ॥ एकसे लेकर करोडपर्यंत संख्या

कर्णे म॰ग देखनेका क्रम ऐसा है विजदहमें।															
१	२	२	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
÷	≐	⋮	≡	⋮	÷	≐	≡	≐	≐	⋮	≡	≡	⋮	÷	≡
१	३	६	१०	१८	२१	२८	३६	४५	५५	६१	७८	९१	१२५	१२०	१३६

जैसा यह मनुष्य पात्रहै वैसा स्वबुद्धिसे कहना जो दो तीन संख्या मिल जावैं तो उनको जोडके कहना संख्याका अभाव होतो धन नहीं है कहना ॥ ३८ ॥

अथ तृतीये विशेषमाह।

तार्तीयके स्वप्नजातं फलं वक्ष्ये विशेषतः॥शाकुन प्राश्निकेऽप्यर्द्धंमिथोनिघ्नेतदुद्भवे ॥ ३९ ॥ शुभे शुभमथोपापेत्वशुभंचशुभेसमम् ॥ फलंतत्खंड वशतोभेदंस्वप्नेवदेद्बुधः ॥ ४० ॥

टीका--अब तृतीय भावमें विशेषहै कि इसमें विशेष करके स्वप्न जात फल कहते हैं शकुन क्रममें तथा प्रस्तारमें तीसरे घरोंके शकलोंको मिलायके ॥ ३९ ॥ जो शकल हो वह शुभ है स्वप्न- का शुभ पाप है तो अशुभ और अशुभशुभ होतो समफल उस खण्डके वशसे पंडित स्वप्नका कहै विशेष विचार उस खण्डके तत्त्वादिकोंके अनुसार विचारके कहै ॥ ४० ॥

अथ चतुर्थेविशेषमाह ।

काचित्समागत्य ब्रवीतिनारीशं मेधवादद्यचैवाद्वि
यात् ॥ पृच्छत्सुमुख्यास्तनुसद्मचाद्य भर्तुः सु
खाद्वितयस्य चिंत्यम् ॥ ४१ ॥ तनोस्तुरीयात्प्रथ
नसौम्ये तनोर्दशाख्याद्वितयेनचार्द्धम् ॥ वाच्यंशु
चेदुभयत्रसौम्यंबलाच्चपुंसस्तुखतुर्ययोवदेत्॥ ४२

टीका--चतुर्थ भावमें विशेष कहते हैं कि कोई स्त्री आ
पूछे मेरी भलाई पहिले पतिसे होगी अथवा दूसरे भर्त्ता क
तो पूछनेवालीका घर प्रस्तारमें पहिला जानना, पहिले भर्त
चतुर्थ और दूसरे भर्त्ताका दशम भाव जानना ॥४१॥ तब प
घरमें चतुर्थ जोडना जो शकलहो उसके शुभाशुभ बला
अनुसार पहिले भर्तासे शुभाशुभ कहना और दशमसे प्रथम घ
मेल करके जो शकल बने उसके शुभाशुभके तुल्य दूसरे भ
शुभाशुभ और दोनहुमें तुल्यता होता दोनहू भर्त्ताओंसे तु
सुखासुख कहना ॥ ४२ ॥

अथान्यदपितुर्येचप्रश्नवक्ष्येविशेषतः ॥ अस्मि
न्भूमितले द्रव्यमस्तिनास्तीतिचिंतयेत् ॥४३ ॥
तुरीयरिपुखण्डाभ्यां जातंचेदुकला भवेत् ॥
दाखिलं वातदा द्रव्यमुन्कली वेस्तिचाल्पकम्॥
॥४४॥ अन्यथाद्रविणाभावइति पूर्वसमादधेत्॥
ततः संभावितेस्थानेचतुरस्रेद्विरेखिते ॥ ४५॥
याम्यपश्चिमयोर्मध्यात्साध्येपूर्वोत्तरांतिके ॥
चतुर्भागान्प्रकल्प्यैवंपूर्वास्यसयुगांतदिक्॥४६॥

वामेचैन्द्रीतथाधस्तात्तयोः पश्चिमकोत्तरे ॥ तत्र
क्षिप्त्वाक्षियुग्मंचप्रस्तारंतनुयात्सुधीः ॥ ४७ ॥

टीका–अब और चौथे घरमें विशेष प्रश्न कहताहूं कि,इसभूमिके नीचे धनहै वा नहीं ऐसा विचार करता हुआ ॥४३॥ पाशा डालके प्रस्तार बनावै तब चौथे और छठे खण्डसे एक शकल पैदा करै जो वह उकला शकल अथवा दाखिल शकल होतो उस जगे धन है जो मुन्कलीव शकल हो तो थोडा धन है ॥ ४४ ॥ यदि इनमेंसे कोई भी न होतो तहाँ धन नहीं है ऐसा पहिले समझ लेना तब संभावित स्थानमें चतुरस्र दो रेखासे □ ऐसा करना ॥ ४५॥ इसकेभी बीचसे दक्षिण पश्चिम और पूर्वोत्तर ४ भाग ⊞ ऐसे करने यहाँ पूर्वके सन्मुख वाम भागमें पूर्व दिशा और दाहिने ओर दक्षिणदिशा जाननी पूर्वके नीचे उत्तर दक्षिणके नीचे पश्चिम जाननी अब फिर पाशा डालके प्रस्तार बुद्धिमान्न करना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

तुरीयालयखण्डस्यदिशायांद्रविणस्थितिः ॥ एवं
पुनः पुनः कुर्याद्यावद्धस्तोन्मितं स्थलम् ॥ ४८॥
ततोऽब्दहस्थितानङ्कान् रेखाद्विगुणसंयुतान् ॥
तुरीयार्धस्यसंयोज्य तत्रागाधंविचिंतयेत्॥४९॥
अङ्गुल्याः करपर्यंतकल्पनांस्वमनीषया ॥ एवं
भूक्षिप्तवित्तार्थप्रकारः कथितो मया ॥ ५० ॥

टीका–उस प्रस्तारमें चौथे घरके शकलकी जो दिशा है उस दिशामें उक्त चतुरस्रके भूमिगतद्रव्यकी स्थिति जाननी ऐसे ही वार-वार पाशा डालके प्रस्तार बनावै और चौथे घरमें जो शकल हो उसकी दिशा जानता जाय अर्थात् एक चतुरस्र जो प्रथम प्रस्तारसे

ज्ञातभया उसके भी चतुरस्र करे फिर प्रस्तार बनावै जवतक केवल १ हाथ भूमि निश्चित होती है ॥ ४८ ॥ तब अब्दहस्थित अंकों मेंसे रेखा द्विगुण करके उसीमें जोडके चौथे खण्डके योगसे गहरा यद्वा यद्वा दीवार आदिके ऊँचाईमें गडाधन समझे अब्दद क्रममें जितने घरकी वह शकल है उसमें रेखा द्विगुण करनी स्पष्टताके लिये चक्राकारमें दर्शाया है ॥ ४९ ॥ एक अंगुलसे लेकर १ हाथ पर्यंत तो कल्पना अपने मनसे करनी इस प्रकार भूमिगत द्रव्यके निकालनेमें यह प्रकार मैंने कहा है ॥ ५० ॥

चतुर्थस्थानकी शकलके नीचेकी संख्या कही जाती है ।

· — — —	— · — ·	· — · —	— — — —	· · — ·	· — — ·	— — — ·	— — —	— — · —	· · — —	— — · ·	· · —	· — · ·	— · · ·	— · · —	· · · ·
२९	२०	२५	३०	१९	२१	२२	२८	२६	२७	१८	२३	१७	१६	२४	१५

अथपंचमेविशेषः ।

इदानींपञ्चमेगेहेप्रश्नंवक्ष्येविशेषतः ॥ मेभविष्य
तिसंतानमथवानभविष्यति ॥ ५१ ॥ इतिप्रश्ने
चप्रथमपञ्चमौरससप्तमौ ॥ हत्वाखण्डद्वयं
कार्यंताभ्यामेकन्तदादलम् ॥५२॥यत्तत्सन्तान
संज्ञंहितत्स्याच्चेच्छुभदाखिलम् ॥ तदानुसंतति
र्भाव्याह्यशुभेसंततेर्मृतिः ॥ ५३ ॥ सांवितेमु
न्कलीवेचशुभेस्याच्चिरकालतः ॥ अशुभेमुन्क
लीवेहिगर्भपातोनसंशयः ॥ ५४ ॥ अन्यथासं
ततिर्नस्यादेवंलग्नरसोद्भवात् ॥ सुविमृश्यवदे
त्प्रश्नं वितथं नहि जायते ॥ ५५ ॥

टीका-अब पञ्चम घरके विशेष प्रश्न कहताहूँ कि, जब कोई पूछे कि, मेरे सन्तान होवैगी वा नहीं॥५१॥इस प्रश्नमें पहिला पांचवां

और छठा सातवाँ खंड परस्पर गुणके जो शकलहों उन्हेंभी आपसमें गुणके एक शकल बनाय लेवै॥५२॥वह जो संतान संज्ञक शकल भयीहै वह यदि शुभ और दाखिल होतो संतान होनेवाली है जो वह अशुभ होतो सन्तान होके मरजायगी ॥५३॥ जो साबित मुन्कलीव शुभ होंतो सन्तान बहुत दिनोंमें होगी और अशुभ मुन्कलीव होतो निस्संदेह गर्भपतन हो जावैगा ॥ ५४ ॥ इनसे अन्य शकल होंतो संतान नहीं होगी ऐसा लग्न पंचम छठे सप्तमसे भलेप्रकार विचारके प्रश्न कहना वह झूठा नहीं होता ॥ ५५ ॥

गर्भभ्रांतौचसन्तानसंख्यायांतनुशैलजे ॥दाखिलेसाबितेवापिजातेगर्भोस्तिनिश्चितम् ॥ ५६ ॥
खारिजे मुन्कलीवे च तस्मिन् गर्भो न विद्यते॥
षष्ठाद्योद्भूतखण्डाद्वाफलमेतद्विचारयेत ॥ ५७ ॥

टीका-गर्भ है वा नहीं ऐसे सन्देहमें सन्तानकी संख्यामें भी पहिले तथा सप्तम खंडसे एक खंड बनायके देखे वह दाखिल वा साबित होतो निश्चय गर्भहै ५६।खारिज वा मुन्कलीव होतो गर्भ नहीं है अथवा छठे और प्रथम घरके मेलसे यह फल विचारना ॥५७॥

अथ संतातिसंख्यामाह ।

तस्मिन्नेवरवेःखण्डेवेदसंख्याचसन्ततिः॥ षट्शौक्रेद्वेबुधेचान्द्रेपंचसौरेतथैकिका ॥ ५८ ॥ गौर्वेतिस्रःकुजेवेदाश्च्युतिराहवकेतवे ॥ एवं विचाय मतिमान् संख्यां सांतानिकीं वदेत् ॥ ५९ ॥

टीका-अब सन्तान संख्या कहते हैं कि वही सन्तान प्रश्नमें पूर्वोक्त शकल जो १।७ स्थानसे बनी है सूर्यकी होतो ४ सन्तान एवं शुक्रकी होतो ६ बुधकी होतो २ चन्द्रमाकी होतो ५ शनिकी

होतो १ बृहस्पतिकी होतो ३ मंगलकी होतो ४ और राहु केतुकी होतो गर्भहानि होगी ऐसा बुद्धिमानने विचारके सन्तानोंकी संख्या कहनी ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

अथ गर्भसंभवेकिंभविष्यतीतिप्रश्ने ।

संभवेगर्भसन्तत्योःसप्तमाद्यभवंदलम् ॥ पञ्चम
स्थेनसंगुण्यतत्रोत्पन्नेक्रमाद्वदेत् ॥६०॥ पुंखण्डे
पुत्रजननं स्त्रीखण्डे कन्यकाजनिः ॥ क्लीबेऽपि
कन्यकाजन्मक्लीबजन्मोच्यतेधुना ॥६१॥ सशरे
पूर्वजेखण्डेक्लीबेक्लीबजनिप्रदे ॥ पार्थिवेपुनरुक्ते
च तदा जातो नपुंसकः ॥ ६२ ॥

टीका–गर्भमें कन्या पुत्र क्या होगा ऐसे प्रश्नमें जब पूर्वोक्त प्रकारसे गर्भसंतति निश्चय होजाय तब १।७ से उत्पन्न शकलको पंचमस्थ शकलसे गुणके जो शकल उत्पन्न हो उस करिके क्रमसे कहना ॥ ६० ॥ कि वह खण्ड पुरुष है तो पुत्र जन्म स्त्रीसंज्ञक है तो स्त्रीजन्म कहना नपुंसक हो तौभी कन्या जन्म कहना और नपुंसक जन्मभी कहाजाता है कि ॥ ६१॥ पूर्वोक्त १।७ से तथा १।६ से उत्पन्न खण्ड और पंचम घरकी शकल तीनों नपुंसक हों और पृथ्वी तत्वके घरमें पुनरुक्त हो तो अवश्य नपुंसक उत्पन्न होगा 'पुनरुक्त' जो खण्ड कार्यकारी प्रस्तारमें है वही किसी दूसरे घरमें भी हो उसे कहते हैं ॥ ६२ ॥

अथान्यत्कारणंवक्ष्येसंख्यायांयवनादितम् ॥
पंचमस्थस्यखडयस्ययत्संख्यापुनरागतिः ।६३
तत्संख्यासंततिस्तत्रवह्निवाय्वोः सुतोद्भवः ॥

आप्ये कन्यागर्भपातः पार्थिवे चेद्बलान्वितम् ॥६४॥शुभंयोषिज्जनिंभूमावेवंज्ञात्वावदेद्बुधः ॥ प्रकारांतरम्-नचेत्तत्पुनरुक्तंस्यात्तदातस्याब्दहालयात् ॥ ६५ ॥ यावत्संख्याशरांतास्यात् सन्ततिस्तावती भवेत् ॥ पुंस्त्रीभेदः पुरोक्तः स्यादितिरम्लज्ञभाषितम्॥ ६६॥

टीका-अत्र संख्या बतानेमें यवनोक्त और कारण कहताहूं कि पंचम गृहस्थित खण्डकी जितने स्थानमें पुनरुक्तिहो अर्थात् जितने घरमें प्रस्तारमें वही शकल आवै उतनी संख्या संतान कहनी जैसे १ में होतो १ संतान १० वेंमें होतो १० संतान. इसमें यह विशेष है कि वह खण्ड अग्नि वायुतत्वकी होतो पुत्रहोगा, जलतत्वकी होतो कन्या, पृथ्वी तत्वकी होतो गर्भपात और पृथ्वीतत्व बलवान् शुभ होतो कन्या होगी, ऐसे पृथ्वीतत्वको विचारके पंडितने कहना इसमें प्रकारांतरभी है कि यदि वह बालक प्रस्तारमें पुनरुक्त न होतो वह अब्दहालयमें जिस घरमें हो वह अब्दहके प्रस्तारकी पांचवीं शकलसे जितनी संख्यापर हो उसके उतनीहीं संतान होंगी. पुरुष और स्त्रीका भेद पहिलेकाही कहा जानना यह रमलज्ञोंका कहा है ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

तत्रैव कालमाह ।

स्त्रुवीर्येदिवसेनक्तंबलेरात्रौचसंध्ययोः ॥ सबले पंचमेखण्डेतज्जानीनिंश्चितंवदेत् ॥६७॥ तत्रापिन वमार्द्धस्यतत्त्रिकोणस्यवातनौ ॥ आयुर्ज्ञानेतु-स्वल्पदीर्घायुषोःप्रश्नेसंतानस्यास्तपंचमौ॥६८॥

गुण्यौतज्जानितेसौम्येपुनरुक्तेशुभे गृहे॥दीर्घजीवी तथामध्येमध्यायुरशुभेऽल्पकम् ॥ ६९ ॥

टीका—वह शकल दिवाबली होतो दिनमें रात्रिबली होतो रात्रिमें और संध्याबली होतो संध्यामें जन्म पंचम खण्डसे निश्चय कहना ऐसेही शकल बलसे सभी प्रश्नोंमें दिनरात्री कहनी ॥६७॥इसमें और भी विचार है कि प्रस्तारमें नवम खण्डकी जो राशिहै वह राशि जन्मलग्न होगा। अब संतानका आयुर्ज्ञान कहतेहैं कि संतानके अल्पायु दीर्घायु प्रश्नमें सातवीं पांचवीं शकल गुणके जो शकल हो वह शुभ हो तथा उस प्रस्तारमें पुनरुक्तभी होतो दीर्घायु होगा वह शकल मध्यबली होतो मध्यमायु और हीनबली अशुभ होतो अल्पायु होगा ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

अथ धनाढ्यानिर्द्धनाइतिप्रश्ने ।

किंवादारिद्रात्वथवाधनाढ्यामेसंततिः स्यादिति पृच्छतेतु ॥ पंचाष्टयोगोस्यशरेन्दुयुक्त्याजाते शुभेभूरिधनांवदेत्ताम् ॥ ७० ॥ तस्मिन्समेमध्य धनाऽशुभेस्यादत्यल्पवित्ता पुनरुक्तियोगात् ॥ सुखेन सौम्ये ह्यशुभे च कष्टात्तज्जीवनं पूर्व मुनीश्वरोक्तम् ॥ ७१ ॥

टीका—वह संतति दरिद्री वा धनाढ्य कैसी होगी ? ऐसे प्रश्नमें पंचमाष्टम खण्डोंको गुणके जो शकल हो उससे १५ वीं शकलको गुणके एक खण्ड उत्पन्न करना वह शुभ हो संतान बहुत धनवान् होगी ॥ ७० ॥ सम हो तो मध्यम धन और अशुभ हो तो थोडा वित्तवाली होगी इसमेंभी वह शकलप्रस्तारमें पुनरुक्त हो तो

धन सुखसे आवेगा सौम्य होनेमेंभी सुखसे और अशुभ हो तो कष्टसे जीवन होगा यह पूर्व मुनीश्वरोंने कहा है ॥ ७१ ॥

स्याद्रोगिणोगेहमथाद्यमुक्तं षष्ठंरुजस्तुर्यमथौषधस्य ॥ वैद्यस्यचाकाशमरोगितायारौद्रंतथा दीर्घरुजस्त्विनाख्यम् ॥७२॥ द्वितीयमासामित मौषधस्यकुत्रापितन्वादिगृहेषुसौम्ये॥ तत्तच्छुभं वाच्यमतोन्यथात्वेस्यादन्यथावीर्ययुतेविशेषात्७३

टीका-अब छठे भावमें विशेष विचार कहते हैं कि, प्रस्तारमें प्रथम घर रोगीका कहाहै ऐसेही छठा रोगका चौथा औषधीका दशम वैद्यका आराम होनेका एकादशवाँ और दीर्घ रोगका बारहवाँ घर कहा है ॥ ७२ ॥ किसीके मतसे दूसरा एवं दशम औषधीके कहेहैं इन लग्न आदि घरोंमें शुभ शकल हों तो उन उन स्थान-सम्बंधि कार्य शुभ होंगे इसके विपरीत हों तो फलभी विपरीत कहना इसमेंभी बलाबल विचारसे विशेषता है ॥ ७३ ॥

सामान्यमेवंप्रविचार्यवाच्यंभूयोविशेषंप्रवदामि तुर्ये॥सहाखिलंसाबितमत्रयोग्यंसमुन्कलीवंशु भखारिजच॥७४॥ षष्ठेद्रुतंरोगहरंसुखेनपापेचत त्क्लेशविलंबिताभ्याम् ॥ स्याद्दाखिलंरोगविवृद्धि हेतुस्तत्तुल्यमत्रास्तिचसाबितार्द्धम् ॥७५॥ आ ग्नेयादिषुखण्डेषुषष्ठस्थेषुक्रमाद्रुजः ॥पित्तवातक फोद्भूतास्तथाजीर्णोद्भवागदाः॥७६॥रुधिरास्थनो र्विकारेणत्वगस्थ्यन्तर्गतंक्षतम् ॥ पार्थिवेपिच विज्ञेयं रिपौ वह्नयादिखे तथा ॥ ७७ ॥

टीका-यह विचार सामान्यतासे कहाहै अपनी बुद्धिसे विचार कहना, अब विशेष कहते हैं कि, चौथे घरमें दाखिल और खारि शकल शुभ होती हैं और छठमें शुभ मुन्कलीब अथवा शुभ रिज ॥ ७४ ॥ होतो सुखपूर्वक शीघ्रही रोग हटजायगा यदि पा शकल वे मुन्कलीब वा खारज होंतो कष्टपूर्वक विलंबसे आरा होगा जो दाखिल शकल होंतो रोग बढनेका हेतु होताहै ऐसे यहाँ साबित शकलभी रोग बढानेवाली जाननी ॥ ७५ ॥ छ स्थानमें अग्नितत्व आदि जैसे खंडहों वैसे क्रमसे पित्त वात कफ औ अजीर्णरोगोत्पत्ति कहनी ॥७६॥ और पृथ्वीतत्वमें इतना विशे है कि, रुधिरविकार, हड्डीका विकार, त्वचा और हड्डीपर चोट विचार छठे भावसे जानना ऐसेही अग्नि आदि तत्वोंमें रो विचार दशमस्थानसे भी करना यह मतांतरहै ॥ ७७ ॥

रोगिणोजीवनमरणज्ञाने ।

रोगिजीवितमृत्यर्थेप्रश्नेतनुरिपूद्भवम् ॥ सौरस्य चबुधस्यापिरोगिणोमृत्युकृद्भवेत् ॥७८॥ अन्य खण्डेनरुग्णस्यमृत्युर्वाच्योविचक्षणैः ॥ आद्यता तीययोर्जातेखण्डेप्येवंस्मृतंबुधैः ॥ ७९ ॥

टीका-अब रोगीके जीने मरनेके प्रश्नमें प्रथम और छठेके गुण जो शकलहो वह शनिकी हो तो अवश्य रोगी मरजायगा ऐसे बुधकी भी मृत्युकारक होतीहै॥७८॥ अन्य ग्रहोंकी शकल हो रोगी नहीं मरेगा ऐसा चतुर रम्मालने कहना ऐसेही पहिले औ तृतीय शकलके योगसेभी फल विद्वानोंने कहाहै ॥ ७९ ॥

अथ सप्तमे विशेषतश्चौरप्रश्ननिरूपणम् ।

सप्तमेचगृहेचौरप्रश्नंवक्ष्येविशेषतः ॥ नकीहुम्रा तवेखारिज्कव्जुलखारिजकानचेत् ॥८०॥प्रस्तारे

स्युर्नचौरेणहृतंस्याद्वस्तुतद्गृहे ॥ सत्येष्वेकतमे वापि वस्तु चौराहृतं वदेत् ॥ ८१ ॥

टीका–अब सप्तम घरमें विशेष चोरीके प्रश्नका विचार कहता हूँ कि, नकी -: हुम्रा ≡: अतवेखारिज _: कब्जुलखारिज =: शकल प्रस्तारम न हो तो ॥ ८० ॥ चोरी नहीं हुई गया द्रव्यघरहीमें है यदि इन चार शकलोंमें कोईभी प्रस्तारमें हो तो चोरने वस्तु हरण करी कहनी ॥ ८१ ॥

चौरः स्वकीयः परकीयो वेतिज्ञाने ।

द्विघ्नरेखांकसंयुक्तंबिन्द्वैक्यवह्निभाजितम्॥ एकादिशेषतःस्वाःयःपार्श्वस्थोदूरदेशजः ॥ ८२ ॥

अन्यच्च–तनुतुर्यौसप्तनृपौहत्वाद्वावेकमेतयोः ॥ कुर्य्यात्तत्साबितंचेद्वादाखिलंग्राममध्यगः॥८३॥ खारिजेचबहिर्जातोमुन्क्लीवेगमनोद्यतः ॥ ८४॥

टीका–चोर अपना है वा दीगर (पर) है ? ऐसे प्रश्नमें प्रस्तारमें संपूर्ण बिन्दुओंका जोड करना तथा जितनी समस्त रेखाहैं उनको दूना करके बिन्दुयोगमें जोड देना"दोबिन्दुसे एकरेखा उत्पन्न हुई है इस लिये यहाँ रेखाके दो अंक लिये जाते हैं"सबका योग(जोड़) जोहो उसको तीनसे शेष करना जो एक शेष रहेतो चोर अपना मनुष्यहै दो शेष रहें तो पडोसी(नजदीक) रहनेवाला व संबंधी है यदि तीन बचे तो परदेशी चोर जानना॥८२॥ अब और विचार चोरकी स्थितिमें है कि, पहिली चौथी और सप्तम सोलहवीं शकलोंको मिलायके दो शकल बनावे तब उन दोकी भी एक बनावे वह शकल साबित अथवा दाखिल होतो चोर ग्रामहीमें है बाहर नहीं गया खारज होतो ग्रामसे बाहर चलागया है और

मुन्कलीव हो तो ग्रामसे बाहर नहीं गया किन्तु जानेको तय्यार है जानना ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

चौरस्थित्यादिज्ञाने ।

चौरःस्यात्कनुतद्वासःकेषांचसन्निधौहरः ॥ इति प्रश्नेष्टमेद्वीन्दौशक्रेपंचेन्दुखण्डके ॥८५॥ पूर्वस्थबिन्दूरेखाभिःकुर्यादेकंततस्तनौ ॥ स्याच्चेत्स्वकीयःस्वगृहेतितीष्ठतितदावदेत् ॥८६॥ धनेसंबंधि पार्श्वस्थस्त्रयेबंधुस्तदालये ॥ सुहृद्भ्रातृभागिन्यश्च पिताब्धौवातदंतिके॥८७॥दूतवेश्यानर्तकेष्टकलागुणवतांसुते ॥ दासार्तवैरिणांषष्ठेदायादैर्णादिशांतगे ॥८८॥ मार्गाद्यातिप्रेत्यभुजामिंद्रजालकृतांमृतौ ॥ तापसातिथिमार्गस्थास्तत्पार्श्वस्थोनवालये ॥ ८९ ॥ नृपाणांश्रेष्ठपुंसांवात्वधिकारवतांखभम् ॥ मित्राणांच तथाप्तानां भवेस्याद्द्वादशेपिच ॥ ९० ॥

टीका-चोर कौनहै कहां ठहराहै किसके समीप रहताहै ऐसेप्रश्नमें ८ । १२ । १४ । १५ वीं शकलोंके ऊपर २ भागके बिन्दुरेखा यथाक्रम लेके एकशकल बनावै॥८५॥पूर्वस्थ बिन्दुरेखाओंसेबनी शकल प्रस्तारमें देखनी कहाँ ठहरीहै जो वह प्रथम घरमें होतो चोर अपना मनुष्यहै अपनेही घरमें ठहराहै ॥ ८६ ॥ दूसरे घरमें होतो अपना संबंधी वा पडोसी चोर वा उनके घरमें निवास चोरका है ऐसेही तीसरेसे भाई मित्र गोत्री या बहिन चौथे घरसे पिता वा उसके पास रहनेवाला वा चाचा ताउ दादा इत्यादि ॥८७॥ पंचमसे दूत (प्यादा) वेश्या नाचनेवाले खेलकूदके गुणी लोगोंमेंसे छठेसे दास दासी शत्रु सातवेंसे हिस्सेदार और स्त्रीजन ॥ ८८ ॥ अष्टमसे

मार्गमें लूटनेवाले डाकू इन्द्रजाली, बाजीगर आदि नवमसे मार्गमें स्थित तपस्वी अभ्यागत उनके समीप दशमसे राजा आदि श्रेष्ठ पुरुष वा अधिकारी मनुष्य ग्यारहवेंसे मित्र पंडित मंत्री आदिके घरमें चोर है ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥

बंधस्थनीचवृत्तीनां जननैनिद्रचकारिणाम् ॥ गृहे चौरास्थितिर्वाच्या बुद्ध्याचालोच्यसर्वदा॥९१॥ विश्वादिगेतिदूरस्थोदेशांतरगतो भवेत् ॥ प्रश्ने चतद्दलाभावेवदेद्वाशकुनालयात् ॥ ९२ ॥ गृह वृत्तिकृतोवापिगृहोक्तप्राणिनस्तथा ॥ विज्ञेयास्त स्कारनूनंतदंतिकजनास्तथा ॥ ९३ ॥ दूरांतिक गतिस्तस्य धर्माग्नौखारिजाद्भवेत् ॥उभयत्रबला धिक्यात्स्वग्रामेचोभयानचेत् ॥ ९४ ॥

टीका—बारहवें घरसे कैदी नीचवृत्ति और लोगोंकी निद्राभंग करानेवाले चौकीदार सिपाही आदियोंके घरमें चोरकी स्थिति कहनी विशेष अपनी बुद्धिसे विचारके सर्वदाही कहना ॥ ९१ ॥ तेरहवें आदि घरमें वह शकल पड़ी हो तो अति दूरस्थ चोरहै और दूसरे देशमें चलागया होवे यदि प्रस्तारमें वह खण्ड किसी घरमें भी न होतो शकुनालयकी संख्या गृहकी जानके उससे कहना॥९२॥ इस प्रकार जिस घरसंबंधी चोर जानागया वा ऐसा नहीं वही चोरहै उत उसके घरमें रहनेवाला अथवा उससे पालित वा उसका संबंधी वा उसका पडोसी तस्कर जानना ॥ ९३ ॥ चोर दूर चला गया वा समीपहै ऐसे विचारमें नवमस्थानमें खारिज शकल होतो दूर चलागयाहै और तीसरे घरमें खारिज शकल हो तो समीपके देशमें है यदि दोनहूं घरोंमें खारिज शकल हो तो जिसका बल

अधिक हो उसका फल कहना यदि ९।३ दोनोंहीमें खारिज शक्ल न हो तो अपनेही ग्राममें चोरह कहना ॥ ९४ ॥

चौरगतौदिग्ज्ञानं गृहद्वारं च ।

यद्दिश्यंदशमंखण्डंगतिश्चोरस्यतादिशि ॥ तस्करस्य गृहद्वारं नवमाच्छकलाद्वदेत् ॥ ९५ ॥

टीका-चोरके गमनमें दिशा और चोरके घरका द्वार कहते कि, प्रस्तारमें दशम खण्डकी जो दिशा है उस दिशामें चोर गया है और नवम खण्डकी जो दिशाहै उस दिशामें चोरके घरका दरवाजा है कहना ॥ ९५ ॥

अथ समीपस्थे स्वग्रामस्थे वा चौरे मार्गमानम् ।

कियद्दूरगतश्चोरः प्रश्नेत्वेवंविधेकृते ॥ विज्दहे पूर्वखण्डांकतुल्यमध्वानमादिशेत् ॥ ९६ ॥ क्षेत्रादियोजनांतत्रकल्पनास्वमनीषया ॥ धनिचौरौ यदेकत्रस्यातांचेत्तद्गृहांतरे ॥९७॥ कत्योकांसीतिपृच्छायांपञ्चषट्सप्तनंदके ॥ द्विघ्नरेखाकाऽब्दहांकसंख्यापंचार्द्धसंख्यया ॥९८॥ भाज्यः शेषांकतुल्यानिगृहाणिधनचौरयोः ॥ गृहं ग्रामश्च देशाश्च,सर्वमेवं विचारयेत् ॥ ९९ ॥

टीका-चोर समीपहो अपनेही ग्राममें होतो उसके रास्ताका माप कहते हैं चोर कितने दूरगया ऐसे प्रश्न हुयेमें विजूदह क्रमसे पूर्वोक्त नवमखण्ड देखना कि उस नवम खंडका और विजूदह क्रमसे घरके अंकका जितने घरोंका फैसला है उतनाही मार्गका प्रमाण कहना ॥ ९६ ॥ खेतसे लेकर योजन पर्यंत न्यूनाधिक कल्पना अपनी बुद्धिसे करनी,धनी और चोर एक ग्राममें हैं तो उनके घर

बीच कितने घर हैं और वे अन्य ग्रामोंमें हैं तो उनके बीच कितने ग्राम हैं ऐसे विचारमें ॥ ९७ ॥ प्रस्तारके ५।६।७।९ घरोंके शकलहों उनके शून्योंकी और रेखाओंकी संख्याको अन्दह पंक्तिके क्रमसे करके जोडै यहां रेखाओंकी शून्य दूनी लेनी अर्थात् रेखाके स्थानमें अन्दह क्रमके अंक मिले हों उनको दुगुनालेना फिर उन सबको इकट्ठाकरके प्रस्तारके पांचवीं शकलके (उसी प्रकारसे बनाये) अंकसे भागदेवै तब जितने अंक शेषरहैं उतनेही घर वा ग्राम धनी और चोरके घरोंके वा अन्तरमें जानने इसीप्रकार गृह ग्राम देश आदि विचारने ॥ ९८ ॥ ९९ ॥

अथ दूरगतेचौरेधनिचौरांतरालस्थग्रामादिमानमाह ।

यदादूरगतश्चौरस्तत्रयुक्तिंवदाम्यहम् ॥ चंद्रो १ वह्नी ३ रसाश्चाशातिथिःप्रकृतिरुत्कृतिः॥१००॥ षट्त्रिंशत्पंचवेदाश्चपंचेष्वतुरसास्तथा ॥ नागाब्धयःकुनन्दाश्चपंचशून्येंदवस्तथा॥१०१॥वियद्द्वीन्दुरसत्रीन्दुबिज्दहक्रमतोध्रुवाः॥प्रश्ने तु शैलनागाशाखण्डानामंकसंस्थितिः ॥ २ ॥ पंचाष्टांकाप्तावशेषैर्ग्रामाः स्युर्धनिचौरयोः ॥विशेषमत्र कथितं दूरगस्य हरस्य च ॥ ३ ॥

टीका-जब चोर दूर गया होतो धनी और चोरके बीच कितने ग्रामहैं इसमें कहतेहैं बिज्दह क्रममें १ से १६ पर्यंत कर्णक्रममें जो अंक लिखे हैं अर्थात् १।३।६।१०।१५।२१।२८।३६।४५।५५।६६।७८।९१।१०५।१२०।१३६ ये अंक हैं इसीक्रम करके प्रस्तारकी दशवीं आठवीं सातवीं शकलोंके अंकोंका जोड करना फिर ऐसेही प्रकारसे प्रस्तारमें जो पांचवीं और आठवीं शकलहैं उनके अंकोंको

जोडके इससे भागदेवै तब जो बाकी अंक रहैं उतनेही ग्राम चो
और धनीके मध्यमें हैं यह विशेषता करके दूरस्थित चोरका मा
मान कहा है ॥ १०० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

चौरस्वरूपज्ञाने ।

चौररूपंजगाद्धास्यचाब्दहालथगाहलात् ॥ जा-
तिवर्णाकृतिस्त्र्यादिस्वभावाद्यखिलंवदेत् ॥ ४ ॥

टीका–चोरके रूपादि जाननेके लिये प्रस्तारमें सातवें घरके
शकल अब्दह क्रमके जिस घरमेंहो उतनी संख्याके प्रस्तारके घरमें
जो शकल हो उसके अनुसार चोरकी जात रंग आकार स्त्री पु
षादि पूर्वोक्त संज्ञा प्रकारोक्त कहने ॥ ४ ॥

लाभालाभप्रश्ने ।

धनायौतनुशक्लाख्योहत्वाद्वैचैकमेतयोः ॥कुर्य्या
त्तद्वाखिलंचेतिबयाजंहृतवस्तुनः॥५॥ शीघ्रलाभो
न्यथानैवतिथ्युल्कायांविपर्ययः॥दाखिलंसाबितं
सौम्यंधनेचेदखिलाप्तिकृत् ॥६॥ मुन्कीवेचाशुभे
वितमर्द्धंलभ्यंनखारिजे ॥ अष्टमेखारिजेचौराद्ध
नमन्यत्रगच्छति ॥ ७ ॥ एवंचौरस्यपृच्छायां
भेदाः प्रोक्ताःसुसप्तमे ॥ स्वर्णकर्यमराश्चैवविधि
नानेनलक्षयेत् ॥ ८ ॥ तेषां भौमस्य खण्डाभ्यां
संभवं सविचिंत्य च ॥ संवदेद्देशकालज्ञः शेष
मत्रापि पूर्ववत् ॥ ९ ॥

इति सप्तमेविशेषः ।

टीका--चोरित द्रव्य मिलेगा वा नहीं ऐसे प्रश्नमें २।११ और
१।१४खण्डोंको मिलायके दो शकल फिर उन दोकीभी एक बन

वह दाखिलहो अथवा बयाज हो तो गयी वस्तु शीघ्रही लाभ होगी औरप्रकारसे न होगी तथा १५वें घरमें उकाहो तोभी लाभ न होगा और यदि दूसरे घरमें दाखिल साबित सौम्यखण्ड हो तो चोरित धन पूरा मिलजायगा ॥५॥६॥ मुन्कलीब हो अशुभ हो तो आधा द्रव्य मिलेगा खारिज हो तो कुछ नहीं मिलेगा अष्टम घरमें यदि खारिज शकलहो तो चोरीका माल चोरके पासभी नहीं रहा अन्यत्र चलागया॥७॥ ऐसे भेद चोर विचारमें सप्तम स्थानसे कहे हैं सुवर्ण बनानेवाले (रसायनी) और देवताओंकोभी इसी प्रकार देखना कि, किस देशमें किस ग्राममें किस घरमें हैं ॥ ८॥ सो मंगलकी शकलोंसे है वा नहींहै ऐसा संभव विचारकर कहना देशकालके जाननेवालेने अपनी बुद्धिसे विचारके कहना और शेष सब बात चोरके उक्तवत् विचारनी ॥ ९ ॥

अथाष्टमे विशेषः ।

ममर्णमुक्तिस्त्वथवापि वृद्धिःसाम्यंचवास्यादिति चिंतयेज्ज्ञः ॥ आद्येगृहेकञ्जुलदाखिलंस्याद्धनेऽतवेदाखिलमष्टमेतत् ॥१० ॥ तदर्णमुक्तिस्त्वरितंधनाष्टेसत्खारिजेसाचिरकालतः स्यात् ॥ आद्याक्षितार्तीयगृहेषु हुम्रांकिशोकलावृद्धिरतोन्यथास्यात् ॥ ११ ॥

टीका--अब अष्टम भावमें विशेष कहते हैं कि, मेरे ऊपरका ऋण छूटजायगा वा बढेगा वा ऐसेही रहेगा ऐसे प्रश्नमें पंडितने विचारना कि, जो प्रथम घरमें कञ्जुल दाखिल शकल और दूसरे घरमें तथा आठवें घरमें अतवेदाखिल हो ॥ १०॥ तो शीघ्र ऋण उतर जायगा जो २।८ घरोंमें शुभ खारिज हो तो बहुत दिनोंमें

करजा उतरेगा यदि प्रथम घरमें हुम्रा दूसरेमें अंकीश तीसरेमें उक्का हो तो ऋण बढेगा ॥ ११ ॥

अथ नवमे विशेषः ।

तत्रविदेशगतस्य जीवनमरणज्ञानम्--वाय्वग्न्यो
जींवितानिस्युर्मृतानिचधराम्बुनोः ॥ खानित
च्छेषतोवाच्यंफलंकष्टंतुतत्समम् ॥ १२ ॥ तत
स्तिथ्यंतबिन्द्वैक्येजीवेन्नष्टोरदाधिके॥ रदाल्पेच
मृतः कष्टीरदतुल्येविशेषतः ॥ १३ ॥ आद्येच
नवमेखंडेशुभेतुचिरजीवितः ॥ विपरीतेन्यथावा
च्यंफलंपुंसिविदेशगे ॥ १४ ॥

टीका--नवममें विशेषतः परदेश गयेके जीते मरेके प्रश्नमें प्रथम औरं नवम घरमें वायु तथा अग्नितत्त्वके बिन्दु हों तो जीवित और पृथ्वी तत्त्व तथा जल तत्त्वके हों तो मृत जानना और प्रथमसे पंद्रहवें घरपर्यंत जितने बिन्दु हों सबको जोडके ३२ से अधिक हों तो जीवित, ३२ से कम हों तो मरगया और ठीक ३२ ही हों तो अत्यन्त कष्टमें है जानना ॥ यहभी स्मरण इसमें रखना चाहिये कि, प्रथम एवं नवम शकल शुभ हों तो वह मनुष्य बहुत दिन जियेगा विपरीतमें फलभी परदेश गये मनुष्यको विपरीतही कहना ॥ १२ -१४ ॥

दशमे वादिनोर्जयपराजयौ ।

अथप्रष्टाविंवदतोराद्यंगेहंचसप्तमम्॥ द्वितीयस्य
नृपस्यापिगृहंस्यादशमंतथा ॥ १५ ॥ नृपखण्ड
स्ययद्योगाच्छुभंखण्डंप्रदृश्यते ॥ तज्जयः संधि
रुभयोः साम्येस्याद्बलवज्जयः ॥ १६ ॥ पराजयः

पापखंडेवादिनोर्द्धनधामगौ ॥ हानिलाभप्रदौ स्यातांक्रमात्खारिजदाखिलौ ॥ १७ ॥ यद्योगा द्यादिखण्डाभ्यां शुभं तस्माच्चतज्जयः ॥ पापेपरा जयश्चैव विमृश्यप्रवदेत्सुधीः ॥ १८ ॥

टीका–अब दशम भावमें लडनेवालोंकी जीत हारका विचार है कि विवादवालोंमें पूछनेवालेका प्रथम घर दूसरे वादीका सप्तम स्थान और राजाका दशम स्थान जानना ॥ १५ ॥ राजाके खण्डमें जिसके खण्डका योग करनेसे शुभ शकलहो उसकी जीत कहनी जैसे १।१० के योगसे शुभ शकल आवे तो पूछनेवालेकी और १०।७ के मेलसे शुभ आवे तो दूसरे की विजय होगी यदि दोनहूं शुभ वा अशुभ हों तो संधि (राजीनामा) होगा अथवा जिसका बल अधिक हो उसकी जय कहनी ॥ १६॥ जिसके पाप शकल हो उसकी पराजय जिसके धन स्थानमें खारिज शकल हो उसकी धनहानि जिसके दाखिल हो उसको धनलाभ होगा॥ १७॥ सप्तम आदि जिस खंडके योगसे शुभशकल आवे उसके सहायतासे जय और पापखण्ड जिसके संमेलसे आवे उसके संबंधसे पराजय (हार) होगी ऐसा विचारके बुद्धिमानने प्रश्न कहना ॥ १८ ॥

अथ भोजन चिंता तत्रादौ तत्त्वरसानाह ।

मिष्टो वह्निः क्षीरभेदाः समीरआप्यं मूलं कीर्तितं वाफलाद्यम् ॥ रूक्षं चूर्णं पार्थिवं खंडमत्र मुख्यं भोज्यं ज्ञयमाकाशखण्डात् ॥ १९ ॥ भुक्तं न भुक्तं च मयेति प्रश्ने नृपार्द्धकं पापमथारिगेहे ॥ तथा न भुक्तं च तथा कृताशं विपर्यये स्मात्प्रवदेन्मनस्वी ॥ २० ॥

टीका-अब भोजन प्रश्नमें प्रथम रस कहते हैं कि; अग्नितत्त्वसे मीठा, वायुतत्त्वसे दूधके भेद दधि घी मावा आदि, जलतत्त्वसे कंद मूल वा फल आदि, पृथ्वी तत्त्वसे रूखा चूर्ण सब आदि जानने मुख्य भोजनका पदार्थ यहां मुख्य आकाशखंडसे जानना ॥ १९॥ मैंने भोजन किया है वा नहीं ऐसे प्रश्नमें प्रस्तारके दशम वा छठे घरमें यदि पाप शकल हो तो भोजन नहीं किया जो इससे अन्यथा हो तो भोजन करलिया है जानना ॥ २० ॥

वह्निखण्डंनृपेचेत्स्यात्पुनरुक्तं गृहे स्वके ॥ केवलं
चैक्षवं भुक्तं दधिक्षीरान्वितं भवेत् ॥ २१ ॥फला
द्यान्वितमाप्येस्याच्चूर्णाद्याढयञ्चपार्थिवे ॥ एवं
वाय्वादिखण्डानां पुनर्वह्न्यादिकालये ॥ २२ ॥
तत्तद्विमिश्रितं वा स्याद्द्वि-याद्यैर्द्वित्रियुक्तथा।
यदा न पुनरुक्तं स्यात्तदा तद्गतबिन्दुभिः ॥२३॥
तत्तद्विमिश्रितं खस्थेज्जत्मासर्वरसान्वितम् ॥
अथचान्यत्प्रकारेण प्रवक्ष्ये भोज्यमत्रहि ॥२४॥

टीका-दशमस्थानमें यदि अग्नितत्त्वकी शकलहो और पुनरुक्तभी अपने घरमें हो तो केवल ईखका विकार चीनी मिश्री आदि दूध दहीके साथ खाया है ॥ २१ ॥ जलतत्त्वहो तो फल आदिसे संयुक्त मीठा खाया है पृथ्वीतत्त्व होतो मीठा संयुक्त सत्तू वा आटेके पदार्थ खाये हैं ऐसेही वायु आदिखंड फिर अग्न्यादि घरोंमें पडे हों तो उन उनके उक्तरस मिले हुये कहना ॥ २२ ॥ तैसेही दो तीनकी प्राप्तिमें दो तीन प्रकारके भोज्य कहने जो उक्त शकल प्रस्तार पुनरुक्त (दूसरीजगे) न होतो उसके बिन्दु जिस जिस तत्त्वके हों उसके मिश्र भोज्य जानना ॥ २३ ॥ यदि दशम घरमें

इज्जतमा हो तो सभी रसोंसे युक्त विचित्रभोज्य कहना अब यहां और प्रकारसे भोज्य कहा जाता है ॥ २४ ॥

सतैलकटुकं सौरे चान्द्रे च लवणान्वितम् ॥ शा
ल्योदनं तथा भौमे तिक्ताढ्यंचणकोद्भवम्॥२५॥
मौद्गसर्वरसं सौम्येसेक्षुगोधूमजं गुरौ ॥ साम्लं
यवोद्भवं काव्ये माषंकाषाययुक्शनौ ॥२६॥राहु
केत्वोस्तथादेश्यं भोज्यं खण्डे नभस्थिते ॥ २७ ॥

टीका-दशमघरकी शकल सूर्यकी होतो तिल, तेलयुक्त कटुक-पदार्थ, चन्द्रमाकी होतो सलौना मंगलकीसे भात और चणेकी (तिक्त तीखवस्तु) ॥ २५ ॥ बुधकीसे मूंग आदिका सर्वरस बृहस्पतिकी होतो मीठा और गेहूंका पदार्थ शुक्रकीसे जौका पदार्थ, खट्टा रस सहित शनिमें उडद और कढी आदि जानने ऐसेही राहु-केतुकेसे भी शनितुल्य कहना इस प्रकार दशम घरमें जिस ग्रहकी शकलहै उसका भोज्य कहना ॥ २६ ॥ २७ ॥

अथ लाभेविशेषः ।

ममाशापूर्णतामेति न वेति प्रश्नसंभवे ॥ तन्वाया
वाद्यशक्लौचहत्वाद्वेचैकमेतयोः ॥ २८ ॥ कार्यं च
तद्गृहे तस्य गृहस्याशास्मृताबुधैः॥न प्रश्ने तद्द
लंचेत्स्यात्तदाशानेतिसिद्धिताम् ॥२९॥ सौम्या
सौम्यैः पुरावत्स्यादाशाचशकुनालयात् ॥३०॥

टीका-अब ग्यारहवें घरमें विशेष है कि,मेरी आशा पूर्ण होगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें प्रस्तारके पहिली तथा ग्यारहवीं और पहिली चौदहवीं शकल क्रमसे गुणके २ शकल बनावै तबदोकी एककरके देखे कि, वह शकल प्रस्तारमें हैं तो आशा पूर्ण होगी प्रस्तारमें न

होतो आशा पूर्ण नहीं होगी यदि प्रस्तारमें है तो जिस घरमें पडी हो उसी घर संबंधी आशा जाननी ॥ २८ ॥ २९ ॥ उसके शुभाशुभ विचार पूर्ववत् करके शकुन क्रमसे आशा प्रश्न कहना॥ ३०॥

अथ व्ययेविशेषः ।

द्वादशे बंधमुक्तिस्तु विशेषेणोच्यतेऽधुना॥ द्वादशे खारिजे बंधं मुक्तिः स्यान्नचदाखिले॥ ३१॥ सभीतिस्थिरतो वाच्या मुन्कलीवे बंधनं पुनः॥ खारिजेऽब्धौऽव्ययेवापि तिथ्युल्कायां न मोचनम् ॥ ३२॥ स्थानान्तरे गतिस्तत्र मृत्युरेव न संशयः ॥ एवं तन्वादिभावानां विचारः कथितो मया ॥ ३३ ॥

इति रमलनवरत्नेभावप्रश्नकथनंनामपञ्चमंरत्नम् ॥ ५ ॥

टीका-अब बारहवें भावमें बंधन (कैद आदि) से छूटनेका विचार विशेष यहाँ कहा जाताहै कि, बारहवें घरमें यदि खारिज शकलहो तो बंधनसे छूट जायगा दाखिल हो तो नहीं छूटेगा॥ ३१॥ जो वह खण्ड स्थिर हो तौ भय होकर छूटेगा मुन्कलीव होतो छूटके फेरभी बंधनमें पडेगा और चौथेमें तथा बारहवेंमें खारिज शकल और पंद्रहवेंमें उक्ला होतो बंधनसे नहीं छूटेगा ॥ ३२ ॥ एक जगेसे दूसरी जगा चला जायगा और निःसंदेह मरभी जायगा इसप्रकार तनु आदि भावोंका विचार मैंने कहाहै ॥ ३३ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषायां भावप्रश्न-
निरूपणं नाम पञ्चमं रत्नम् ॥ ५ ॥

अथाखिलप्रश्नेष्ववधिज्ञानम् ।

प्रश्नगेहं स्वसंख्यघ्नं स्वाङ्कनाढ्यं तदर्द्धकम् ॥ यावत्स्याद्द्विजदहागारे स्वस्मिन्खण्डे वधिर्भवेत् ॥ १॥

प्रस्तारे स्वगृहाभावे पुरःपृष्ठे च विजदहात्॥ शोध्यं योज्यं च द्वित्र्याद्ये पुनरुक्तेप्ययं विधिः ॥ २ ॥ कुर्य्याद्यत्सिद्धमङ्कं स्यात्प्रश्नकालावधिस्तुसः ॥तद त्रायुष्यचक्रोत्थतुल्यमंकंभवेत्सदा ॥ ३ ॥

टीका-प्रश्नका घर अपनी संख्यासे गुण देना और विजदहोक्त अंक जोडदेना उसके प्रमित जो खण्डहो वह विजदहमें अपने स्थान उसी घरोंमें होतो वही अवधी जाननी सारांश इसका यह है कि प्रश्न घरमें जो शकल है वह विजदहपंक्तिमें अपने घर अर्थात् जितने घरमें प्रश्नमें हैं उतनेही घरमें विजदहमेंभी होतो उस विजदह पंक्तिके अंकसमान समयमें कार्य होगा विजदह पंक्तिके अंक पूर्वोक्त चक्रमें १।३।६।१० आदि क्रमगत लेने जो१से१३६ पर्यंत है जब प्रस्तारमें व विजदहमें खंड स्वगृही न हो तब विधिहै कि प्रश्नघरसे पिछले घरोंमें विजदहमें होतो विजदहांकमें प्रस्तारोक्त प्रश्नघरकी संख्या घटायदेवै यदि प्रश्नघरसे आगेके किसी घरमें विजदहमें होतो विजदहांक संख्यामें प्रस्तारोक्त गृहसंख्यांक जोडदेवै जब प्रस्तारमें वह खण्ड पुनरुक्तहो तो उसमेंभी यही विधि करनी यदि २।३ आदि घरोंमें पुनरुक्त हुई हो तो सब घरोंके अंकको ऐसेही गतमें हीन गम्यमें योगकरना यदि प्रश्नखण्ड विजदहमें अपने घरमें न हो तो पहिले कहे आयुचक्रमें जहाँ प्रश्नकी शकल हो उसके नीचे प्रश्न घरके तुल्यकोष्ठक अंकको अवधि जाने. समझनेके सुगमार्थ यहै अर्थ दुबारे लिखा इस प्रकार जो अंक सिद्ध बैठे वह प्रश्न समयकी अवधी जाननी यहाँ सर्वदा पूर्वोक्त आयुष्यचक्र मिले अंकके केतुल्य अवधी होती है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

तदङ्कं किंस्यादित्याह ।

अथोमहांतादि चतुश्चतुष्के नृपासखण्डस्य च पौनरुक्तिः॥घस्राश्च घस्रादिकमासवर्षाः क्रमात् स्युरेते शकुनालयाद्वा ॥ ४ ॥ दिनादीनां च नियमः प्रायशोविपलादि च ॥ आसन्नप्रसवादौ तुविपलानिपलानि च ॥ ५ ॥ घटिकाः प्रहरा श्चापि क्रमेणोत्थामनीषया ॥ वृष्टिप्रश्ने च वर्षा यां घटिकाश्च मुहूर्त्तकाः ॥ ६॥ प्रहरादिवसाश्चा पिवाच्यांः संभावनाबलात् ॥ अयं स्थूलो विधिः सर्वप्रश्नानां परिकीर्तितः ॥ ७ ॥

टीका–प्रस्तारकी सोलहवीं शकल उम्महांत संज्ञक पहिले ४ घरोंमें होतो दिनोंकी संख्याका वह अंक जानना यदि पांच आदि चारघर बनात संज्ञकोंमें होतो सप्ताह (हफ्ता) जानने जो ९ आदि ४घरमुत्तह्लव संज्ञकोंमें होतो महीने जानने. और १३ आदि४ जवा दातोंमें होतो वर्ष जानने अथवा शकुन क्रमसे यह जानना॥४॥दिन आदमियोंका नियम विशेषतः विपलादि नियम शीघ्र होनेवाले प्रसव आदिमें पला विपला बताई जाती हैं॥५॥घडी पहर भी कार्य संभावना देखके अपनी बुद्धिसे देशकालादि विचारके कहना ऐसेही वर्षाकालमें वर्षाप्रश्नकेभी घडीमुहूर्त अन्यदिनोंमें दिनादि कहने॥६॥ प्रहर दिवस आदि संभावनाके बलसे कहने जैसी जिस वक्त संभावनाहो वैसाही विचार अपनी बुद्धिसे करना यह स्थूल विधि सभी प्रश्नोंकी कहीहै ॥ ७ ॥

तदंतरे पुनःसूक्ष्माऽवधिं वक्ष्ये विशेषतः ॥ तदर्थ मुम्महांताख्यं लिखेत्पंक्तिचतुष्टयम् ॥ ८ ॥

वह्न्यादिगतशून्यानां खण्डानामब्दहक्रमात् ॥
पृथगष्टाष्टसंख्यानां लिखेत्पंक्तिचतुष्टयम् ॥ ९॥
लह्यानहुम्रावयजांकीशानांतुचतुष्टयम् ॥ शुद्धो
म्महांतसंज्ञं स्यात्क्रमेणाद्यगतं किल ॥ १० ॥

टीका–कार्यावधि निकसेमें उस अवधिके आदिमें वा मध्यमें वा अंत्यमें कब कार्यहोगा ऐसे विचारमें पुनः विशेषतासे सूक्ष्म अवधि कहते हैं कि, इसके लिये उम्महांतनाम ४ पंक्ति लिखनी ॥ ८ ॥ अग्निस्थानमें जिनके शून्य हैं ऐसे खण्ड अब्दहक्रमसे प्रथम पंक्तिमें लिखने द्वितीयादि पंक्तियोंमें वायु आदि तत्त्वोंके खण्ड पृथक् ८।८ लिखके ४ पंक्ति लिखै ॥ ९ ॥लह्यान, हुम्रा, वयाज, अंकीश ये शुद्ध उम्महांत हैं प्रथम पंक्तिमें लिखने ऐसेही क्रमसे ४ पंक्तियोंमें ८।८ शकल लिखनी ॥१०॥

उम्महांतचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	
— —	· —	· — ·	· · · —	· — — ·	· — — ·	· — · ·	· · · ·	अग्नि
· — —	· — —	— · ·	· · · —	— · — ·	· · — ·	— · · ·	· · · ·	वायु
— ·	· — · ·	— · —	· · · —	— — · · ·	· — · ·	— · · ·	· · · ·	जल
— — — ·	· — — ·	— · — ·	· · — ·	— — · ·	· — · ·	— · · ·	· · · ·	पृथ्वी

अथ तत्प्रयोजनम् ।

चलद्वितीयंस्वमथाक्ष
चंद्रादाद्याष्टखण्डांतर
गामियत्र ॥ प्रश्नेषुसाक्ष्यर्द्धमदस्तथास्मात्पृष्ठाऽ
ग्रनीचोर्ध्वगतं क्रमेण ॥११॥ गतं वर्तमानभविष्यं
सुधीभिस्तथाकस्मिकं साक्षिखण्डं विलोक्य ॥
दलं यत्र सौम्यं प्रपश्येच्च कार्यमवध्यग्निभागे
निजे सिद्धिदं स्यात् ॥ १२ ॥ वह्निभागसमःकालो
विलोक्य पृष्ठगाद्बुधैः ॥ मिजाजस्वगृहाद्वाच्य
महः कार्य्यं नृपादपि ॥ १३ ॥ पंक्त्यादेर्भूतिकालं

च शकलादष्टमाद्वदेत् ॥ वर्तमानं त्वष्टमस्य प्रथमाच्छकलाद्वदेत् ॥ १४॥ भविष्यं तूर्यपंक्तेश्च प्रथमापंक्तितो वदेत् ॥ आकस्मिकयथाद्यायाः प्रथमाबलिनो वदेत् ॥ १५ ॥ प्रकारोऽयंमया प्रोक्तः सर्वप्रश्नावधौ परः ॥ कार्यसंभावनामादौ विचार्य्यं निगदेद्बुधः ॥ १६ ॥

इति रमलनवरत्नेऽवाधिकथनं नाम षष्ठं रत्नम् ॥ ६ ॥

टीका-उम्महातका प्रजोजन है कि, पंद्रहवें घरसे बिन्दु एक वा दो जैसे प्राप्तिहों चलकर प्रथमके ८ खण्डोंके बीच जहाँ पहुंचे वह खंड प्रश्नोंमें साक्षी जानना बिन्दु चालन विधि पहिले कह आये हैं उस साक्षीके पीछे आगे नीचे ऊपर क्रमसे अवधिके अंक लेने ॥ ११ ॥ वह तीन प्रकार होते हैं कि प्रथम वर्तमान दूसरा भविष्य तीसरा (आकस्मिक) कछुक स्वतः सिद्ध और अकस्मात् ऐसा मिश्रित विद्वानोंने फलमें देखना जहाँ सौम्य हो तहाँ कार्य-सिद्धि जाननी जो शकल अग्निभागमें स्वगृहीहो उससे कार्यवि-धिकी सिद्धि होती है प्रगट यह है कि, उम्महान्त नामके पंक्तिमें साक्षिखंड जिस घरमें हो उसी घरमें पूर्वपंक्तिमें होतो आकस्मिक यदि अपनी पंक्तिमें पिछले घरमें होतो भूतकाल और अपने आगे होवे तो भविष्यकालका फल कहै ॥ १२ ॥ तहाँ भी अग्नि भागके समान पिछले घर होनेमें पंडितोंने देखके कहना और मिजाज पंक्तिमें अपने घरमें हो तो उसी स्वगृहसे कहना जो बडा भारी कार्य होतो दशम स्थानसेभी कहना ॥ १३ ॥ पंक्तिके आदिमें भूतकाल आठवीं शकलसे कहना आठवींका वर्तमानकाल प्रथम शकलसे कहे अर्थात् इनके जिस भागमें आगेको ही शकल

न हो तहां सन्मुख भागकी अंतिम पंक्तिही आगे समझना और प्रथम पंक्तिको आकस्मिक काल बतानेवाली शकल चौथी पंक्तिमें जाननी अर्थात् इसके पूर्व भागमें नीचेकी पंक्ति जाननी और चौथी पंक्तिका भविष्यकाल पहिली पंक्तिसे कहे ग्रंथांतरोंमें वार निकालनेकी विधि है कि, प्रस्तारमें प्रश्न शकल जिस घरमें है मिजाज पंक्तिमेंभी उसी घरमें हो तो उसके वारमें कार्यसिद्धि होगी यदि २। ३ घरोंमें पुनरुक्त हो तो उनमें जो बलवान् हो उसके वारमें और अपने घरकी होके मिजाजमें स्वगृही न हो तो प्रश्न शकलके वारमें कहना ॥१४॥१५॥ यह अन्य प्रकार मैंने समस्त प्रश्नोंकी अवधिके लिये कहा है इसमें भी कार्यकी संभावना प्रथम देखके अपने बुद्धिके विचारसे समझके विद्वानने कहना ॥ १६ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषाटीकायां प्रश्नविधिकथनंनाम षष्ठंरत्नम् ॥ ६ ॥

अथ सप्तमे मुष्टिप्रकारमाह । तत्रतावत्खण्डानां
मृत्यूपयोगिस्वरूपाण्याह ॥

गुरुभार्गवयोः खण्डाबयाजेज्जतमायुताः ॥मृदुलाः
कुजशिखीनानां निष्ठुराः सजमातकाः ॥ १ ॥
शनिराहोस्तरीकं च खण्डाः समृदुनिष्ठुराः ॥
निर्वीय च सवीय च क्रमेणाग्न्यादितत्त्वतः ॥ २ ॥

टीका-अब सातवें रत्नमें मुष्टिप्रश्न कहते हैं जिसमें प्रथम खण्डोंके मुष्टि प्रश्नोपयोगिस्वरूप कहते हैं कि, बृहस्पति शुक्रके शकल बयाज और इज्जतमा सहित मृदु हैं मंगल, केतु, सूर्यके खंड और जमात (निष्ठुर) कहे हैं ॥ १ ॥ शनि राहुके खण्ड और

तरीक (समृदुनिष्ठुर) कोमल भी और कडे भी हैं इनमें निर्वीर्य और सवीर्य अग्नि आदि तत्त्वोंके क्रमसे जानना ॥ २ ॥

अथ वर्णानाह शकुने ।

पीतो रक्तश्च श्वेतश्च रक्तकृष्णासितासितः॥ गोधू
माभः श्वेतपीतः कृष्णं चात्यंतकृष्णरुक् ॥ ३ ॥
कृष्णरक्तं तथा श्वेतं पीतं श्यामं सितासितम् ॥
हरितश्यामपीतं च हरितश्वेतकृष्णकम् ॥ ४ ॥
हरितं हरितश्वेतश्यामं लह्यानतः क्रमात् ॥ शकु
नक्रमतोवर्णा ज्ञातव्याः सर्वदाबुधैः ॥ ५ ॥

आकृतिः ।

दीर्घं च वर्तुलं दीर्घं चतुरस्रं सदीर्घकम् ॥ व्यतुल
वर्तुलं व्यस्रं वर्तुलं दीर्घविस्तरम् ॥ ६ ॥ दीर्घवि
स्तीर्णदीर्घं च दीर्घविस्तीर्णदीर्घकम् ॥ वर्तुलं
वर्तुलं दीर्घं विस्तीर्णं शकुने क्रमात् ॥ ७ ॥

स्थानान्याह ।

नुस्नुत्खारिजलह्यानावतवेखारिजस्तथा ॥ नगरा
रण्यवासानि तरीखं कृषिवर्त्मनि ॥ ८ ॥ स्वर्णरौ
प्यापणस्थाने कञ्जुहाखिलजमातके ॥ अङ्की
शश्च तथा चित्रहठेस्यादिजूतमागृहम्॥९॥नकी
स्थानं नवग्रामं मतवेदाखिलं वने॥ वृक्षे च पाठ
शालायां स्वारामे नुस्नुहाखिलम् ॥ १०॥ क्षेत्रप्र
वाहारामेषु बयाजस्य गृहं स्मृतम्॥कञ्जतुल्रखा

रिजशैलवनेषु फरहाभिधम् ॥ ११ ॥ नृत्यारामेत
मिस्राढयं मुक्तास्थान प्रकीर्तितम् ॥ हिंस्रास्त्रवैद्य
सदनं हुम्रायाः स्थानमीरितम् ॥ १२ ॥

अथ मौल्यामौल्यमाह ।

लह्यान्नुस्तुत् खारिजनुघ्दाखिलदलानि भूरिमौ-
ल्यानि ॥ सममौल्यकंबयाजं तरिखोक्ताकब्जदा
खिलाः समौल्यानि ॥ १३ ॥ नक्यंकीशातवखा
कब्जुलखारिजजमाताख्याः॥स्युर्हीनामौल्यरत
वेदहुम्रेफहैंज्तमेतिमौल्यानि ॥ १४ ॥

अथ लघुत्वगुरुत्वमाह ।

अग्निवायुदलानिस्युर्बहुभारयुतानि हि ॥ जलभूमि
दलानिस्युः सघनानि गुरूणि च ॥ १५ ॥

अथान्यासंज्ञा ।

वह्निखण्डानि चत्वारिपरपोषणहेतवः ॥ पराणि
परपोषेण कथितानि मुनीश्वरैः ॥ १६ ॥

अथान्यासंज्ञा ।

लह्यानं फरहोक्ताख्यौहुम्रानुस्तुतखारिजौ ॥ अत
वेद्धौनकीजत्मान्येन्येन्ये च युताः स्मृताः ॥ १७ ॥

अथ खण्डानां शत्र्वादिकमाह ।

खारिजानां रिपुर्वह्निः पार्थिवानां तथाद्दषत् ॥
जलायानां जलंशत्रुः शेषाश्चाधारशत्रवः ॥ १८ ॥

पूर्णादिसंज्ञामाह ।

जमातेजतमेनुघ्दुक्ताकब्जुलदाखिलाः ॥एतानि
पूर्णखण्डानि खंडितान्यपराणि च ॥ १९ ॥

अथ खण्डानां रसाः ।

आग्नेयानां तिक्तकटुर्मिष्टाम्लं वायुखण्डके॥ नुस्रुहा खिल्बयाजाख्यनकीषु च तरीकके ॥ २० ॥ मिष्ट क्षारं तथा तिक्तमसत्क्षारं प्रकीर्तितम् ॥ कब्जुद्दाखिलके वापि जमातोक्लिकयोस्तथा ॥ २१ ॥ मिष्टाम्लं च तथाङ्कीशेनिकृष्टाम्लं प्रकीर्तितम् ॥ रसाह्येते समाख्याताः खण्डानां मुनिभाषिताः ॥ २२ ॥

भूमिमाह ।

निर्माणहेतवो वह्नेः खण्डानि निखिलान्यपि ॥ विनोक्तांपार्थिवानिस्युर्भूमिशिल्पमयानि च ॥ २३ ॥ कारणानि च शिल्पस्य शेषखंडानि संतिहि ॥ एवं विचार्य्य सुधियावदेत्प्रश्नं समाहितः ॥ २४ ॥

अथ खण्डानां धात्वादिसंज्ञा ।

धातुर्मूलं च धातुश्च मूलजीवौ च मूलकम् ॥ मूल जीवौ तथा मूलं धातुमूले च धातुकम् ॥२५॥ मूल जीवो जीवमूले भवंति शकुनक्रमात् ॥ उपयोगिहि मुष्टयादावेषां तस्मादिहोदिताः ॥ २६ ॥

यहा तीसरे श्लोकसे लेकर २६ श्लोकपर्यंत शकलोंकी अनेक प्रकारकी संज्ञाकहीहैं जो इस ग्रंथके प्रथम रत्नके अंतमें मैंने चक्ररूप लिख दिये हैं परंतु पाठकोंके सुबोधार्थ यहाँभी इन २४ श्लोकोंकी टीका चक्राकार लिखी जातीहै पाठकगणइसी चक्रमें समझ सकतेहैं--

शकलानांतुपादिचक्रम् शकुनक्रमतः ॥

चिन्ह	o । । ।	। o । o	o । o ।	। । । ।	o o । o	o । । o	। । । o	। o । ।	। । o ।	o o । ।	। । o o	o o o ।	o । o o	। o o o	। o o ।	o o o o
नाम	ल.	कं.दा.	क.खा.	ज.	फ.	उ.	अ.	हु.	व.	नु.खा.	नु.दा.	अ.ख.	न.का.	अ.दा.	इ.	
रूप	मृदु	कठिन	मिश्र	कठिन	मृदु	कठि. मृदु	कठि. मृदु	कठिन	मृदु	कठिन	मृदु	कठिन	कठिन	मृदु	मृदु	कठि- मृदु
वर्ण १	पीत	धूसर	श्याम	पांडुर	विचित्र	श्याम	कर्बुर	रक्त श्याम	श्वेत	धूसर	बहु वर्ण	श्याम	रक्त	श्वेत	शुक्ल	श्याम श्वेत
आकृति २	दीर्घ	वर्तुल	दिर्घ	चतुरस्त्र	वर्तुल	वर्तुल	चतुरस्त्र	वर्तुल	दीर्घ विस्तृ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ विस्तृ	वर्तुल	वर्तुल	दिर्घ	विस्तिर्ण
वास स्थान ३	नगरारण्ये	स्वर्ण रूप्य	वन पवते	सु.रू-प्य ह.	नृत्यारामे	अंधकारे	चित्र हट्टे	हिंसागारे	क्षेत्रारामे	नगरारण्ये	पाडशाले	नगरारण्ये	वन ग्रामे	वन वृक्षे	चित्र हट्टे	कृमिमार्गे
मौल्य ४	अति मौ.	स-मौल्य	मौल्य हीन	मौल्य हीन	स्वल्प मौल्य	स-मौल्य	मौल्य हीन	स्वल्प मौल्य	मध्य मौल्य	अति मौल्य	अति मौल्य	मौल्य हीन	मौल्य हीन	स्वल्प मौल्य	स्वल्प मौल्य	स-मौल्य
भार ५	लघु भार	बहु भार	लघु	बृह	मिश्र भार	बृह भार	बृह भार	मिश्र भार	मिश्र भार	लघु	मिश्र	लघु	मिश्र	मिश्र	मिश्र	मिश्र
हेतु-६ योग	पाषक एक	पुष्टिके युत	पो. युत	पु. युत	पु. एक	पु. एक	पु. युत	पु. एक	पु. युत	पो. एक	पु. युत	पो. एक	पु. एक	पु. एक	पु. एक	पु. युत
शत्रु ७	अग्निन	पाषाण	अग्नि	पाषाण	अधर	पाषाण	पाषाण	अधर	जल	अग्नि	जल	अग्नि	जल	अधर	अधर	जल
पूर्णापूर्ण-८	खंडित	पूर्ण	खंडित	पूर्ण	खंडित	पूर्ण	खंडित	खंडित	खंडित	खंडित	पूर्ण	खंडित	खंडित	खंडित	पूर्ण	खंडित
रस ९	कटुक	कट्वम्ल	कटु	कटु अम्ल	मधुर	कटु अम्ल	कटु अम्ल	मधुर	क्षार मिष्ट	कटुक	क्षार मिष्ट	कटुक	क्षार मिष्ट	मधुर	मधुर	क्षार मिष्ट
कार्य हेतु१०	निर्माण	भूमिशिल्प	निर्माण	भूमिशिल्प	शिल्पकार	भूमिशिल्प	शिल्पकार	शिल्पकार	निर्माण	शिल्पकार	निर्माण	शिल्पकार	शिल्पकार	शिल्पकार	शिल्पकार	शिल्पकार
धात्वादि-११	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	मूल	मूल	जीव	मूल	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	जीव	मूल

अठारहवें श्लोकका अर्थ इस चक्रमें है

अग्नि	वायु	जल	भूमि	तत्व
भूमि	जल	वायु	अग्नि	सम
जल	भूमि	अग्नि	वायु	शत्रु
वायु	अग्नि	भूमि	जल	मित्र

१८ वे श्लोकका अर्थ जो चक्रमेंहै सो ऐसाह कि, खारिज शलाकोंका अग्नि शत्रु होती मुष्टका वस्तुका पत्थर शत्रु है अंकीश, उल्का, क. दा. कामी पाषाण शत्रु है, फरहा, हुम्रा, इज्जत्तमा. अ. दा. का. पृथ्वी अन्य सब शकलों शत्रु जल है॥

अथ मुष्टिप्रश्नकथनम् ।

हुम्रानकीभ्यां च तथैककेन मुष्टौ ध्रुवं वस्तुविचिन्त्यमादौ ॥ प्रश्नेषु ते चेद्बहुषु स्थलेषु मुष्टौ तदा वस्तुकदंबमूह्यम् ॥२७॥ द्वयोरभावेऽपि चशून्यमुष्टिं विचिंत्य पूर्वंनिगदेन्मनस्वी ॥ तुर्य्येऽरिपौ सा बितदाखिलेचमतांतरेमुष्टिषु वस्तुवाच्यम् ॥ २८ ॥

टीका-मुष्टि प्रश्न विचार है कि, जब कोई पुछे कि, मेरी मुष्टिमें क्या है ? इसमें पहिले यह विचारना कि,मुट्ठीमें कुछ वस्तु है वा नहीं ऐसे विचारमें प्रस्तार बनायके देखे यदि उसमें हुम्रा और नकी शकल हों अथवा इनमेंसे एकभी होतो निश्चय मुट्ठीमें कुछ वस्तु है यदि वे शकल बहुत घरोंमें होतो बहुत वस्तु मुट्ठीमें हैं कहना ॥२७॥ यदि उन दोमें कोई भी शकल प्रस्तारमें न होतो मुट्ठी खाली है ऐसा विचारके बुद्धिमानने कहना,और चौथे तथा छठे घरमें साबित और दाखिल शकल होतो मुट्ठीमें वस्तु है यह मतांतरहैं॥२८॥

यदि मनुजसमूहे मुष्टिविज्ञानपृच्छासपादिदशज नानांपंक्तिरेकाविधेया ॥ तदितरमनुजानां श्रेणिमन्यांप्रकुर्यान्मुहुरितिकुजखण्डं यत्र तत्रास्तिमुष्टिः ॥ २९ ॥ कृत्वा प्रश्नमथात्र शैलदलगा संख्याऽज दोत्थाचयासादेयानवमे चसाबितदलंचेद्दाखिलंद क्षतः ॥ वामाच्चेन्नवमेपिखारिजमथोमुन्कीबकंवा कराद्यत्रस्यात्परिपूर्तिरेवमवलावेकःपुमान्मुष्टिवान् ॥ ३० ॥ एवं समुष्टौ पुरुषं भियातेक्षांकतंवोदाखिलसाबिताढ्या ॥ स्याद्दक्षिणामुष्टिरतोन्यथान्या

त्वेषां विरोधे बलवत्तराद्वात् ॥ ३१ ॥ अथवा पञ्चष ष्ठोत्थाच्छकलात्पूर्ववद्वदेत् ॥ वामायांदाक्षिणायांवात न्नंदोद्भवतोऽपि वा ॥ ३२ ॥

टीका–जो बहुत मनुष्योंके समूहमें मुष्टिज्ञानका प्रश्न होतो अपने सामने १० दश मनुष्योंकी १ एक पंक्ति बिठलावै अन्योंकी दूसरी पंक्तिकरे ऐसेही जितने अधिकहों उतने १०।१० के अलग पंक्तिकरे अब इन दशोंमेंसे किसकी मुट्ठीमें वस्तु है इस विचारके वास्ते ॥ २९ ॥ प्रस्तारके सातवें घरमें जो शकल है उसकी अब्जद क्रममें जो संख्याहै उतनवें मनुष्यके मुष्टिमें वस्तुहै इसमेंभी मनुष्य गणनाका क्रम है कि, उसी प्रस्तारके नवमघरमें साबित अथवा दाखिल खण्ड होतो अपने दाहिने हाथके ओरसे मनुष्य गिनने यदि नवममें खारिज अथवा मुन्क्लीबदल होतो बायें हाथके तर्फसे गिनना जिसपर वह संख्या पूरी हो उसके मुष्टिमें वस्तु कहनी ॥ ३० ॥ इसप्रकार जब मुष्टिवाला पुरुष जाना जानेमें देखना कि, पांचवें छठे और नवम घरमें दाखिल वा साबित शकल हों तो उस मनुष्याके दाहिनी मुष्टिमें और उन घरोंमें खारिज वा मुन्कलीब शकल होतो बाँई मुष्टिमें वस्तुहै यदि उक्त ३ घरोंमें परस्पर विरोधी शकलहों अर्थात् किसीमें साबित दाखिल किसीमें खारिजमुन्कलीहो तो उनमेंसे जो शकल बलवान हो उससे वामदक्षिण कहना ॥ ३१ ॥ अथवा पांचवीं तथा छठी शकलको मिलायके जो शकलहो उससे पूर्वके तरफ विचार करके कहना अथवा नवमहीसे वामदक्षिण मुष्टीका विचार करना ॥३२॥

इदानीं वस्तुकथने प्रकारं च ब्रवीम्यहम् ॥काठिन्य मार्दवे चाद्याद्वर्णं च द्वितीयालयात् ॥३३॥ स्वरूपं त्रितयात्तुर्य्यांदीर्घं वृत्तादिसद्म च ॥ मौल्यं च पंच

मात्तस्य गुरुत्वादींस्तथारिपोः ॥ ३४ ॥ युक्तायुक्तं
पुष्टिहेतुं नगात्तत्पुनरुक्तितः ॥ तत्संख्यामष्टमात्त
स्य शत्रुतां च वदेद्बुधः ॥३५॥ नंदात्खण्डितपूर्ण
त्वेदशमात्स्वादुमेव च ॥ निर्मितं लाभतस्तस्य
धातुमूलादिकं व्ययात् ॥ ३६ ॥ तद्वदेद्येनखण्डेन
तस्मात्खण्डाच्च सप्तमम् ॥ निरीक्ष्य तत्पदार्थं च वदे
त्संभावितं बुधः ॥ ३७ ॥ विरोधे तत्र वान्योन्यं तत्र
द्वाभ्यां समुद्धरेत् ॥ खण्डमेकं तस्य गुणा वाच्यामु
ष्टिगवस्तुनि ॥ ३८ ॥

टीका--अब वस्तु बतलानेका प्रकार कहताहूं कि वस्तुकी कठोरता वा कोमलता प्रथम घरसे, वर्ण (रंग)दूसरे घरसे ॥३३॥ स्वरूप तीसरेसे बडा छोटा गोल आदि आकार और स्थान चौथेसे, मूल्य पञ्चमसे हलका भारीपन छठेसे ॥ ३४ ॥ युक्त एक की पुष्टि हेतु सप्तमसे, तथा सप्तमस्थ खण्ड जहाँ पुनरुक्त हो उस घरसे संख्या, अष्टमसे शत्रुता पंडितने कहनी ॥ ३५॥ नवमसे खण्डित और पूर्णता, दशम भावसे स्वाद, जायका, ग्यारहवेंसे निर्माणता बारहवेंसे धातुमूल आदि जानने ॥ ३६ ॥ जिस खण्डसे जो कहे उसका संभव सप्तमसेभी अपनी बुद्धिसे विचार लेना असंभव बात न कहनी ॥ ३७ ॥ यदि प्रथम सप्तम सकलोंके फलमें विरोधपाया जावे तो उन दोकी एक शकल बनायके उसके अनुसार मुष्टिगत वस्तुके गुण कहने ॥ ३८ ॥

अथ खण्डयोगेनमुष्टौविशेषमाह ।

विशेषं खण्डयोगेन प्रोच्यते पूर्वसंमतम्॥ वह्निखण्डं
द्वितीयेस्याद्वर्णं कांतियुत तदा॥ ३९ ॥ वयाज चेत्

तृतीयेस्याच्छून्यांतं मुष्टिवस्तुयत्॥ सरन्ध्रं तत्प्र
वक्तव्यं तरीकेत्रिनवास्तिथे ॥ ४० ॥ अथवोत्की
र्णांचित्राढ्यं सूक्ष्मचिह्नाङ्कितं तथा ॥ नकीफ
रहौतृतीयैके त्रिकोणं छिद्रसंयुतम् ॥ ४१ ॥
तृतीये प्रथमे चोक्लावस्त्रवल्कलवेष्टितम् ॥ नवमे
वायुखण्डं चेद्वस्तुलोमान्वितं वदेत् ॥ ४२ ॥
इन्द्रखण्डं यदोक्लाचेदग्निदग्धं तदा वदेत् ॥ आ
द्यगेहे यदाप्यं स्यात्तूलभृत्कंदुकादिकम् ॥ ४३ ॥
एवं प्रोक्तो मुष्टिभेदः पुराणैः सम्यग्रम्ले पूर्वर
म्लानुसारी ॥ दैवज्ञानां कीर्तिसन्मानहेतोर्लो
कानां वै रंजनाय प्रकुर्यात् ॥ ४४ ॥

इति रमलनवरत्नेमुष्टिप्रश्नकथनंनामसप्तमं रत्नम ॥ ७ ॥

टीका–और प्रकार है कि, मुष्टि प्रश्नमें विशेषतर शक्लोंके योगसे वस्तु लक्षण कहते हैं जो पूर्वाचार्योंको संमत हैं कि, दूसरे स्थानमें अग्नि खण्ड हो तो वस्तु वर्ण कांतिमान् (चमकीला) जानना ॥ ३९ ॥ तीसरे घरमें बयाज शकल हो तो मुष्टिके वस्तु शून्यांतः (पोली) वा खोखरी है तीसरे वा नवम घरमें तरीक हो तो उस वस्तुमें छिद्र है ॥ ४० ॥ अथवा अनेक प्रकारके चित्रोंसे युक्त वा सूक्ष्म चिह्नोंसे युक्त है यदि ३ । ९ स्थानमेंसे किसीमें भी नकी वा फरहा हो तो वह वस्तु त्रिकोणाकार छिद्र सहित है ॥ ४१ ॥ तीसरे पहिले घरमें उक्ला हो तो वह वस्त्र व किसी वृक्षादिके वल्कल (त्वचा) से वेष्टित है जो नवम घरमें वायुखण्ड

हो तो वस्तु केशयुक्त कहनी ॥ ४२ ॥ चौदहवें स्थानमें उक्ता हो तो वस्तु अग्निसे दग्ध कहनी प्रथम घरमें जलतत्वकी शकल हो तो वस्तु रूईभरा गेंद आदि है ॥ ४३ ॥ इस प्रकार प्राचीन आचार्योंने पूर्व रमल शास्त्रानुसार मुष्टिगत वस्तुका भेद कहा है ऐसा प्रश्न ज्योतिषियोंके कीर्ति एवं सन्मानका हेतु कहा है लोकोंके खुश करनेको ऐसा प्रश्न करना ॥ ४४ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषायां मुष्टिप्रश्नकथनं
नाम सप्तमं रत्नम् ॥ ७ ॥

अथ नामबंधप्रकरणमष्टमंरत्नम् ।

नामान्तरासर्वमनःप्रसादो न कार्यसिद्धिःसुलभा
च यस्मात् ॥ तस्मात्प्रवक्ष्येखिलनामबन्धं जन
प्रतीतिः सुयशोपि यस्मात् ॥ १ ॥ आदावेवं वि
निश्चित्य कतिनामाक्षराऽणि हि ॥ चौरादीनां
ततः कुर्यादक्षरानयनं सुधीः ॥ २ ॥ चौरादीना
मवर्णानां प्रश्ने च फरहालयात् ॥ संख्यास्याद्र
म्लावित्तस्मादादौ फर्हा विलोकयेत् ॥ ३ ॥

टीका–सम्पूर्ण रूपसे मनकी प्रसन्नता नाम प्रगट बतलानेसे है क्योंकि प्रश्नकार्य सिद्धि सहज नहीं है इस वास्ते संपूर्ण नामबंध कहताहूं जिससे मनुष्योंको प्रतीति और रम्मालका सुयश भी होता है ॥१॥ प्रथम ऐसा निश्चय करे कि, नामके कितने अक्षर हैं ऐसे चोर आदिके नामाक्षर लानेका यत्न बुद्धिमान् करे ॥२॥ चोर आदिके नामाक्षरोंके जाननेका प्रश्नमें फरहा शकलसे अक्षर संख्या होती है इसलिये रमलज्ञने प्रथम फरहा शकल देखनी॥३॥

नामवर्णसंख्यामाह ।

द्वाभ्यामथैकार्द्धयुतार्णनामफर्हास्थिते स्याद्द्वि तयादिषट्कस्तु ॥ वसोस्तथैकाद्द्यासितं क्रमेण सप्ता र्णमाद्यव्ययसंस्थितेः स्यात् ॥ ४॥ विश्वोदयास्या द्वनधामगार्द्धाब्जदांकतुल्यार्ण—मथेन्द्रराज्ञोः । वेदार्णकद्यादि गृहे यदा स्याद्द्वयोर्यान्विताद्वापि वदेत्पुरावत् ॥ ५ ॥ यायदाप्रश्नगाफर्हातदात्वा- द्यदलस्य तु ॥ या संख्याचाब्जदांकोत्थातत्तु ल्यार्णतदाह्वयम् ॥ ६ ॥

टीका—नामाक्षर संख्या कहते हैं कि प्रथम घरमें फरहा हो तो नामके ७ अक्षर होंगे दूसरे घरसे ७ वें पर्यंत १। १ बढायके और ८ वेंसे ११ पर्यंत १। १ घटायके जानने जैसे दूसरेमें २ तीस रेमें ३ चौ० ४ पं० ५ छ० ६ स० ७ पुनः आठवेंमें ६ नौ० ५ द० ४ ग्या० ३ और बारहवेंमें ७ अक्षर जानने ॥ ४॥ जो तेरह- वेंमें फरहा हो तो दूसरे भावमें जो शकल है उसका अब्जदमें जो अंक हैं उतने अक्षर और १४ तथा १६ वेंभी हों तो ४ अक्षर जानने. यदि बहुत जगे फरहा हो तो बलवानकी संख्या पहिलेके तुल्य कहनी ॥ ५ ॥ प्रस्तारमें फरहा न हो तो प्रथम घरकी शकलके अब्जदांकसे जो संख्या निकले उतने अक्षर नामके जानने ॥ ६ ॥

अथ वर्णानाह ॥ तदर्थचक्रम्—

अधुनाखिलवर्णानामानयार्थविधिं ब्रुवे ॥ आद्यत्र योदशाभ्यां तु खण्डमेकं समुद्धरेत् ॥ ७ ॥ चक्रे नवाद्याक्षिगृहेब्जदाद्याः साबिज्दहाद्येकमतोविले

ख्याः ॥ अङ्ख्याङ्ख्यगाणांश्च तथाह्यधस्तात्सर्वेषु कोष्ठेष्वियमेवरीतिः ॥ ८ ॥ अबजदव्बजहुत्तीकलमनसफलकरशतससशखजजजजदह ॥

अब नामाक्षर निकालनेके लिये चक्र कहते हैं उपरोक्त ७।८ श्लोकोंका अर्थ इसी चक्रमें जानना–

अब्जदवर्णचक्रमिदम् ।

अलफ	वे	जीम	दल्	दछ टा	वाद	जे	हेवडो	तोय	ये	काफ्म. रजंवाल	लाम	मीम्	ननू	सीन्	यवना क्षर	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
÷	≐	⁝	≕	⁝	∸	≟	≑	≐	÷	⁝	≕	⁝	÷	÷	≡	
अ१	व२	ज३	द४	ह५	व६	ज७	ह८	त९	य१०	क२०	ल३०	म४०	न५०	स६०	अ७०	१
व	ज	द	ह	व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ८०	२
ज	द	ह	व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ	स९०	३
द	ह	व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क१००	४
ह	व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र२००	५
व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श३००	६
ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त६००	७
ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स५००	८
त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	स६००	९
य	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	प	प७००	१०
क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	प	य	अ७००	११
ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	प	य	ज	ज्व८००	१२
म	न	स	अ	फ	स	व	र	श	त	स	प	य	ज	ज्व	ग९००	१३
न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	प	य	ज	ज्व	ग	अ	१४
स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	प	य	ज	ज्व	ग	अ	व१००	१५
अ	फ	स	क	र	श	त	स	प	य	ज	ज्व	ग	अ	व	प	१६

यह चक्र चोर आदिके नाम निकालनेका है इसमें पूर्वोक्त उदाहरण मिलाके स्पष्ट मिलता है यह ऊपरका क्रम है ॥ तिर्यक् क्रम दक्षिणसे वामको तिरछा देखना है ॥ ७ ॥ ८ ॥

आद्यत्रयोदशाभ्यां च शकलं कारयेत्सुधीः ॥ प्रस्तारे यद्गृहे खण्डं तत्तुल्यं चोर्ध्वपंक्तिके॥९॥ अङ्कं चैव ततस्तस्योत्पन्नस्य शकलस्य च॥विज दहस्यमतेनाङ्कगेहस्यचतदङ्ककम् ॥ १०॥ तिर्यं क्क्रमेण देयानि चक्रेवर्णाकके द्वयोः।अङ्कयोश्च तलेयैश्च वर्णस्तत्प्रथमाक्षरम् ॥ ११ ॥ तुरीयश क्रकोद्भूतादेवंवर्णद्वितीयकम् ॥ नगतिथ्युद्भवा च्चापि वर्णमेवं तृतीयकम् ॥ १२ ॥ षोडशाशा जनेस्तुर्यवर्णमेवं समुद्धरेत्॥ विषमार्द्धखसंख्या द्खण्डेनार्णंतुपंचमम् ॥ १३ ॥ केन्द्रस्थशून्यसं ख्याकाद्विभरेखाङ्कसंयुतात् ॥ यत्खण्डं तस्य पूर्वोक्तमार्गेणार्णरसोन्मितम् ॥ ॥ १४ ॥ विश्वा च्चतुष्कस्य नभोगणेन तथैववर्ण नगसंख्यकं स्यात् ॥ एवं हराख्यार्णकदंबमुक्तमत्रापिमात्रा स्वमनीषयोह्या॥ १५॥ यस्य कस्यापिनामैवं तथा सृष्ट्यादिगस्य च ॥ नामानि कल्पयेद्वि द्वान्देशज्ञातिवशाच्छनैः ॥ १६ ॥

टीका-अब अक्षर निकासनेकी विधि कहते हैं कि, प्रस्तारके प्रथम और तेरहवें शकलोंको जर्ब देकर एक शकल बनावै वह शकल प्रस्तारके जितने घरमें हो उतने अंककोष्ठचक्रकी ऊपरकी पंक्तिके कोष्ठमें सीधे नीचे और वही शकल विजदह क्रमके जितने घरमें हो उतने संख्यांक तिर्छे कोष्ठमें देवे ऊपरके और तिर्छे संख्याके कोष्ठोंके सीधे जिस अक्षरपर मिले वह नामका पहिला

अक्षर जानना ॥९॥१०॥११॥अब दूसरे अक्षरज्ञानेकी विधि है कि, चौथी और चौदहवीं शकल मिलायके जो शकल हो उससे पूर्वोक्त क्रम करके दूसरा अक्षर नामका जानना ऐसेही सप्तम तथा पन्द्रह-वींसे उत्पन्न शकलसे तीसरा अक्षर जानना ॥ १२ ॥ ऐसेही १६। १७ शकलोंसे उत्पन्न खण्डसे चौथा अक्षर लेना। पंचमाक्षर जान-नेके अर्थ कहते हैं कि, प्रस्तार जितने विषम १। ३।५।७।९। ११।१३।१५ स्थान हैं इसके भी बिन्दु जोडे १६ से भाग देके जो शेष रहे उतनेही घर प्रस्तारमें जो शकल हो उससे पूर्वोक्त क्रम करके पांचवां अक्षर जानना ॥ १३ ॥ प्रस्तारके केन्द्र १।४।७। १० भावोंके शकलोंके जितने रेखा हों उनको दूना करके जितने उन चारोंमें बिन्दु हों उन्हें जोडके जो संख्या हो उसमें १६ का भाग देके जो अंक शेष रहे उतने घरमें जो शकल हो उससे छठा अक्षर जानना और १३।१४।१५।१६ घरोंके शून्य जोड़के पूर्वोक्त क्रमसे सातवां अक्षर जानना इसमें यह स्मरण रखना चाहिये कि, यदि वह शकल प्रस्तारमें न हो तो वह शकल विज्दहके जिस घरकी है उतने घर प्रस्तारमें जो शकल हो उससे कार्य करे ऐसी विधि अक्षर निकालनेकी कही है यहां (मात्रा) स्वर उन अक्षरोंके अपनी बुद्धिसे जानने ॥१४॥ १५॥ जिस किसीका नाम एवं मुष्टि गत वस्तुका नाम विद्वानने देश और जातिमें नामोंकी जैसी प्रथा प्रचलित हो ऐसा अपनी बुद्धिसे विचारके कहना ॥ १६ ॥

प्रथमाविश्वयुतेरुकलादलंविजदहेदशमं गृहमस्य
च ॥तदनुविस्तरषष्ठगृहाश्रितं तदुभयोन्मुखमण
सकारकम् ॥१७॥ तूर्यशक्रोत्थकंकीशंप्रश्नेतन्नव
मेगृहे॥तिर्यगष्टगृहानंदेप्राप्तंवर्णमकारकम् ॥१८॥

टीका–अब नामाक्षरका उदाहरण कहते हैं कि, प्रस्तारमें पहिले और तेरहवीं शकलको मिलायके उकला शकल हुई इसका घर विजदहमें दशम १० है और यही उक्ता प्रस्तारके छठे ६ घरमें है तो अब चक्रमें देखा कि, ऊपरकी सीधी पंक्ति (जो विजदहकी है) के दशमके सीधे नीचे और प्रस्तार क्रमांक जो किनारे हैं उनमेंसे छठे घरके तिर्यक्पंक्तिमें जहाँ इन दोनों अंक कोष्ठोंका मेल होता है तहाँ सकार है यह (स) अक्षरनामका आद्याक्षर जानना ॥ १७ ॥ पुनः उसी प्रस्तारके ४ । १४ शकल मिलायके अंकीश शकलहुई यह प्रश्नके नवम घरमें है विजदहके आठवें घरमें है इन ऊपरके ८ तिर्छे ९ घरोंके सीधेका कोष्ठ जहाँ मिलता है तहाँ (अ) अक्षरहै यह नामका दूसरा अक्षर जानना इसी प्रकार सभी अक्षरोंके उदाहरण जानने ॥ १८ ॥

अधुना प्रश्नवर्णानामानयं प्रोच्यते मया ॥ तन्वा
दिषोडशांत्यस्थैः खण्डैर्वर्णान्समुद्धरेत् ॥ १९ ॥
नवाद्यक्षिगृहे चक्रे पुरावद्धरफं लिखेत् ॥ तस्मिन्
स्वीयालयात्खण्डाज्ज्ञेयं वर्णमिहोक्तवत् ॥२०॥
प्रश्नेचेत्स्वगृहाभावः पुरः पृष्ठे च यावति ॥ गेहे
त्वनुक्रमात्तावत्पुरः पृष्ठार्णमुन्नयेत् ॥ २१ ॥ एवं
द्व्यब्ध्यष्टिगेहांतखण्डैर्वर्णास्तुषोडश ॥ रचयेद्र
म्लविन्दीरोमात्राश्चापि मनीषया ॥ २२ ॥

टीका–अब अन्य प्रकार नामाक्षर लानेका कहा जाता है कि, एकसे १६ पर्यंत शकलोंसे अक्षर लेने ॥ १९ ॥ सो ऐसा कि ९ । ७ । ५ घरोंमें प्रस्तार चक्रके जो खंड हों उनको हरफाक्रममें गिनना इनमेंसे जो शकल अपने घरकी हो उससे पूर्वोक्त क्रम

करके नामाक्षर जानना ॥ २०॥ यदि स्वगृही कोई भी न हो उन
९ । ७ । ५ के पहिले और पीछे देखना जहाँ प्रस्तार एवं हर्फांक
ममें स्वगृही हो उसके अनुसार पूर्व वा परेका अक्षर जानना बहुत
जगे हो तो उतनेही लेने ॥ २१ ॥ इसी प्रकार २ । ४ वा १६
घरोंसे १६ अक्षर लेले नाम रचना रमलजाननेवाले पंडितने करनी
उन अक्षरोंमें मात्रा अपनी बुद्धिसे जहाँ जैसी लगती हों युक्त
लेनी यहाँ देश एवं जाति प्रथासे नाम कहना ॥ २२ ॥

अथ चारस्फुटीकरणम् ।

यदानृपुंजेहरमाक्षिगोचरं विधातुमिच्छास्तितदा
ङ्कुरंकुरु ॥ तथेन्किलावं च विधायचिंतयेज्जमात
मत्रास्तिचयद्गृहाश्रितम् ॥ २३ ॥ तस्मिन्गृहे
साबितदाखिलेचेत्पूर्वेङ्कुरे चास्तिजनेषु चारः ॥
नत्रान्यथैवं नरयुग्मभागे चाद्याद्विधेरत्रहरोविमृ
श्य ॥ २४ ॥ तच्छेषस्याप्येवमेवयुगभागे च
पूर्ववत् ॥ विधिं कुर्य्यात्पुनश्चैवं यावत्स्यादेकसं
ख्यकम् ॥२५॥ अथेन्किलावेरिगतंजमातद्व्यंके
२ नकींशंनकिचाष्टमांगे ॥ प्रष्टास्तिचौरः स्वय
मेव चैवं वाच्यंप्रकारैरिषुभिर्विचिंत्य ॥ २६ ॥

टीका-चोरस्फुटीकरण कहते हैं कि, जब बहुत मनुष्योंके बीच
चोर प्रत्यक्षमें है तो उसको प्रकट करनेके लिये प्रस्तार करके
उसका इन्किलाव करना इसमें जिस घरमें जमात हो उसी घर
प्रथम प्रस्तारकेमें साबित दाखिल हो तो उस जन समूहमें चोर है
खारिजमुन्क्कीव हो तो उनमें चोर नहीं है जब चोर उस जनसमू
हमें ज्ञात हो तो उन मनुष्योंकी २ पंक्ति करनी पुनः पूर्वोक्त विधि

करके पंक्ति तब ऐसे ही विधिसे एक मनुष्य निश्चय करलेना ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ यदि इनकिलाबके छठे घरमें जमात हो दूसरे वा नवममें अंकीश अष्टममें नकी होप्रश्न पूछनेवालाही चोर है कहना ऐसे पाँच प्रकारसे चोरका विचार निश्चय करना ॥ २६ ॥

मतांतरम् ।

हुम्रानकीभ्यां च तथा विपश्चिन्निरीक्षयेद्धूरिज नेषु चौरम् ॥ भागद्वयं तत्र पुनश्च तद्वत्पुरोक्त रीत्यैकमितं हि यावत् ॥ २७ ॥

टीका-अन्यमत कहते हैं कि, प्रस्तारमें यदि हुम्रा और नकी शकल हों तो उस जन समुदायमें चोर देखना उन मनुष्योंके दो भाग करके पूर्वोक्त विधिसे एक मनुष्य निश्चय करना ॥ २७ ॥

मतांतरम् ।

श्रेणीजनानां स्वपुरे निधायक्षिप्ताक्षयुग्मेषु रसा द्रि खंडे ॥ याचाब्जदोत्थात्राहिसंख्यकास्यात्सा दक्षहस्तेन जनेषु देया ॥ २८ ॥ यस्मिन्समा प्तामनुजे सचौरोभूयाग्रिमाच्चेदाधिकापुरावत् ॥ तमेव चौरं रमलार्थवेत्तास्फुटं वदेदेवमसंदिहानः२९

इति रमलनवरत्ने अष्टमं रत्नम् ।

टीका-अन्यमत है कि, मनुष्योंकी पंक्ति अपने आगे बैठायके पाशा २ फेंकके प्रस्तार बनावै तब ५ । ६ । ७ भावोंमें जो खण्ड हैं उनके अबजद क्रममें जो संख्यांकहो उस संख्याको अपने दाहिने हाथसे गिने ॥ २८ ॥ जिसपर वह संख्या समाप्त हो वह चोर जानना यदि मनुष्य थोडेहों अंक संख्या अधिक होतो पुनर्दुबारा पूर्ववत् क्रमसे गिने इस प्रकार निश्चय करके रमलार्थ जाननेवालेने निःसंदेह स्पष्ट कहना ॥ २९ ॥

इति रमलनवरत्नेमाहीधरीभाषायांचौरनामकथनंनामाष्टमंरत्नम ॥ ८ ॥

अथ वर्षफलसाधनं नवमम् ।

सायनार्कजगेहर्षयुक्स्वाकृतिःस्वेष्टदेवं च मंत्रं स्मरन् ॥ सप्तधाप्राग्दलेह्नोजगद्वर्षसिद्ध्यैशुचिः पाशकौसुस्थिरात्माबुधःसंक्षिपेत् ॥ १ ॥ सर्वेषां मनुजानां च तद्दिनेचाब्दवेशने ॥ दिनेचान्यदिने शुभ्रे शरदां फलसिद्धये ॥ २ ॥ एवंद्विधा वर्षफलं जगन्मानवयोरिह ॥ तत्रादौ मनुजानां वै फलमाब्दं विरच्यते ॥ ३ ॥

टीका—अब नवमरत्नमें वर्षका विचार है कि, सायनमेष संक्रांतिके दिन पूर्वाह्नमें ज्योतिषी स्नानादिसे शुद्ध होके प्रसन्नतासे युक्त अच्छी आकृति (सूरतवावेष) बनायके अपने इष्टदेवता तथा मंत्रको स्मरण करता हुआ मंत्रसे सातवार पाशोंका अभिमंत्रण पूर्वक स्थिर आत्मा करके पट्टीमें फेंके ॥ १ ॥ तब प्रस्तार बनायके उसीवर्ष प्रवेशके दिन संपूर्ण मनुष्योंके शुभाशुभ सुखदुःख देशमें अन्न रोग सुखादि विचारे तथा प्रत्येक मनुष्यके ऐसे विचारके लिये उसीके जन्मादिन (वर्षप्रवेश) में विचारे अन्यभी शुभ दिनमें सालभरके फल सिद्धिके लिये विचारे ॥ २ ॥ इस प्रकार एकतो जगत्का एक प्रत्येक मनुष्यका सालभरका फल दो प्रकार यहाँ विचारना चाहिये इसके प्रथम मनुष्योंका वर्षफलकी रचना करी जातीहै ॥ ३ ॥

प्रथमादिदलैस्तत्र व्ययांतैश्चफलं पृथक् ॥ तनुद्रव्यादिभावानां पुष्टिं हानिं शुभाशुभैः ॥ ४ ॥ अशुभस्याऽपि शकुने स्वालयस्थस्य पुष्टिदम् ॥ फलं ज्ञेयं विशेषेण सबलस्य तथा बुधैः ॥ ५ ॥

खारिजादिभिरत्रापि निर्गमादिफलं भवेत् ॥
पुनरुक्त्यादिखंडानां तन्वादीनां शुभाशुभम् ॥ ६॥

टीका--तहां प्रथम आदिखण्डसे बारहवें भावपर्यंत तनु १ धन २ आदि स्थानोंका विचार शुभसे पुष्टि अशुभसे हानि पृथक् कहना ॥ ४ ॥ जो शकल अशुभ भी है परन्तु शकुन क्रमके स्व गृही होतो उस भावकी पुष्टि देतीहै विशेष करके पंडितोंने बलवान् शकलका फल कहना ॥ ५ ॥ खारिजादि खण्डसे निर्गम (निकलजाना) साबित आदिसे आगम (प्रवेश करना) फल होता है यहाँ आदि पदसे खारिजके समान मुन्कलीब और साबितके समान दाखिल भी जानना जिस भावकी शकल पुनरुक्त हो उसका फल विशेषतर कहना अर्थात् शुभ सकल शुभस्थानमें पुनरुक्त पडी हो तो शुभफल विशेष अशुभ शकल अशुभस्थानमें पुनरुक्त होतो अशुभफल विशेष और मध्यमें मध्यम जैसे अशुभ शकल शुभस्थानमें शुभशकल अशुभस्थानमें हो यहाँ मध्यमफल होताहै ॥ ६ ॥

अथ योगाः ।

प्रथमपंचमनंदनृपालयैरविकवीज्यदलं सुखकृन्मतम् ॥ तनुधनानुजबंधुसुहृन्नृपैः सुखमिहारतमः शनिजैर्नच॥७॥शुभदलैर्युतकेन्द्रमथादिशेत्सपदिसौख्यमाचिंतितवैभवम् ॥ मृतिगृहेगुरुभार्गवखण्डयुक्शुभदमारशनिज्ञदलैर्मृतिः ॥ ८ ॥
यदि च दाखिलमत्रधनायगं शुभमिहोत्सववित्तसुखाप्तिकृत् ॥ रिपुगृहं शनिभौमतमोदले

युंतमिहारिगदांतकरं भवेत् ॥ ९ ॥ सहजगेर
विभौमदलेऽनुजसुखमिहैनितमःशकलैनशम् ॥
व्ययगृहं शुभखारिजयुक्शुभव्ययकरंत्वशुभैर्यु
तमन्यथा ॥ १० ॥

टीका-पहिले पांचवें नवमें सोलहवें भावोंमें सूर्य शुक्र बृह
तिके शकल होंतो सुखकारी कहे हैं और १।२।६।३।४।१
इन भावोंमें मंगल, राहु, शनिके खण्ड होंतो सुख नहीं होगा ॥७
यदि केन्द्रों १।४।७।१० में शुभ शकल होतो तत्काल सुख ए
विना विचारित ऐश्वर्य होगा कहना यदि अष्टम स्थानमें बृहस्पति
शुक्रके शकल होंतो शुभ और मंगल. शनि, बुधके शकल होंत
मृत्युफल कहना॥८॥ यदि २।११ स्थानोंमें दाखिल शकल होंत
शुभफल धन सुखको करते हैं छठे स्थानमें शनि मगल राहु
दल होतो शत्रुभय रोगभयका नाश करनेवाला होवें ॥ ९
यदि तीसरे स्थानमें सूर्य वा मंगलकी शकल होतो भाईका सु
होगा यदि तहाँ शनि राहुके खण्ड होतो शुभ न होवे जो बारहवें
घर शुभ खारिज शकलसे युक्त होतो शुभकार्यमें और पापखण
होतो अशुभ कार्यमें धन खर्च होगा ॥ १० ॥

इत्थं प्रकारैर्बहुभिः प्रयत्नात्समाफलं वाच्यमथान्य
दूह्यम् ॥ मासाश्च तत्त्वादिदलैर्विचिन्त्याः श्रेष्ठाःशु
भाख्यैरशुभाश्च पापैः ॥११॥ यन्मासखण्डं यद्गृहे
पुनरुक्तं यदा भवेत् ॥ तद्गेहोत्थं फलं तस्मिन्मासे
योज्यं विचक्षणैः ॥ १२ ॥

टीका-ऐसे बहुत प्रकारोंसे संवत्सरफल कहना अब और क
हैं कि, महीनोंके फलके लिये प्रथमादि द्वादशभाव पर्यंत बा

महीने जानने जिस महीनेका खण्ड शुभ हो उस महीनेमें शुभफल और जिसमें अशुभखण्ड हो उसमें अनिष्टफल विचारना ॥ ११ ॥ जिस महिनेका खण्ड जिस घरमें पुनरुक्त हो उस घर संबंधी फल उस मासमें चतुर मनुष्योंने योजित करना ॥ १२ ॥

मासार्द्धगेहखण्डाभ्यामुत्पन्नं चेच्छुभं दलम् ॥ तदा शुभं च पुनरुक्तेस्थाने क्रमतः फलम् ॥ १३ ॥ मास खण्डं शुभाभ्यां चेदुत्पन्नं स्यात्तदाशुभम् ॥ मध्या भ्यांमध्यमं चैवपापाभ्यां नेष्टमीरितम् ॥ १४ ॥

टीका--मासखण्ड और गृहखण्डसे उत्पन्न यदि शुभ शकल हो तब शुभफल होगा ऐसेही पुनरुक्त स्थानमेंभी क्रमसे फल जानना ॥ १३॥ यदि मासखण्ड शुभशकलोंसे उत्पन्न हुआ है तो शुभफल होगा मध्यमोंसे उत्पन्न हुयेमें मध्यम और पापखण्डोंसे उत्पन्न हो तो अनिष्ट (बुराफल) कहा है ॥ १४ ॥

मैत्र्यामासार्द्धतद्गेहतत्वयोश्च शुभं भवेत् ॥ मास तत्स्वामिद्यर्द्धे च त्वेवं व्यस्तेविपर्ययः ॥१५॥ पुनरु क्तिगृहेप्प्येवमूह्यं रमलकोविदैः ॥ पुनरुक्तयर्द्धमासा र्द्धयोगोत्थंशुभमिष्टकृत् ॥ १६ ॥ माससाक्ष्यर्द्धयो मैत्र्यासर्वमेवशुभं भवेत् ॥ अशुभं वैपरीत्ये स्यान्म ध्यमं मध्यमे स्मृतम् ॥ १७ ॥ मासखंडप्रकारेण साक्षिखण्डं विचिंतयेत् ॥ खंडेशितुर्द्वितीयस्य खण्ड स्याप्प्येवमेव च ॥१८॥ विधिं कुर्यात्पुरोक्तं तु फलंते नोक्तवद्वदेत् ॥ खंडस्थविपरीतं यत् खंडंतस्यांगसंभ

वम् ॥ १९ ॥ तस्यापि पूर्ववत्सर्वंसाक्षिरीत्याफलं वदेत् ॥
एवं खंडैश्चतुर्भिस्तु फलंमासे विचिंतयेत् ॥ २० ॥

टीका–यदि मासखण्डोंकी और तत्वोंकी परस्पर मैत्री हो तो शुभफल उस मासका होगा जानना ऐसेही मासखण्ड और उसके स्वामीके शकलोंके मित्रताभी शुभफल होता हैं मित्रता उनके परस्पर न हो उत शत्रुता होतो अनिष्टफल जानना ॥ १५ ऐसेही रमल जानने वालोंने पुनरुक्त घरोंके मित्रता शत्रुतासे फल कहना॥ पुनरुक्तिखण्ड मासखण्डक परस्पर मेलसे जो शुभ शकल हो तो शुभफल अशुभसे अशुभफल करता है ॥ १६ ॥ मासखण्ड और साक्षिखण्डकी मैत्रीसे सभी शुभफल होता है विपरीत (शत्रुता) होनेमें अशुभफल और मध्यमें मध्यम होता है ॥ १७ ॥ मासखण्डके तरह साक्षिखण्डभी जानना खण्डके स्वामीका और दूसरे खण्डकी भी इसी प्रकार पूर्वोक्त विधि करनी तब उसके अनुसार उक्तफल कहना ॥ १८ ॥ १९ ॥ इसकाभी पहिले साक्षिके रीतिसे फल कहना इस प्रकार उक्त चार खण्डोंसें महीनेमें फल जानना२०

अथात्र वक्ष्ये विधिवद्दशासूक्ष्मदशा अपि ॥ साद
शासाबिताधीनातस्मादादौतुसाबितम् ॥ २१ ॥
कर्तव्यं तद्विधिं वक्ष्ये पूर्वशास्त्रानुसारतः ॥ प्रस्ता
रात्पाशकोद्भूताद्विश्वकर्मायशक्रकैः ॥ २२ ॥ दलै
श्चतुर्भिःप्रस्तारं पूर्ववद्रचयेत्सुधीः॥ सदृशौतनुविश्वौ
चेद्द्विखेआयेऽब्धिशक्रके ॥ २३ ॥ तदातत्सा
बितं ज्ञेयं प्रस्तारं त्वीदृशं बुधैः ॥ नचेद्यदापुनस्त
स्माद्विश्वादिकचतुष्टयात् ॥ २४ ॥ प्रस्तारं पूर्व

वत्कृत्वा तत्र तच्च विलोकयेत् ॥ एवं पुनःपुनः कुर्यां
द्यावन्न स्याच्च साबितम् ॥ २५ ॥

टीका—अब यहाँ विधिपूर्वक दशा और सूक्ष्मदशा भी कहताहूं कि वह दशा साबितके आधीन है. इसवास्ते प्रथम साबित करना चाहिये इसकी विधि पूर्वशास्त्रानुसार कहताहूं कि पाशा फेंकनेसे जो प्रस्तार, बना उसके १३।१०।११।१४ खण्डोंको प्रथम आदि ४ स्थानोंमें स्थापन करके प्रस्तार बनाना उसमें पहिलेके समान तेरहवाँ और दूसरेके तुल्य दशम तीसरेके सदृश ग्यारहवाँ और चौथेके समान चौदहवाँ होतो वह प्रस्तार पंडितोंने साबित जानना साबितका यही लक्षण है यदि प्रथम प्रस्तारमें साबित न होतो फिर उसी प्रस्तारके १३।१४।१५।१६ खण्डोंको प्रथम आदि ४ स्थानोंमें स्थापन करके फिर प्रस्तार बनावे उसमें साबित मिलेगा इसमेंभी न मिले तो १३।१४।१५।१६ से प्रस्तार बनावे जब तक साबित न मिले तब तक ऐहीसी विधि करतारहे॥२१-२५॥

षष्ठादूर्ध्वं न तद्याति साबितं रसमध्यगम् ॥ एका
द्येसुखसंपत्तीलाभं सौख्यं च मध्यमम् ॥ २६ ॥
कष्टं मृत्युश्च विज्ञेयो रसांते साबिते क्रमात् ॥
साबितक्रममेतद्धि विज्ञेयं सर्वदा बुधैः ॥ २७ ॥

टीका—इस प्रकार विधि करनेमें छःके भीतर अवश्य साबित आ जाता है छःसे ऊपर प्रस्तार साबित लानेमें नहीं करने पडते इस लिये छवोंके फल कहतेहैं कि, प्रथम प्रस्तारमें साबित आवे तो सुख संपत्ति होती है दूसरेमें आवे तो लाभ होवे तीसरेमें आवे तोसुख चौथेमें आवे तो मध्यम फल पांचवेंमें आवे तो कष्ट मिले और छठेमें आवे तो मृत्यु जाननी ऐसे क्रमसे छः पर्यंत साबितके फलहैं ऐसा साबितक्रम पंडितोंने सर्वदा जानना ॥ २६ ॥ २७ ॥

स्थिरप्रस्तारसंख्येन भजेद्वर्षमितिं दिनैः॥ प्रस्ता
राणां दशालब्धा क्रमतः परिकीर्तिता ॥ २८ ॥
सादशारविभक्तास्याल्लब्धासूक्ष्मदशाख्यका ॥
फलंत्वेकैकशकले सूक्ष्मभुक्त्यनुसारतः ॥ २९ ॥
पूर्वोक्तविधिना ज्ञेयं मासखण्डोक्तवर्त्मना ॥
साबिताद्येथप्रस्तारेदशात्वाद्याफलप्रदा ॥ ३० ॥
एवं द्वाद्यादिके ज्ञेया द्वितीयाद्यादशाबुधैः ॥
एवं दशाफलं वाच्यं पुनरन्यद्विधिं ब्रुवे ॥ ३१ ॥

टीका-स्थिर प्रस्तार (जिसमेंसाबित पायाहै) के संख्यासे वर्ष मिती ३६० दिनोंमें भागदेना लब्धोंकको साबित प्रस्तारकी दशा मानना ॥२८॥ उस दशामें १२ का भाग देनेसे सूक्ष्म दशा होती है तब प्रत्येक शकलके सूक्ष्म दशाके अनुसार पूर्वोक्त क्रमकरके कहै ॥२९॥ जिस महीनेका जो खण्डहै उसके अनुसार उस महिनेमें फल कहना पहिले प्रस्तारमें साबित आवे तो पहिली दशाका दूसरेमें दूसरीका ऐसे क्रमसे फल जानना इसका उदाहरणहै कि, जैसे चौथे प्रस्तारमें साबित आयाहो तो ४ से वर्ष संमिति३६०दिनोंमें भाग लिया लब्ध ९० भये प्रत्येक प्रस्तारमें ९० । ९० दिन आये ऐसे ४ विभागोंमें वर्षभरका फल कहना ॥ अंतर्दशाके लिये विधि है कि, उक्त ९० दिनकी दशामें १२ का भागदेनेसे ७ दिन ३० घटीकी एकएक अंतर्दशा भई एक एक शकलोंमें ७ दिन३० घटीका फल कहना ऐसे प्रथम प्रस्तारसे पहिले ९० दिनका दूसरेसे दूसरे ९० का तीसरेसे तीसरे और चौथेसे चौथै ९० का कहना ऐसेही जितनी संख्यापर३६० में भागदिया हो उतनेही दशाओंका फल कहना छः अधिक संख्या यहाँ नहीं होती इस रमलमतमें वर्षप्रवेश

मेष सक्रांतिसे माना जाताहै वर्षभी सभी उसी संक्रांतिसे जानना यह दशाफल कहा अब फिर और विधि कही जाती है॥ २०।३१॥

मासखण्डदशाधाभ्यामुत्पन्न स्यात्फलाहयम् ॥
तस्मात्सूक्ष्मदशायां तु फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ३२
तच्चेच्छुभं शुभे गेहे पुनरुक्तं सवीर्यकम् ॥ तदा
फलं शुभं वाच्यमशुभं त्वन्यथा भवेत् ॥ ३३ ॥
फलं गेहानुसारेण देहवित्ताद्यनुक्रमात् ॥ खा
रिजादिप्रभेदैस्तु निर्गमादिवदेद्बुधः ॥ ३४ ॥

टीका--मासखण्ड दशाखण्ड जो शकल उत्पन हो उस फला हय कहतेहैं उसके अनुसार सूक्ष्मदशाका फल चतुर ज्योतिषियोंने जानना जैसे पहिले प्रथममासके पाशकोत्थ प्रस्तारमें कोईसी शकल हो तहाँ अंतर्दशा देखनी हो तो पहिले साबितकी शकल देखे उहाँ जो शकलहों उन्हें एककरे तब शुभाशुभ जैसी वह शकल बनी हो वैसा फल कहे ॥ ३२ ॥ वह शकल शुभ हो तथा शुभ घरमें पुनरुक्तहो बलवान हो तो शुभफल कहना अशुभहो अशुभ घरमें हो बलहीन हो तो अशुभ फल कहना ॥ ३३ ॥ तन धन आदि पूर्वोक्त भाव विचारके अनुसार शरीर १ धन २ आदि क्रमसे फल कहना खारिज आदि भेदोंसे निर्गमादि कहना जैसे खारिज हो तो घटना दाखिल हो तो बढना ऐसा संपूर्ण विचारके प्रत्येक फल पंडितने कहने ॥ ३२--३४ ॥

अथाब्देशप्रकारः ।

इदानीं सर्वजंतूनां चमत्कृतिकरंपरम् ॥ विधिं
च वक्ष्ये येनाऽब्दे फलं सर्वं स्फुटं भवेत् ॥ ३५ ॥
प्रस्तारे साविताख्ये तु तनुविश्वौ श्रुतीन्द्रकौ ॥

तिथिशैलौ दशाष्टौच हत्वा कृत्वाब्धिखण्डकम्
॥ ३६ ॥ चतुर्भ्यो द्वे तथा द्वाभ्यामेकं स्याद्वर्ष
पश्चसः॥तस्य पूर्वोक्तमार्गेण फलं ब्रूयाद्विचक्षणः
॥३७॥ खारिजादिभिरस्यैवभेदैर्वागमनादिकम्॥
पुनरुक्तयापि तस्यैव तत्तद्भेदान् वदेद्बुधः ॥ ३८ ॥

टीका-अब यहाँ समस्त जीवोंको परम चमत्कार करनेवाली विधि कहताहूं जिससे वर्षमें फल स्पष्ट होजाता है ॥ साबित नाम प्रस्तारमें १। १३। तथा ४। १४ तथा १५। ७ और १०।८ भावोंके शकलोंको हनन करके ४ शकल करने ॥ इन ४ सेभी दो फिर दो से भी एक बनायके जो आवै वह वर्षेश होता है इसके पूर्वोक्त मार्गसे चतुर ज्योतिषी फल कहे ॥ इसके खारिज आदि भेदोंसे अथवा गमनादि भेदोंसे और पुनरुक्ति करके भी विद्वान् उन उन भेदोंको कहे ॥ ३५-३८ ॥

अथ मासप्रकारः।

यदि मासफलानीह ज्ञातुमिच्छा भवेत्तदा ॥
साबितप्रस्तरोद्भूतैः पुरोक्तैर्वेदखण्डकैः॥३९ ॥
कुर्य्यात्प्रस्तारमस्मात्तु पूर्वोक्तादिदलैर्बुधः ॥
कृत्वाद्वैचैतयोरेकं यत्तस्यादाद्यमासिकम्।४०।
अनेनादिममासेतुपूर्ववत्कथयेत्फलम् ॥ आद्य
मासोद्भवैर्वेदखण्डकैश्च पुनस्तथा ॥ ४१॥ द्विती
यमासप्रस्तारस्तस्मात्तद्वत्तृतीयके । एवं पुनः
पुनः कुर्य्याद्यावन्मासाश्च द्वादश ॥४२॥ तेभ्यः
फलं च मासानां पूर्वोक्तं प्रवदेत्सुधीः ॥ ४३ ॥

टीका-अब मासेश प्रकार कहते हैं कि यदि मासफल जाननेकी यहां इच्छा हो तो साबित प्रस्तारके पूर्वोक्त १। १३। ४। १४।

१५। ७। १०। ८ खंडोंसे प्रस्तार बनावै इस प्रस्तारके पूर्वोक्त ४ दलोंसे क्रमशः एक शकल लेवै उससे पूर्वोक्त विधि करके प्रथम मासका फल कहे ऐसेही प्रथममास प्रस्तारके ४ खंडोंसे पुनः दूसरे महीनेका प्रस्तार बनावै इससे भी उसी विधि करके तीसरा तीसरेसे चौथा ऐसे फिर फिर करके बारह महीनाके १, २ प्रस्तार बनावै उनसे पूर्वोक्त खारिजादि क्रम करके मास फल पंडित कहै ॥ ३९-४३ ॥

दिने फलेच्छुः प्रथमाच्च मासात्पूर्वोदितैर्वेददलैः प्रकुर्यात् ॥ प्रस्तारकं त्वाद्यदिनस्य तत्स्यात्तस्मात्ते पुराद्वाद्वितयस्य मासः ॥ ४४ ॥ तस्मात्तृतीयस्य पुरोक्तमेवं भूयोऽपि यावद्गगनत्रिसंख्यम् ॥ मासेषु तेभ्योऽब्धिदलैर्द्विखण्डे ताभ्यामथैकं पुनरेषु कार्यम् ॥ ४५ ॥ तत्तन्मासेष्वनेनैव खण्डेन फलमीर्यते ॥ एवं द्वादशमासेषु खण्डानां चिन्तयेत्फलम् ॥ ४६ ॥

टीका-मासफलसे उपरांत दिन फल चाहनेवाला पूर्वोक्त ४ खंडोंसे प्रस्तार बनावै प्रथम दिनका होगा उससे तीसरेका तीसरेसे चौथेका क्रमसे दिनेश खण्ड निकाले जैसे एक महीनेसे दूसरा उससे तीसरा इत्यादि पहिले कहा है इसी प्रकार प्रत्येक दिनकीभी विधि करनी जबतक ३० दिन स्पष्ट होते हैं तबतक वही विधि करता रहै जो प्रस्तार आया है उसके पूर्वोक्त खण्डों४ से दो, फिर एक करना ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ऐसा करनेसे उन महीनोंमें मासफल दिनखण्डोंसे दिनफल पूर्वोक्त खारिजादि भेदोंसे विचारके कहना ऐसे १२ महीनोंके फल वर्षमें विचारने ॥ ४६ ॥

अथ जगद्वर्षसाधनम् ।

यदाविश्वफलं वक्तुं रम्लवित्कुरुते मनः ॥ तदा पूर्वोदिते काले संक्षिपेत्पाशकौ सुधीः ॥ ४७ ॥ कुर्यात्पूर्वविधिं तत्र रम्लविद्वर्षपावधि ॥ विधा यवर्षपं तेन वक्ष्यमाणं फलं वदेत् ॥ ४८ ॥

टीका--अब सारे संसारका वर्ष साधन कहते हैं कि, जब दुनियांका शुभाशुभ फल सालभरके कहनेकी इच्छा रम्लज्ञकी हो तो पूर्वोक्त मेष संक्रांतिके दिन पंडितने पासा फेंकना ॥४७॥ तिससे पूर्वोक्त विधि ४ शकलोंसे उक्त क्रमसे एक शकल निकालके सालभरका फल जो आगे कहा जाता है कहना ॥ ४८ ॥

अथ वर्षपति खण्डानां फलानि ।

लह्यानं ≡ं यदि तद्दलङ्कशालिनः सर्वे नितांतं जनाः स्वाचाराः शुभकर्मिणःप्रतिदिनं कृष्यन्नवृद्धिर्मुहुः ॥ ईतेः स्वल्पभयेऽपि भूः सुखवती वेदांघ्रिदासोद्भवं किंचित्कष्टमिहैशदिग्जनपदेष्वे तत्फलं कूर्मतः ॥४९॥ खण्डंकब्जुलदाखिलं ═ः च बहुधा व्यापारलाभो नृणां पुण्यार्द्धिस्तरुजामृतोपमफलानां भक्षणं स्वस्करम् ॥ भूपानीतिरताः प्रजावनरताःस्वस्थं जगन्निर्भयं वृद्धिश्चोत्तमवस्तुनः फलमिदं प्राच्यां भवेत्कूर्मतः ॥ ५० ॥

टीका-वर्षेश शकलोंके प्रत्येक फल कहते हैं कि यदि लह्यान शकल वर्षेश हो तो सभी मनुष्य निरंतर सुखी रहेंगे अपने अपने आचारोंमें तत्पर रहेंगे शुभकर्ममें प्रवृत्त रहेंगे. वारंवार प्रतिदिन खेती एवं अन्नकी वृद्धि होती रहेगी अतिवृष्टि अनावृष्टि प्रभृति

सात ईतियोंका स्वल्प भय होगा तौभी पृथ्वी सुखी रहेगी. चौपाये और दासजनोंको थोडा कष्ट होगा, (कूर्म) पृथ्वीके बीचसे ईशानदिशाके देशमें यह फलविशेष जानना, कूर्म यहां चक्र जानना तिस कूर्म चक्रसे दिशा साधन करना ॥ ४९ ॥ कब्जुल दाखिल शकल ⚏ में मनुष्योंको व्यापारमें लाभ बहुत होवे पुण्य बढे वृक्षके अमृतसमान फलोंका भक्षण करना मिले श्रेय होवे राजा न्यायमें तथा प्रजाके पालनमें तत्पर रहैं संसारमें स्वास्थ्यता एवं निर्भय रहे उत्तम वस्तुकी वृद्धि होवे यह फल कूर्म चक्रके पूर्व दिशामें जानना५०

कब्जुलखारिजकं ⚏ यदा च जनता चोद्विग्नचि
ताभृशं ग्रीष्मोष्णत्वमनीतिवर्तिकुभुजोवृष्टिर्भवे
द्भूयसी ॥ नीचस्तेयविषाग्निदंशककृतं चास्वा
स्थ्यमंहोमिथोवार्तातश्च मृतिर्नृणां कमठतो नैर्ऋत्य
देशे फलम् ॥ ५१ ॥ जमात ☰ मिहतद्भवेद्बहुपदा
र्थं वृद्धिर्नृणां सुनीतिसुखयुग्जनाकफरुजोत्थपीडा
क्वचित् ॥ धराभवतिभूरुहाः सुफलपुष्पपत्रांकुरा
स्तथोत्तरगतंफलंकमठतश्च पाश्चात्यगम्॥ ५२ ॥

टीका–कब्जुल खारिज शकल ⚏ हो तो संसारमें सब मनुष्योंके चित्त उद्विग्न विशेष करके रहैं ग्रीष्मऋतुमें गर्मी ज्यादा पडे राजा अन्यायमें प्रवृत्त रहैं वर्षा बहुत होवै नीचजन, चोरी, विष, अग्नि, डसनेवाले जानवर इनसे (दुःख) अस्वास्थ्य रहै परस्पर बुराई करते रहैं मृत्युसमाचार बहुत मिलें यह फल कूर्मचक्रके नैर्ऋत्य दिशामें जानना ॥ ५१ ॥ जमात ☰ शकलका फल है कि, बहुतसे पदार्थोंकी वृद्धि होवे मनुष्योंकीभी वृद्धि होवे मनुष्य अच्छी नीति एवं सुखसे युक्त रहैं कहीं कफ रोगसे पीडा होवे

पृथ्वी, बृक्ष, उत्तम फल, पुष्प, अंकुरोंसे युक्त रहै यह फल कूर्मचक्रके उत्तर और पश्चिम दिशामें जानना ॥ ५२ ॥

स्याच्चेत्तत्फरहा ⸫ प्रजासुखसुतोत्पत्तिर्महर्घान्तरं ह्यन्नादेश्च समर्घमर्थनिचयः शश्वत्क्षितौ मङ्गलम् ॥ कार्यादभ्रनृपाः सुवृष्टिरतुलापारीक्षजारर्द्धयः काबुलरोमकमिश्रकेषु कमठात्स्यात्पश्चिमेऽदः फलम् ॥ ५३ ॥ जनातकानल्पांतनुसलिलवर्षातिपवनं महर्घोद्वेगोबाभृतककुहकानीतिनृपतिः ॥ तथा मध्येदेशे विपुलबलिनो भूमिपतयो यदोक्लाख्यं ⸫ मध्ये कमठपरतो भूमिचलनम् ॥ ५४ ॥

टीका-वर्षेश फरहा ⸫ हो तो प्रजा सुखी रहे पुत्र पैदा हो भाव बदले अन्नादि मंद बिकें धनसंचय होवे वारंवार दुनियामें मंगल हों राजा बहुतसे उद्यम शुभ कार्यकरैं अच्छी वृद्धि होवै रत्नादिकोंके परीक्षक (जौहरी) एवं (जार) परस्त्रीगंताओंकी वृद्धि होवे काबुल, रूम मिश्र देशों तथा कूर्मचक्रके पश्चिमदिशामें यह फल विशेष जानना ॥ ५३ ॥ उक्ला ⸫ शकल होतो मनुष्योंको बहुत क्लेशमिले पानी कम बर्षे वायु अधिक चले अन्नादिकोंका भाव तेज होवे अथवा मनुष्योंको उद्वेग रहे रोग रहे दास गुलाम आदिकोंसे उपद्रवहों राजा अन्याय करे मध्य देशके राजा बलवान् रहें और भूकंप होवे यह फल कूर्म चक्रके मध्यम देशमें जानना ॥ ५४ ॥

अंकीशं ⸫ स्वल्पवृष्टिर्विफलघनचयोरोगवृद्धिर्नराणां काठिन्यं कार्यसिद्धावरिजनवशगोद्विग्नचित्ता नृपाः स्युः ॥ स्यादन्नं वै महर्घं कुमतिजनसुखं श्रेष्ठपुंसां क्षयः स्यादेतत्कूर्मात्प्रतीच्यां फलमखिलमतश्चान्यदेशेल्पकं स्यात् ॥ ५५ ॥

हुम्रा ☰ स्यात्स्वल्पवृष्टिर्द्रविणचयहरोनिर्णय
श्चौरचारो धैर्याभावः प्रचण्डानिलगतिरवनीशाः
कुमार्गा नृमृत्युः ॥ दुःसाध्यं कर्मपुंभिस्तरुषु फल
चयोर्थाप्तिहर्षौनॄणां च कारूका हर्षयुक्ता दहन
दिशि फलं कूर्मतो मध्यमेऽपि ॥ ५६ ॥

टीका-अंकीश ☰ शकल आवे तो वर्षा कम होवे मेघ बहुत घिरे रहें परंतु व्यर्थ जावें मनुष्योंको रोग वृद्धि होवे कार्य्य सिद्धिमें कठिनाई पडे राजालोग शत्रुजनोंके वशमें होकर उद्विग्नचित्त रहे अन्नका भाव तेज होवे दुर्बुद्धिवाले मनुष्योंको सुख मिले श्रेष्ठ मनुष्योंका क्षय होवे यह संपूर्ण फल कूर्म चक्रके पूर्वदेशमें विशेष अन्य देशोंमें थोडा होवेहै ॥ ५५ ॥ हुम्रा ☰ शकल होतो वर्षा अल्प होवे जगे जगे चोरीके अनुसंधान होते रहैं चोर निर्भय होके फिरें ॥ धैर्य सभीका जातारहे वायु अति कठोर चले राजा कुमार्गमें चलें मनुष्य बहुत मरें कार्य करना पुरुषोंको कठिन होजावे॥ वृक्षोंमें फल बहुत लगें और मनुष्योंको धनकी प्राप्ति एवं हर्षभी होवे (कारु) शिल्पज्ञ राज-बढई आदि खुशरहें यह फल कूर्म चक्रके आग्नेयदिशा तथा मध्य देशमें भी जानना ॥ ५६ ॥

स्यात्खण्डं तद्बयाजं ☰ प्रवासितमनुजाः सिद्ध
कार्य्या मुदाढचा द्रव्यांधोनीतिविद्याभ्यसनतारि
जला जीविनां शश्वदृद्धिः॥मिष्टान्नानां च भोज्यं
प्रमुदितनरपाश्चातिवृष्टिर्जनोयं　　सौख्याढयः
संततं स्यात्फलमितिगदितं कूर्मतो वायवीये ॥५७॥

टीका-बयाज ☰ होतो परदेश गये मनुष्योंके कार्य सिद्ध होवें और खुशरहें तथा धनके व्याज खानेवाले (साहूकार) नीति विद्याके अभ्यासी और नाव जहाज आदि जल कर्मसे आजीवन

करनेवाले इतनोंको वारंवार समृद्धि मिलती रहे मीठे अन्नोंके पदार्थ भोजनको मिलें राजा प्रसन्न रहे वर्षा बहुत होवे मनुष्य सुख युक्त बराबर रहें फल कूर्मचक्रके वायव्य दिशामें जानना ॥ ५७ ॥

नुस्रुत्खारिजकं यदा नृपकृतं दण्डं च तज्जं भयं
वृष्ट्यल्पाहरहर्षचण्डपवनातंकर्द्धि वित्तक्षयम् ॥
मध्यान्धो बलिपूर्वभूपसलिलांतर्मग्नभूयस्तरीसा
मर्कंदनिशारवोखरगतं स्यात् कूर्मतः प्रागिदम्
॥ ५८॥ नुस्रुद्दाखिलमन्नलोकसुखसंपत्त्यंबुवृष्ट्य
र्द्धयोवृक्षेष्विष्टफलर्द्धि सस्यविभवाभीत्युग्रवित्त
र्द्धयः॥धर्मर्द्धिर्जनतासुनीतिरवनीपालेषु सर्वत्रशं
तुर्किस्ताननिशारवोखरगतं ज्ञेयं च कूर्मोत्तरे॥५९॥

टीका-नुस्रुत्खारिज = से राजासे दंड पडे राजासे भय होवे-वर्षा थोडी होवे चोर खुशरहें वायु कठोर चले रोग बढे धननाश होवे मध्यदेश एवं पूर्व देशके राजा बलवान् होवें नाव जहाज बहुधा जलमें डूबें समर कन्द, बुखारा, नैशारपुर और कूर्म चक्रके पूर्वदिशामें यह फल पूर्ण जानना ॥ ५८ ॥ नुस्रुद्दाखिल शकल हो तो अन्नका सुख होवे लोक सुखी रहें संपत्ति बढे जलकी वृद्धि होवे वृक्षोंमें मनमानते फल संपत्ति होवें अन्न बहुत होवे मनुष्य निर्भय रहें उग्र कर्मोंसे वित्तसमृद्धि होवे धर्म बढे मनुष्योंकी वृद्धि होवे राजाओंमें नीति अच्छी रहे, सर्वत्र (शुभ) मंगल होवे तुर्किस्तान निशारव, समरकंद, इन देशोंमें यह फल विशेष तथा कूर्म चक्रके उत्तरमें जानना ॥ ५९ ॥

खण्डं चातवखारिजं खरतरो वातोरुजश्चोष्णजाः
शीतोष्णाधिकतातथाल्पविभवो लोकेल्पवृष्टिः

कुवाक्॥ कैङ्कर्यांफलभूपकोपमलिनाश्चोपद्रुताः स्युः प्रजा मज्जन्तीतनुतोयकूपहरिभीत्याद्यं च कूर्मान्तरे ॥ ६० ॥ वृष्टिः स्वल्पतरानकीयदिभ वेर्द्दीर्घाः स्वनोविद्युतां पातोन्नादिमहर्घताबधकरी चौरादिभीतिस्तथा॥ नैराश्यंनृपशत्रुवृद्धिजनताऽस्वास्थ्यंतथोद्विग्नतातुर्कस्तानसुजंगवालगफलं कूर्माङ्गतश्चोत्तरे ॥ ६१ ॥

टीका–अतवेखारिज शकल ⁚ हो तो प्रचंडवायु चलै गर्मीसे रोग पैदा होवे शीत तथा गर्मीकी अधिकता रहे लोगोंका ऐश्वर्य कमरहे वर्षा कम होवे दुर्वचनता बढै सेवा निष्फल होवै प्रजा राजकोपसे मलिन एवं भयभीत रहे जल थोडेहों तालाव कूप आदियोंमें वस्तु डूबें सर्प आदियोंका भय होवे यह फल कूर्म चक्रके मध्य देशमें जानना॥६०॥नकी ⁚ शकल हो तो वर्षा अल्प होवे मेघोंके बड़े शब्द होवें बिजली बहुधा गिरै अन्न भाव तेजहोवे डाकू चोर आदियोंका भय होवे निराशता होवे राजाओंके शत्रुबढें मनुष्योंका स्वास्थ्य अच्छा न रहे उद्विग्नता रहे तुर्कस्तान एवं जंगवाल देशमें और कूर्म चक्रके उत्तरमें यह फल विशेष होगा ॥ ६१ ॥

भवेदतवदाखिलं ⁚ जनमुदोतिभव्यानृपामही जलपरिप्लुतोद्वहनवित्तधान्यर्द्धयः ॥ सुधोपम फलर्द्धियुक्ततरुलतातिवर्षं फलं प्रतीचिदिशि-कूर्म तो रुमककेचशामे भवेत् ॥६२॥ रत्नामात्य सुगंधिलेखकज ानां हर्षवृद्धिः क्षितौ स्वामित्वं च नृपेषु सेवकजनाः कष्टंभुजाश्चानिशम् ॥स्या देतद्दलमिज्तमाख्य ⁚ मवनीसत्कर्मलाभा

न्विता भूपास्तत्फलमुत्तरेतुबहुलंकूर्मेत्तथापश्चिमे ॥ ६३ ॥ तरीक ⁝ मिहतद्दलं ह्यतुलवृष्टिवायूपुरोजनाः कलुषकर्मिणः पिशुनदूतमिथ्यागिरः॥ प्रभूतविभवावणिग्बहुविवृद्धिभूमिभ्रमः फलंत्वनिलदिग्दले भवति कूर्मतश्चोत्तरे ॥ ६४ ॥

टीका-अतवेदाखिल ⁝ शकल होतो मनुष्य खुश रहें राजा ऐश्वर्य वृद्धि पावें पृथ्वी जलसे भीगी रहे अर्थात् वर्षा उत्तम होवे तथा फल धन धान्यकी समृद्धि रहे वृक्ष एवं लता अमृत समान फल समृद्धिसे युक्त रहें यह फल विशेषतः कूर्मचक्रके पूर्वदिशा और रूम देश एवं शामदेशमें जानना ॥ ६२ ॥ इज्जतमा ⁝ शकलसे रत (अमात्य) वजीर लोग सुगंधि वस्तु लिखनेसे आजीवन करनेवाले इतने वृद्धिको प्राप्त पृथ्वीमें होवे राजाओंमें स्वामित्व बढे सेवक जन नित्य कष्ट भोगे पृथ्वीमें शुभ कार्य होवें जिनका लाभ राजे लोग उठावें यह फल कूर्म चक्रके उत्तर तथा पश्चिम दिशामें विशेष जानना ॥ ६३ ॥ तरीक ⁝ शकल हो तो वर्षा तथा वायु बहुत होवे पुरोंके मनुष्य पापकर्मी चोर होंवे दूत जन झूठ बोलें व्यापारी लोगोंका ऐश्वर्य बढे बहुत वृद्धि होवे पृथ्वी कांपे यह फल आग्नेय तथा उत्तर दिशाकूर्म चक्रमें विशेष जानना ॥ ६४ ॥

प्रोक्तं मयैतत्फलमब्दपस्य रम्ले नृणां चापि वदेत् स्वबुद्ध्या॥यदस्त्यशुद्धं च विगर्हितार्थं तद्रागमुत्सृज्य बुधैः सुशोध्यम्॥६५॥ न पदच्छेदपदार्थविग्रहार्थान्वयसद्भावनिरुक्त्यलंकृतीश्च ॥ परिवेद्मि तथापि मेशिशुत्वमार्य्याः प्रीतिपराः सदा क्षमध्वम् ॥ ६६ ॥ रम्लांबुधेः सारमिहार्यवर्य्यै

गृहीतमस्यापि च सारसारम् ॥ कृतं मयैतन्नवर
त्नसंज्ञंप्राज्ञैः सयत्नैः सततं विचिन्त्यम् ॥६७॥

टिका–ग्रंथकर्ताकी उक्ति है कि,मैंने यह वर्षेशका फल कहा, इस रम्लशास्त्रमें मनुष्योंको अपनी बुद्धिसेभी विचारके युक्तिसे कहना इस ग्रंथमें जो अशुद्धिहो तथा निन्द्य अर्थ हो वह पंडितोंने राग अमर्ष छोड़के संशोधन करना ॥६५॥ मैं पदच्छेद, पदार्थ समास व्युत्पत्ति, सद्भाव, निरुक्ति अलंकारभी कुछ नहीं जानताहूँ तौभी मेरी बाल्यताको श्रेष्ठजन सर्वदा क्षमा करें॥६६॥यह ग्रंथ रम्लरूपी समुद्रका सार मैंने किया है इसमें वडे शास्त्रोंसे सारकाभी सार लेके नवरत्न संज्ञक किया है इसे बुद्धिमान् यत्नसे वारंवार विचारें ६७॥

ग्रन्थकर्तृवंशवर्णनम् ।

आस्ते यद्व्रजभूककुद्धरिपदे ध्यानावधूतांहसो
यस्मिन्नंदसुतं स्मरंति सुधियो वृंदावनं सद्धनम्॥
आसीत्कुञ्जविहारि–सेवनरतस्तत्रावनीशार्चितो
गोस्वामीललिताप्रसादविलसन्नाम्नासतांमण्डनः
॥ ६८ ॥ यस्तस्यात्मजतामियायभगवद्भक्तो
मदन्मोहनःसोवात्सीत्किल नारनौलनगरे काय
स्थवृन्दार्चितः ॥ तत्सूनुर्मतिमान् बुधार्चितपदो
ज्योतिर्विदां भास्करो विद्यासक्तमनास्त्रयीधु
तमलःश्रीचंद्रलालोऽभवत् ॥६९॥ तत्पुत्रेष्ववर
श्चषट्सुवयसासंपद्गुणश्चाऽसमः शब्दाऽलंकृति
काव्यसज्जविलसच्चेताःसतां सेवकः ॥सोऽयं संप्र
तियाचितोद्विजवरैः श्रीरङ्गलालः कृतीसद्वृत्तै
र्नवरत्नमेतदमलंसत्प्रीतये संव्यधात् ॥ ७० ॥

नागाग्निनन्देंदुमितेऽब्दवृन्दे माघे सितेऽनङ्गतिथौ सभौमे ॥ संपूर्तिमाप्तंनवरत्नरम्लंविद्वज्जनास्तं सततं विभातु ॥ ७१ ॥

इति रमलनवरत्ने वर्षफलवर्णनं नाम नवमं रत्नम् ॥ ९ ॥

टीका--जो व्रज भूमि पृथ्वीकी गर्दन है, जहांके निवासी श्रीकृष्णके चरणारविंदोंके ध्यानसे निष्पाप रहते हैं जिसमें नन्दसुत श्रीकृष्णको सद्बुद्धिवाले स्मरण करते रहते हैं जहां वनोंमें सुंदर वन वृन्दावनहै तहां कुंजविहारी श्रीकृष्णकी सेवामें तत्पर तत्रत्य राजासे सुपूजित सज्जनोंको शोभा देनेवाला ललिताप्रसाद नाम करके विख्यात हुआ ॥ ६८ ॥ जिसका पुत्र भगवानका भक्त जो मदनमोहन भया वह नारनौल नगरमें निवास करता भया तहाँ कायस्थ समूहसे पूजित रहा तिसका पुत्र बुद्धिमान् पंडितोंके पूजितहैं चरण जिससे तथा ज्योतिषियोंमें सूर्य विद्यामें आसक्त मन तीन वेदों करके निर्मल श्रीचन्द्रलाल हुआ ॥ ६९ ॥ तिन छः पुत्रोंमें छोटा कम उमरवाला जो संपत्ति एवं गुणोंमें समान नहीं था तथापि शब्द, अलंकार, काव्योंसे सजा है चित्त जिसका और सज्जनोंका सेवक रहा यहां इस समय ब्राह्मणश्रेष्ठोंके प्रार्थना करनेसे वह रंगलालपंडित सुंदर श्लोकोंकरके निर्मल इस नवरत्नको सज्जनोंके प्रीत्यर्थ रचता भया ॥ ७० ॥ विक्रम संवत् १९३८ माघ शुक्ल त्रयोदशी मंगलवारको यह नवरत्नरमल संपूर्ण भया इसे विद्वान् लोग वारंवार शोभा युक्त करें ॥ ७१ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषायां वर्षविचारवर्णनं नाम नवमं रत्नम् ॥ ९ ॥

सँव्वत्सरे वेदशरांकभूमिमिते टिहर्य्यां विवृतिं चकार ।
महीधरो–योंधिपखेमराजाज्ञया नवीने रमलैंकरत्न ॥
शुद्धाशुद्धेश्चितने नूत्नतांमा यायाद्ग्रंथोग्रन्थकर्त्तासुखीस्यात् ।
यस्मादेषः पारसीयः प्रासद्धः सिद्धिः प्रश्ने जायते भाषयापि ॥

१ दैवी, परोक्षवात प्रकट करनेवाली जंत्री।

क्रम		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
	शकल नामानि	तरीख	कब्जुलदाखिल	नकी	इज्तमा	अंकीश	बयाज	अतबेदाखिल	नस्रतुल्दा०	नस्रतुल्खा०	अतबेखारिज	हुम्रा	उक्का	लह्यान	फरहा	कब्जुलखारिज	जमात
	शकलरुपाणि	....	.|	..|.	|.|	.|||	|.||	..|	.||.	||..	|...	||.|	.||.	|||.	.|.	|.|.	||||
१	मनोभिलषितकार्यं	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
२	कार्येसफलताभविष्यतिनवा	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ
३	विवादजयःपराजयोवा	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ
४	परदेशेसर्वेवास्थितिर्भविष्यतिनवा	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ
५	पांथोगृहेआगमिष्यतिनवा	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई
६	चोरितद्रव्यंलप्स्यतेनवा	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ
७	मित्रस्यमैत्रीसत्यावासकपटा	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
८	ममयात्राभविष्यतिनवा	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
९	अमुकोस्माकंक्षेमंमानंचकरोतिनवा	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
१०	विवाहःकीदृक्भविष्यति	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ
११	विवाहितास्त्रीवरोवाकीदृक्	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ
१२	गर्भिण्याःकन्यावापुत्रोभवि०	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए
१३	रोगीसुखीभविष्यतिनवा	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ
१४	बंधनस्थोबंधनान्मुक्तोभविष्यतिनवा	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ
१५	अद्याहोऽस्माककीदृग्भविष्यति	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ
१६	मदीयस्वप्नस्यकिंफलम्	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं

o o o o o o o o o o o o

o o o o o o o o o o o o o

o o o o o o o o o o o o o o

o o o o o o o o o o o o o o o

० उत्तर निकालनेकी रीति ॥ ऊपर लिखे मुताबित कमहों अथवा न्यादेहों (४) पंक्तियोंमें चिह्न करो ⁝ जब चिह्न प्रष्टासे कर-

वाय दिये जायँ, तो बांये ओरके अर्थात् दाहिने हाथसे बांये हाथके ओर गिनो यदि विषम होंतो (१) बिंदु सम होतो रेखा लिखो ऐसे चारहों पंक्तियोंके (४) चिह्न (रेखाबिंदु) लेलो; वह एक प्रकार पाशक शकलके नांई हो जायगा इसमेंभी स्मरण चाहिये कि जब किसी पंक्तिमें चिह्न ९ से अधिक होंतो ९ से तष्ट (शेष) करना जो शेष रहे उसका सम विषम जानना.

॥ उपरोक्त चिह्नोंमें उदाहरण ॥

प्रथम पंक्तिका ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० विषम

दूसरीका ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० सम

तीसरीका ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० विषम

चौथीका ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० सम

ऐसे चिह्न करना—तब आगे उत्तर देखनेको आगेकी जंत्रीको देखो जिसके शिरपर वही चिह्नहो जो (४) पंक्तियोंसे उक्त विधि करके मिला है तब उसके नीचे प्रश्नके शिरपर जो अक्षर चिह्नहो उसे देखो तदनंतर उस कोष्टकको (अग्रिम) देखो जिसके शिरपर वही अक्षर हो. वही शकल चिह्नभी हो वहां अपने प्रश्नका उत्तर देख ले.

प्रश्न करनेके दिन ।

जनवरी । १ । २ । ४ । ६ । ११ । १२ । २० । फर्वरी ११७। १८ मार्च १४ । १६ अप्रेल १० । १७ । १८ मई ७।८ जून १७ जौलाय १७।२१ अगस्त २०।२१। सितंबर १०।१८ अक्तूबर ६ नवंबर ६ । १० दिसंबर ६ ।११ । १५ एकही प्रश्न एकही दिनमें दूसरेवार न होना चाहिये = इति ॥

अ.

१ जो तुम्हारी इच्छाहै थोड़े दिनमें मिलजायगी.

२ कष्ट और पश्चात्ताप होगा.

३ जो काम आजके दिन करतेहो खबरदारीसे करो ऐसा न हो कि कोई आपत्ति तुम्हारे ऊपर आपड़े.

४ कैदी मरताहै और उसके मित्र रंज करेंगे.

५ इसवक्त शरीर बच जायगा मृत्युके मिलाप करनेकी तय्यारी है इस कष्टसे शरीर बच जायगा दूसरेमें आशा नहीं.

६ एक अच्छी रूपवती लडकी किंतु कष्टकी भरी हुई मिलेगी.

७ तुमको धर्मात्मा और धर्मज्ञ स्त्री वा पुरुष तुम्हारी स्त्रीवा पुरुषको मिलेगा.

८ यदि तुम इससे विवाह करोगे तो जहाँ कुछ तुम आशा करोगे शत्रु पैदा हो जायँगे.

९ बेहतर है कि तुम इस प्रीतिको छोडदो क्यों कि न यह हमेशः रहनेवाली है न सच्ची है.

१० अपनी यात्राको छोडदो क्यों कि, इससे तुम्हें कुछ फायदा न होगा.

११ तुम्हारे बीच सच्ची मैत्री है.

१२ तुम्हें चोरीका धन नहीं मिलेगा.

१३ विदेशी खुशीसे शीघ्र लौट आवेगा.

१४ तुम वहांसे नहीं जावोगे जहां इस समय हो अर्थात् स्थिर रहोगे.

१५ तुम्हें अच्छे मुकदमें मामलेमें हाकिमसे मदद मिलेगी.

१६ तुम भाग्यवान् नहीं हो प्रारब्ध रहित हो परमेश्वरसे सहाय मांगो.

आ.

१ तुम्हारे प्रारब्धमें जो कुछ लिखा गया उसको लोग. (ईर्षा) मत्सर करेंगे.
२ जो कुछ इसवक्त तुम्हारी इच्छाहै उसे छोडदो.
३ किसी मनुष्यकी कृपा जाहिर करताहै.
४ दुश्मन हैं,जो तुमसे दगाकरेंगे और तुम्हें असंतोष दिखावेंगे.
५ बडी कठिनतासे उसे माफी मिलेगी और छूटेगा.
६ बीमार मर जायगा.
७ उसके एक विद्वान् और बुद्धिमान् पुत्र उत्पन्न होगा.
८ एक धनवान् मनुष्य तुम्हारे लिये नियत किया गया.
९ इस विवाहसे तुम्हें अच्छा सौभाग्य होगा.
१० यह प्रीति स्वच्छ चित्तकी है.
११ परमेश्वर तुम्हारा रक्षक होगा और तुम्हें उन्नति देगा.
१२ दगाबाज और झूठे मित्रसे खबरदार रहो.
१३ अकस्मात् तुम्हारी जायदात तुम्हें मिलजायगी.
१४ इस वक्त मुहलतके सबब वह घर नहीं आ सकता.
१५ तुम यहाँ नहीं रहोगे इसलिये दूसरी जगे जानेको तैयार रहो
१६ तुम्हें कुछ फायदा न होगा इसलिये खबरदार व हुशियाररहो.

इ.

१ परमेश्वरकी कृपासे तुम्हें बडालाभ होगा.
२ यथार्थ मन्द प्रारब्ध है परमेश्वरसे सहायता मांगो.
३ यदि तुम्हारी इच्छा बेहद नहीं है तो वही मंजूर होगी.
४ इसके बीच मैत्री होगी.

५ ≡ आजके रोज अच्छी तरहसे प्रस्तुत रहो कदाचित् तुम्हें कुछ कष्ट होगा.

६ ≡: कैदी काठिनतासे छूटेगा.

७ ╌: रोगी आराम होगा.

८ =: उसके लडकी होगी किंतु उसकी खबरदारीकी जरूरत होगी.

९ =⁝ इस मनुष्यके पास अधिक धन नहींहै किंतु मध्यम धन है.

१० _⁝ इस विवाहको इनकार करदो नहीं तो पश्चात्ताप उठाना पडैगा.

११ ≡: ऐसी मुहबतको छोडदो जिससे कि, तुम्हारी हानि होगी.

१२ =: तुम्हारे गमन निरर्थक है चाहिये कि, तुम घरमें रहो.

१३ ≡⁝ सच्ची और शुभमैत्रीपर विश्वास रखसकते हो.

१४ ╌: तुमको फिर वह नहीं मिलेगा उम्मैद मत रक्खो.

१५ ≡: बीमारीके कारणसे वह पंथ तुमको नहीं देख सकता.

१६ ≡ तुम्हारे भाग्यमें यहीं ठहरना लिखा है.

(इ)

१ ⁝ तुमको दूसरे मुल्कनें खूब धन मिलेगा.

२ ≡: निर्भय चले जानेसे तुम्हें जरूर दुगुना फायदा होगा.

३ ╌: परमेश्वरकी दयासे तुम्हारे दुर्दिन अच्छे हो जायंगे.

४ ≡: अपनी इच्छा बदल दो नहीं तो तुम्हें कष्ट मिलेगा.

५ ≡: तुम्हारी मनोकामना प्राप्त होनेमें जरूर विलंब है.

६ ≡: जिस जिस बातपर तुम्हाराचित्त आज लगे उन्हें छोड दो.

७ ╌: कैदी फिर छूट जायगा.

८ रोगीका रोग बहुत दिनतक रहेगा और आराममें संदेह रहेगा.

९ उसका सुशील और सुरूप लडका होगा.

१० यह मनुष्य धन दुर्बलहै परंतु चित्त स्वच्छ व सच्चाहै.

११ व्याह जिससे करतेहो उससे सौख्य होगा.

१२ तुम ऐसे मनुष्यसे प्रीतिकर्तेहो जो तुम्हारा निंदकहै.

१३ यदि होशयारीसे चलोगे तो गमन सफल होगा.

१४ जो कुछ वह कहताहै वह उसकी इच्छा नहीं क्योंकि उसका चित्त झूठा है.

१५ कुछ कष्ट व खर्चेसे तुम्हारा धन तुमको मिलसकता है.

१६ तुमको परदेश देखनेकी आशा करनी चाहिये.

(उ)

१ परदेशीकी जितनी शीघ्र तुम आशा करतेहो लौटना नहीं होगा.

२ अपने दोस्तोंमें रहो तुम अच्छा करोगे.

३ जिसकी तुम ढूँढमें हो अब मिलजायगा.

४ तुम्हारा भाग्य नहीं परमेश्वरकी प्रार्थना करो और शुद्ध चित्तसे कोशिश करो.

५ मित्रोंकी सहायतासे तुम्हारी मनोकामना सफल होगी.

६ तुम्हारे शत्रुहैं जो तुमको सर्वनाश और दुःखी करनेका उद्योग करेंगे.

७ खबरदार एक शत्रु तुमको तंगी व बरबादीमें लानेका उद्यम करता है.

८ कैदीको चिंता व शोकबहुतहै और छूटना उसका कठिनहै.
९ रोगीकी नैरुज्यता शीघ्र होगी और कुछ भय नहीं.
१० उसके लडकी उत्पन्न होगी और भाग्यवती होगी.
११ तुम्हारा मित्र उन्मादी होगा और उसीके द्वारा हानि होगी.
१२ इस विवाहसे कुछ दुर्बलता आवेगी इस लिये होशियार रहना चाहिये.
१३ यह प्रीति तुमसे झूठी और शोककी है.
१४ अपने गमनको इसवक्त बंदकरो क्योंकि तुम्हें कठिनता होगी.
१५ यह मनुष्य अच्छा और सरल परंतु इज्जतका मुइतहकहै.
१६ चोरीका धन तुमको नहीं मिलेगा.

(ऊ)

१ उद्यमभी करतेरहो तुम्हें तुम्हारी वस्तु मिलजायगी.
२ अपूर्व मनुष्य लौटनेसे असमर्थ है.
३ तुम विदेशमें लाभ उठाओगे और कार्य योग्य होगे.
४ धैर्य्य रख तेरी किस्मतमें अच्छा धन है.
५ इससमय इस कामके योग्य होनेमें विलंबहै.
६ इससमय तेरी इच्छा व्यर्थहै.
७ कष्ट और शोक तुझको सन्मुख आवेगा.
८ आजका दिन तेरे लिये अच्छा नहीं अपनी इच्छा छोडदे.
९ कैदी छूट जायगा.
१० रोगीको आराम होनेमें संदेह है.
११ उसके एक अच्छा लडका पैदा होगा.
१२ एक योग्य मनुष्य और बडा धन मिलेगा.

१३ ≡ तुम्हारे कामोंको नाश करेगा.
१४ –⁝ यह प्रीति सच्ची और नित्य रहनेवाली है इसे छोडो मत.
१५ =⁝ अपनी यात्रामें जाओ तुम्हें कुछ हानि न होगी.
१६ ≡ यदि तुम इस मित्रका भरोसा करोगे तो तुम्हें क्लेश उठाना पडेगा.

(ऋ)

१ ⁝ यह मित्र तुमको सर्वदा तुमसे उत्तम रहेगा.
२ =⁝ तुम्हें अपनी हानि दृढ चित्तसे सम्हारनी चाहिये.
३ –⁝ विदेशी अचानक लौट आवेगा.
४ =⁝ अपने घरमें अपने मित्रोंके साथ रहो तेरा कष्ट दूर होगा.
५ ≡ तुमको अपने काममें कुछ लाभ न होगा.
६ ≡ परमेश्वर तुम्हें उन्नति देगा.
७ –⁝ नहीं.
८ =⁝ अपने शत्रुओंके हाथसे थोडे दिनोंमें मुक्त होजाओगे.
९ =⁝ तेरी दुर्भाग्यता आनेवाली है और उससे बचना कठिन होगा.
१० –⁝ कैदीमरके छूटेगा.
११ ≡ परमेश्वरकी कृपासेरोगी आराम होगा.
१२ =⁝ एक लडकी किंतु कम जोर.
१३ ≡ तुझे महानुभाव एवं जवान और खूबसूरत (मित्र) सहयोगी मिलेगा.
१४ –⁝ इस विवाहको अंगीकार न कर नहीं तो तुझे क्लेशउठाना पडेगा.

१५ इस मैत्रीको छोडदे.

१६ शीघ्रही यात्राको उद्यत रहो तुम अचानक बुलाये जाओगे.

(ऋ)

१ अपने सफरका आरंभ करो और जहाँतक इच्छा करोगे जासकतेहो.

२ तुम्हारा बनावटी मित्र परोक्षमें तुमसे घृणा करता है.

३ तुम्हारी आशा धन पुनः पाने की व्यर्थ है.

४ पांथ किसी कामके कारण वक्र शीघ्र नहीं होसकता है.

५ विदेशमें तुझे बहुत धन मिलेगा.

६ अपने यत्नको छोड दो तुम्हें अच्छा होगा.

७ तुम्हारी आशा व्यर्थहै तुम कार्य योग्य न होओगे.

८ जो तुम्हारी इच्छा है प्राप्त हो जायगी.

९ खुश हो तुम्हारी खुश किस्मती नजदीकहै.

१० आजके दिन तुम्हारेवास्ते अच्छा होगा.

११ बाद बहुत कैद भुगतनेके उसकी रिहाई होगी.

१२ बीमारको आरामी होगी.

१३ उसका नीरोग लडका उत्पन्न होगा.

१४ थोड़े दिनोंमें तुम्हारा विवाह होगा.

१५ और तुम प्रसन्न होना चाहते होतो इससे शादीमत करो.

१६ यह प्रेम दिली है और ताजिस्त रहोगी.

(ऌ.)

१ स्नेहतो बडा है परंच बडी डाह पैदा होगी.

२ तुम्हारी यात्रा कभी निष्फल न होगी.

३ तुम्हारा ऐसा मित्र होगा जैसा कि तुम चाहोगे.
४ चोरित द्रव्य तुझको किसी चालाक शख्सके जरियेसे मिलेगा.
५ पथिक शीघ्र प्रसन्नतासे लौटेगा.
६ विदेशमें तुम कोई योग्य न होओगे.
७ परमेश्वरपर भरोसा करो जोकि खुशीका देनेवाला है.
८ तुम्हारी भलाई थोडे दिनोंमें बुराईतब्दीली होजायगी.
९ तुम्हारी अपनी इच्छानुसार योग्यता होवेगी.
१० बदबख्ती जोकि भय सूचक है रुक जायगी.
११ अपने वैरियोंसे खबरदार रहो जो कि तुम्हें हानि पहुँचाना चाहते हैं.
१२ चंदरोज बाद तुम्हारा फिक्र कैदीके निस्बत करके होजागा.
१३ परमेश्वर स्वीकार कर तंदुरस्ती और ताकत कर देगा.
१४ उसकी एक बहनकी खूबसूरत लडकी होगी.
१५ तुम ऐसे विवाह करोगे कि जिससे तुमको आरामबहुत कम मिलेगा.
१६ इस विवाहसे तुम्हारी इच्छा पूरी न होगी.

(ऌ)

१ बाद बहुत कष्ट तुम्हें आसायश आराम मिलेगा.
२ सादिक दिलकी पाक मुहब्बत होगी.
३ तुम्हारा सदर कामयाब होगा.
४ इस आदमीकी दोस्तीपर भरोसा मत करो.

५ माल मशरुका दस्तयाव न होगा मगर चोर सजायाव होगा.
६ मुसाफिर बहुत दिनमें आवेगा.
७ तुम्हें नेकवख्ती आराम परदेशमें मिलेगा.
८ फिलहाल तुम्हें कोई कामयाबी न होगी.
९ जिस काममें तुम लगेहो उसमें कामयाव होओगे.
१० अपने इरादेको तवदील करो और तुम अच्छा करोगे.
११ नहीं.
१२ सबर करो चंदरोजमें तुम्हारी हालत दुरुस्त होजायगी.
१३ कैदीको रिहाई होगी.
१४ बीमार मर जायगा.
१५ उसको लडका पैदा होगा.
१६ तुम्हें मुशकिलसे तुम्हारा शरीक मिलेगा.

(ए)

१ तुम्हारा व्याह अच्छे खूबसूरत आदमीसे होगा.
२ इस शादीमें बहुत किस्मकी आफतें पेश आवेंगी.
३ यह मोहब्बत तवदील होनेवाली है.
४ तुमको सफर नेकवख्त न होगा.
५ इसशक्सकी मोहब्बतसही वरास्त है तुम भरोसा कर सकते हो.
६ तुम्हारा नुकसान होगा मगर चोरको बहुत तकलीफ बरदाश्तकरना होगा.
७ मुसाफिर जल्दी मयमालके वापस होगा.
८ अगर तुम घरमें रहोगे तो तुम्हैं कामयाबी होगी.

९ तुम्हारा फायदा कम होगा.
१० तुम्हें रंज तकलीफ होगी.
११ तुम हस्ब दिलख्वाह कामयाब हो ओगे.
१२ तुम्हें रुपये मिलेंगे.
१३ बावजूद दुशमनोंके तुम अच्छाकरोगे.
१४ कैदी बहुत दिनतक जेलमें रहेगा.
१५ बीमारको सेहत होगी.
१६ उसके लकडी पैदा होगी.

(ऐ)

१ उसको लडका पैदा होगा दो खिताब व इज्जतउसको मिलेंगी.
२ बडी लगातार कोशिस और रुपयेसे उसको शदीक मिलेगा.
३ यह शादी कामयाव होगी.
४ वह अभी तुम्हारा होना चाहता है. (मर्द या औरत)
५ तुम्हें सफरमें फायदा होगा.
६ उस शख्सपर ज्यादे एतकाद मत रक्खो.
७ तुम्हें किसी वक्त तुम्हारी जायदाद मिलजायगी.
८ मुसाफिरका वापस होना बसबब उसके चाल चलनके शकदार है.
९ हस्ब दिलख्वाह कामयाबी तुम्हें परदेशमें होगी.
१० फायदेकी उम्मैद मत करो यह बे फायदा होगा.
११ बनिस्वत तुम्हारी उम्मैदके तुम्हारे तईं ज्यादा नेक बख्ती होगी.

१२ जो कुछ तुम्हारी ख्वाहिशें हैं जल्दी हासिल होंगी.
१३ तुम शादीमें बुलाये जाओगे.
१४ बदबख्तीकी शिकायतका तुम्हें मौका न मिलेगा.
१५ कोई रहम करेगा. और कैदीको रिहाई होगी.
१६ बीमारके सेहतकी ठीक नहीं.

(ओ)

१ बीमारको सेहत होगी मगर उसकी उमर कम है.
२ उसके लडकी होगी.
३ तुम्हारी इज्जतदार खानदानमें होगी.
४ इसशादीसे तुम्हारा कुछ हासिल न होगा.
५ वक्त आनेदो तुम बडी मोहब्बत पाओगे.
६ घरसे खतरेमें मत पडो.
७ यह शख्स सच्चा है या पाकदोस्त है.
८ तुम्हें माल मशरुका कभी नहीं मिलेगा.
९ मुसाफिर वापस होगा मगर जल्दी नहीं.
१० जब परदेशमें रहते हो तब बदऔरतसे परहेज रक्खो नहीं तो उससे नुकसान पहुँचेगा.
११ जिसकी तुम कम उम्मैद करते हो जल्दी मिलजायगा.
१२ तुम्हें बडी कामयाबी होगी.
१३ हमेशा उसपर खुश रहो जो तुमको दिया गया है.
१४ रंज दूर होगा और खुशी आवेगी.
१५ तेरी किस्मत मानिंद गुलके खिलनेको है चंदरोजमेंखिल जायगी.

१६ मौतकैदको झूठा करेगी.

(औ)

१ कैदी खुशीके साथ रिहा होगा.
२ बीमारीकी सेहतमें शक है.
३ उसको लडका पैदा होगा और उम्रदराज होगा.
४ तुम्हें पूरा सवाब ख्वाविंद या जौजह मिलेगी.
५ इस शादीमें देर मतकर तुझे बडी खुशी होगी.
६ इस दुनियामें तुम्हें कोई अच्छी मुहब्बत नहीं करता.
७ तुमभरोसेके साथ जासकते हो.
८ दोस्त नहीं बल्कि पोशीदा दुश्मन है.
९ माल मशरूका तुम्हें जल्दी मिलेगा.
१० मुसाफिर वापस न होगा.
११ एक विदेशी औरत तेरी दौलतको ज्यादे बढावेगी.
१२ तुम्हारे फायदेमें तुम्हें दगा मिलैगी.
१३ तुम्हारी मुसीबतें दूरहोंगी और तुम खुश होओगे.
१४ तुम्हारी उम्मैद बेफायदा है दौलत तुमसे नफरत करतीहै
१५ तुम जल्दी दिलख्वाह खबर सुनोगे.
१६ मुसीबतें तुमको ताकरही हैं.

(अं)

१ आजका रोज तुम्हारी खुशीको न पावेगा.
२ अपने दुशमनोंसे कैदी बचेगा.
३ बीमार आराम होगा और बहुत जीवेगा.
४ उसके दो लडकी होंगी.

५ एकदौलतमंदनौजवान आदमी तुम्हारा ख्वाविन्द होगा.
६ शादी जल्दी करो इसमें तुम्हें बडी खुशी होगी.
७ यह शख्स सच्चे दिलसे तुमसे मुहब्बत करता है.
८ घरसे तुम कामयाब न होगे.
९ यह दोस्त सोनेसे ज्यादे कीमती है.
१० तुमको तुम्हारा माल कभी नहीं मिलेगा.
११ वह शख्स बीमार है और अभी वापस नहीं आसकता.
१२ अपनी मेहनतपर भरोसा रक्खो और घरमें रहो.
१३ खुश हो क्योंकि आयंदेको तुम्हें कामयाबी बख्शीगईहै.
१४ अपनी नेकबख्तीपर बहुत भरोसा मत कर.
१५ जो तुम्हारी ख्वाहिश है वह मंजूर होगी.
१६ आजके रोज तुम्हें बडा खबरदार रहना चाहिये ऐसा न हो कि, कोई आफत तुम्हारे ऊपर आ पडे.

(अः)

१ दरमियान दोस्तोंके बडी खुशी होगी.
२ आजका दिन अच्छा नहीं बल्कि बुरा है.
३ अगचें वह आजकल तकलीफ बरदाश्त करता है वह अबभी इज्जत पायगा.
४ सेहतमें शुभा है इस लिये उस्का दूसरी दुनियांका साचा न करो.
५ उसको लडका पैदा होगा मगर बेअदब होगा.
६ दौलतमंद ख्वाविन्द या जोरू मिलैगी मगर बदमिजाज.

७ इस शख्ससेशादी करनेसे अपनी खुशीका यकीन करे.

८ यह शख्स तुमसे ज्यादे मुहब्बत रखता है मगर छिपाने चाहता है.

९ तुम अपने सदरमें बडे रजा सकते हो.

१० उसका एतकाद न करो वह दगाबाज है कायम मिजाज नहीं.

११ एक अजबतरहसे तुम्हारी जायदाद तुमको मिलैगी.

१२ मुसाफिर जल्दी वापस आवेगा.

१३ परदेशमें तुम चैन व आराममें रहोगे.

१४ अगर अच्छीतरहसे काररवाई करोगे तो जरूर कामयाब होओगे.

१५ तुम अबभी शानशौकत व माळमतके साथ रहोगे.

१६ जो कुछ तुम्हारे पास है उसपर सबर करो.

इति महीधर संगृहीतां रमलप्रश्नावली ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ रमलदानियाल ।

अथ कार्यावधिप्रश्नाः ।

कोई पूछे कि, मेरा काम कितने दिनोंमें और किस वारमें होगा. तब सोलह १६ शकल निकालै. पहिली और पांचवींको जर्बकरै दूजी २ और छठी ६ को जर्ब करै ३–७ को जर्ब करै. ४–८ को जर्ब करै. शकल निकालै ऐसे इन्किलाब करै. ऐसे ४ चार शकल निकालके इनसे सोलह शकल बनावे फिर इनपर अमल करै. १४ घरकी शकलको देखै, उसके नीचे जितने अंक हों उतनेही दिनमें और उसही शकलके स्वामीके वारको कार्य होगा. जैसे १४ घर लह्यान ≡ हो तो ९ नव दिनमें और बृहस्पतिवारको होवे, ऐसे सब कहना इति ॥ १ ॥

धनका प्रश्न २–। कोई पूछे मेरे धन होगा कि नहीं ? तो इस प्रश्नको दूसरे घरसे विचारै. तहाँ प्रस्तारमें १–२–११ ये शकल शुभ हों तो धन होगा अशुभ हों तो नहीं होगा तहाँ ⁝ ≡̇ ≣ =⁝ =̇: ‾⁝ =: ये शुभ और =̇: ≡̇ ≡. =̇: =: ये अशुभ शकल हैं, इति ॥ २ ॥

और कोई पूछे कि, निकट नजदीक जाताहूँ सो शुभहै या अशुभ है? इस प्रश्नको ३ घरसे विचारै ३ घरमें शुभ शकल हो तो शुभ फल कहै अशुभ हो तो अशुभ फल कहै, साबित शकल हो तो वहाँसे उलटा चला आवेगा यह कहो इति ॥ ३ ॥

कोई पूछे कि मेरी अवस्था अबसे आगे कैसी बीतेगी ? तहाँ १–२–९ इन घरोंसे विचारै.तहाँ शुभदाखिल =̇: =: ‾⁝ ये शकल आवें तो अच्छी गुजरेगी और खारिज =⁝ =: ≡̇ _⁝ ये हों

तो अच्छी नहीं गुजरेगी. शुभ साबित आवे तो जैसी पीछे गुजरी वैसीही गुजरेगी. यदि मुन्कलीब आवे तो खुशवक्तसे गुजरेगी. दूसरा प्रकार यह है कि १२ वें घरको विचारै शुभहो तो अभी अच्छी बीततीहै, आगेभी भली बीतेगी अशुभहो तो आगे बुरी बीतेगी, कोई पूछे कि मेरी गुजरान कैसी भई ? और आगे कैसी होगी ? तहाँ १--४ शकलको जर्ब करे ७--१० को जर्ब करे इनसे शुभ शकल बने तो शुभ, अच्छी गुजरी, अशुभहो तो बुरी नाकिस गुजरी है, यदि ये दोनों विपरीत हों अर्थात् एक शुभ और एक अशुभ हो तो मध्यम गुजरी कहै. फिर १--४--से उपजी और ७--१० शकलसे उपजी हुई शकलको जर्ब करके एक बना लेवे, अशुभहो तो बुरी गुजरेगी. और शुभहो तो अच्छी गुजरेगी, मध्यम हो तो मध्यमही गुजरेगी इति ॥ ४ ॥

कोई पूछे, मेरा भाई मुझपर खुशी है या नहीं ? तहाँ तीसरे घरको विचारै यदि दाखिल शकल =: ‾⋮ =: ≡. ये हों तो भाईका प्यार बहुत है. और यदि खारिज अर्थात् =: ≡ =: ये शकल हों तो प्यार नहीं दुशमनाई है, जो साबित शकल हो तो कछु ऊपरसे प्यार रखता है, लोगोंको दिखानेके वास्ते हल्ल भल्ल करता है, जो मुन्कलीब हो तो लोगोंके भयसे प्यार किया चाहता है दिलमें प्यार नहीं है ऐसे कहो. और इन सबको शुभाशुभ देख-केभी विशेष वा कम हाल कहना. इति ॥ ५ ॥

कोई कहे कि मैं जिस औरत (स्त्री) से विवाह कराया चाहता हूँ वह कैसी है ? तहाँ सातवें घरको विचारे जो ⋮ =: ‾⋮ —⋮ ये शकल हों तो पतिव्रता है, यदि =: =: =: —: इनमेंसे कोई सीभी हो तो वह औरत कलहकारिणी और व्यभिचारिणी है,

दुःखदायिनी है जो इनसे बची हुई अन्य कोई शकलहो तो स्त्री जार (छिनाल) है बातोंमें मीठी है, इति ॥ ६ ॥

कोई पूछे कि, मेरी वस्तु खोईगई है सो मिलेगी या नहीं ? तहाँ रमल डाले प्रस्तार बनाके, सोलह शकल निकाले फिर सातवीं शकलको देखै तहाँ दाखिल शकलोंमेंसे कोई शकल हो तो शीघ्रही पावे, और खारिज हो तो नहीं पावे. मुन्कलीव होतो कछुक पता लगे, पावे नहीं. शुभ साबित होतो विलंबसे पावे, अशुभ हो तो नहीं पावे. इति ॥ ७ ॥

कोई पूछे वर्षा वर्षेगी या नहीं ? तहाँ प्रस्तार २ बनाके, पांचवीं और सोलहवीं शकलकी एक शकल निकाले जो यदि दाखिलहो तो वर्षा बहुत होवे ☰ जमात हो तो नदी बहुत चढै ⚍ यह शकल हो तो बादल अबर बहुत रहैं. ⚌ यह हो तो मेह अँधेरी घटा बहुत हो वर्षा थोडी हो ⚎ यह होतो वायुही चले वर्षा न हो ⚏ यह शकल होतो गरम लाली कसीरी वायु आवे जो ☱ बयाज होतो मेह थोडा और वायु बहुत चलै ⁝ यह तारिखा शकल होतो मेह बहुत टल टल जाय और खारिज संज्ञक शकल होय तो वर्षाबहुत टल टल जाय इति ॥ ८ ॥

जो कोई पूछे अन्न (अनाज) महँगा होगा ? या सस्ता होगा ? तहाँ प्रस्तार बनाके, सोलह शकलनिकाले फिर पहली और १० शकलको जर्बकरै दूसरी और ११ ग्यारहवीं शकलको जर्ब करै, पांचवीं और ९ को जर्ब करै सातवीं और १२ को जर्ब करै ऐसे चारशकल निकाले पीछे इन चारोंसे सोलह शकल बनावे पीछे इस प्रस्तारका * इन्किलाव बनाके तिससे चार शकल निकाले फिर तिनकी एक शकल बनावै यदि वह शकल आतशी अर्थात्

* १--५ से २-६ से ३-७ से ४-८ से जर्ब करके ४ शकल निकाले इसे इन्किलाब कहते हैं।

अग्नितत्त्वकी होतो अन्न महँगा होवे, पृथ्वीतत्त्वकी होतो थोडा महँगा, वादी अर्थात् वायुकी हो तो मध्यम भाव जल तत्त्वकी होतो बहुत सस्ता होवे इति ॥ ९ ॥

मेरा बाप मुझे कैसा चाहता है ? तहाँ प्रस्तार करके चौथे घरको विचारै यदि ४ चौथे घरमें शुभदाखिल शकल हो तो बहुत प्यार रखता है साबित होतो मध्यम प्यार है; खारिज होतो प्यार नहीं है मुन्कलीव हो तो ऊपरसे प्यार दिखाता है मनमें प्यार नहीं रखता है इति ॥ १० ॥

प्रश्न-मेरा रोजगार होवेगा कि, नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके दूसरे घरको विचारै जो दाखिल शकल आवे तो शीघ्रही रोजगार हाथ आवे जो खारिज शकल आवे तो रोजगार नहीं होवे साबित हो तो ढीलमें रोजगार होगा मुन्कलीव हो तो ढीलमें थोडासा रोजगार होगा अशुभ होतो नहीं होगा इति ॥ ११ ॥

प्रश्न-कोई पूछे कि परदेशीका खरचा आवैगा कि नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके पांचवें घरको देखै यदि ५ घरमें दाखिल =: =: ‾: ये शकल हों तो खरचा आवेगा परदेशी मनुष्य खुशीहै, जो खारिज =: =· _: ये शकल आवें तो खरचा खबर कछु नहीं आवे जो शुभ साबित आवे तो विलंबसे खरचा आवै मुन्कलीव आवे तो खरचा नहीं आवे खबरही आवेगी ॥ १२ ॥

प्रश्न-मैं फलानेके पाससे कोई वस्तु मांगा चाहताहूं वह देगा या नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके, छठी और दशवीं शकलको जर्ब करके एक बनावले वे फिरशुभ दाखिल आवे तो देवेगा जो शुभ मुन्कलीव हो तो शीघ्रही देवेगा जो अशुभ मुन्कलीब आवे तो देके फिर उलटे ले लेवेगा जो अशुभ खारिज हो तो नहीं देवेगा जो शुभ साबित होतो ढीलसे देवेगा जो शुभ खारिज होतो दिलासा करेगा देवेगा नहीं इति ॥ १३ ॥

प्रश्न-कोई पूछे माशूक (प्रियजन) हाथ आवे, या न आवे और परदेशीकी खवर सच्ची है या झूठी है और परदेशी आप आवेगा या नहीं ? इन प्रश्नोंके पाँचवें घरको विचारै तहाँ 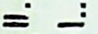 इनमेंसे कोई शकल होवे तो माशूक हाथ आवे. और परदेशीकी खवर आवे जो कि. पीछे खवर आईथी, सच्ची है और जो यदि 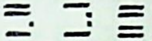 इनमें कोई शकल आवे तो जहाँ था वहांही है आवे नहीं और माशूक कुछेक दिन हाथ नहीं आवे, यदि 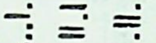 इनमेंसे कोई शकल आवे तो परदेशी जीवता नहीं और माशूक हाथ न आवे खवर झूठी है इति ॥ १४ ॥

प्रश्न-गर्भवती वेटा जनेगी या वेटी जनेगी ? तहाँ रमल डालै सोलह शकल निकालै: पहली और दशवींको जर्ब करै फिर छठी शकलसे जर्ब करै यदि 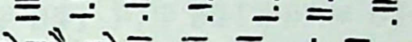 इनमेंसे आवे तो रूपवाले पुत्रको जनै. जो 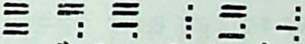 इनमेंसे आवे तो बेटी जनै. दूसरा प्रकार यह है कि, पहिली और पांचवीं शकलको जर्ब करै ६-७ को जर्ब करै. फिर इन दोनोंसे एक वनाके उसे देखै. जो अग्नितत्त्व अथवा वायुतत्त्वकी हो तो वेटा जनेगी जो पृथ्वी वा जलतत्त्व हो तो बेटी जनेगी. इति ॥ १५ ॥

कोई पूछे कि स्त्रीके गर्भ है, या नहीं ? तहाँ छठे घरके विचारै जो दाखिल सावित होतो गर्भ है. जो खारिज हो तो गर्भ नही मुन्कलीव हो तो गर्भ है, परन्तु ठहरना मुशकिल है तहाँ ठहरनेका निश्चय ऐसे करे कि तेरहवीं और सातवीं शकलको विचारै, दाखिल सावितहो तो रहै खारिज मुन्कलीव हो तो न रहेगा इति ॥ १६ ॥

कोई पूछे कि स्त्री सुखसे वालक जनेगी, या दुःखसे ? तहाँ प्रस्तार बनाके छठे घरको देखै. जो यदि शुभ दाखिल हो अथवा शुभ खारिज हो तो सुखसे जनेगी. शुभ सावित आवे तो अजारसे

अशुभ खारिज आवे तो खतरा है. शुभ मुन्कलीब आवे तो सुखसे अशुभ मुन्कलीब आवे तो दुःखसे जनेगी इति ॥ १७ ॥

कोई पूछे स्त्रीके कितने महीनेका गर्भ है ? तहाँ प्रस्तार बनाके पहली और ग्यारहवीं शकलको जर्ब करै ५–६ को जर्ब करै. फिर इनसे उत्पन्न हुई दोनों शकलोंकी एक शकल बनाके उसके स्वामी ग्रहको बिचारै जो =: =: ये सूर्यकी शकल हों तो एक महीनेका गर्भ है. जो -: -: ये शुक्रकी शकल हों तो तीन महीनेका है जो मंगलकी =: -: तो ५ महीनेका. जो बृहस्पतिकी हों तो ≡ =: छः महीनेका है. जो शनिकी ≡: =: हों तो ७ महीनेका है. राहुकी =: हो तो दश महीनेका है. बुधकी आवे तो ३–४ महीनेका है इति ॥ १८ ॥

प्रश्न–इस औरतके किस वारमें किस वक्तबालक होगा ? इसे प्रस्तारके ग्यारहवें घरमें बिचारै. जो सूर्यकी शकल आवे तो आदित्यवारमें होगा. इसही प्रकार ११ घरमें जिस ग्रहकी शकल पडे उसीका वार बतलाना. किसवक्त जनेगी ? इस प्रश्नमें पहले घरको विचारै. जो तहाँ पहले घर =: ≡ =: =: ये शकल आवें तो संध्यासमय अथवा अर्धरात्रि समय जनेगी =: ≡: =: ये आवें तो चढते दिन अथवा दुपहरी पीछे जनेगी। ⁝ ≡: ये आवे तो सूर्योदय पर जो ‾: यह आवे तो आधी रातके पीछे जनेगी और शकुन पंक्तिचक्रमें जो रात दिनकी शकल कही हैं उनसे विचारके भी कहे इति ॥ १९ ॥

प्रश्न–इस बालकको कौनसा दिन और कौनसा महीना वा वर्ष करडा (बुरा) है ? तहाँ प्रस्तार बनाके ८ आठवीं शकलके घरको विचारै तहाँ ≡: यह आवे तो १४ दिन अथवा वर्ष माफिक है. जो =: यह अवि तो ३० दिन अथवा तीसवाँ वर्ष माफिक है ≡ यह आव तो ४० दिन अथवा ४० वांही वर्ष भारी

है. जो =⁝ यह आवे तो १२ दिन अथवा १२ वांही वर्ष भारी है ≡: यह आवे तो सात दिन अथवा सातवाँ वर्ष भारी है. ⁝ यह हो तो दोदिन अथवा दूसरा वर्ष भारी है =⁚ यह आवेतो पहला दिन अथवा पहला वर्ष भारी है जो :‾ यह आवे तो ५० दिन अथवा पचासवाँ वर्ष भारीहै _⁝ यह आवे तो ६ दिन अथवा छठा वर्ष भारी है. जो ‾⁝ यह आवे तो भी ६ दिन अथवा छठा वर्ष भारी है. जो यदि =: यह आवे तो ४० दिन अथवा चालीसवाँ वर्ष भारी है. जो -: यह हो तो २० दिन अथवा बीसवाँ वर्ष भारी (माफिक) है. इति ॥ २० ॥

प्रश्न–कोई पूछे कि मेरा पशु अथवा पक्षी जानवर खोगया है मिलैगा, कि नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके दूसरे घरको बिचारे शुभ दाखिल आवे तो जल्दी पावे. अशुभ दाखिल आवे तो बहुत दिनोंमें पावे. खारिज हो तो न पावे.शुभ मुन्कलीव आवे तो खर्च लगके विलंब (देरी) में पावे. शुभ साबित आवे तो कछु थोडासा खर्च लगे. थोडेही दिनोंमें पावे. इति ॥ २१ ॥

प्रश्न–चोरकी सूरत कैसी है ? तहाँ प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै यदि ≡: यह आवे तो चोर जर्द रंग, गौर वर्ण है मंद आदमी है. दाढी अच्छी और बडी कद लंबा है जो =: कब्जुल दाखिल आवे तो गेहूंके रंग मध्यम कद और मध्यम बलवाला है, लंबी गरदन. गिरदा, बडे रोम, इनसे युक्त है जो =⁝ यह आवे तो सुर्ख रंग हैं, लंबा है, मुखपर स्याही है हाथपर स्याही है, हाथपर मस्सा या तिलका चिह्न है, हाथमें छडी रखता है. शौक रखता है टेढा रहता है. जो ≡ जमात आवे तो साँवला छोटी गर्दनवाला काली भ्रुकुटियोंवाला है. जो -⁝ फरहा आवे तो सुफेद रंग, खूबसूरत, लंबी या सम गर्दन, स्याह भौंह, और कलाँवत (गानेवाला) है जो उकला =̇ आवे तो छोटी गर्दनवाला, आकीचोर (बहुत चोरी-

करनेवाला) कमीन जाति है, सुनार, लुहार, मनिहार आदिहै. ☰. यह आवे तो लंबा, मोटा, काला, लंबी गर्दनवाला है, नेत्रोंमें कछु निशानी है, दहिनी तर्फ पांशुमें फोडा या चोट अथवा शस्त्रकी निशानी है, अधम (नीचजाति) है. जो ☰: दुमरा आवे तो सुर्ख रंग या भूरा रंग है बाल और नेत्र लाल हैं, मुखपर शीतलाके दाग हैं, फोडा, फुन्सी, जखम आदि निशानीहैं, कमीन जात है. जो ☰: यह बयाज आवे तो सुफेद रंग है, तिल्लीवाला है, कानोंमें छिद्र हैं, मीठी तबीयत (प्रसन्नचित्त) रहता है बातें बहुत करता है, मुखपर कछु निशानी बूचा कान, मिली हुई भौंह हैं, मीठी बोली, गर्दन मोटी भली नियत. जो ⁝ यह आवे तो लाल रंग कछु स्याह रंग है, लंबी गर्दन, लंबा पेट, आँखपर मुखपर बायीं तर्फ तिल अथवा मस्साकी निशानी है, शरीरमें गुलझठ है, नकी जो ⁝ यह शकल आवे तो लाल रंगवाला हैं. वैरी है, यह चोर पतला है, चालाक, जवान, जोरावर है. जो ⁝ यह शकल आवे तो सुफेद और जर्दा-ईसे मिला रंग है, दाढी लंबीहै; भौंह मोटी और मीठा बोलनेवाला है, गाने बजानेवाला और मुख्य जनहै, जो इज्जतमा ⁝ यह शकल आवे तो सुर्फह रंग है, कपोल लाल हैं. लंबीकद, नारियलसरीखा शिर है, पतले ओंठ और छोटी नाकहै, यदि तारिखा ⁝ यह शकल हो तो आमेज अर्थात् मिलाहुआ रंगवाला है. पतला और लंबा है, स्याह भौंहहैं, पतली अंगुली, हुनरदार ऐसी कोई औरतही चोर है इति ॥ २२ ॥

प्रश्न–चार चांडाल किसतर्फ भाग गयाहै ? तहाँ रमल डाले आठवीं नववीं शकलोंको जर्ब करके एक बनावे जो ☰ ⁝ ⁝ ⁝ इन ४ मेंसे कोईसी आवे तो पूर्व दिशामें गया. जो ☰ ⁝ ⁝ ☰ इन ४ मेंसे कोईसी आवेतो उत्तरकी तर्फ गया. जो ⁝ ⁝ ⁝ ☰ इन ४ मेंसे कोई आवे तो पश्चिम

दिशामें गया, जो ≡ ⁼ ≡ ≟ इन ४ मेंसे कोई शकल आवे तो दक्षिण दिशामें गया है. इति ॥ २३ ॥

प्रश्न-रोगीके क्या रोगहै? तहाँ रमल डाले प्रस्तार बनाके छठे घरको विचारे यदि वहाँ ≡ लह्यान शकल होतो इसके कछु दिन पहले गरमीका विकार था तिस श्रममें यह न्हाया अथवा कुपथ्य कियाहै, इससे रोग भयाहै. ऐसा विचारना इसको बृहस्पति ग्रहके निमित्त दान पुण्य करना चाहिये. जो कब्जुल दाखिल आवे ⁼ सुफेदवस्तुखाईहै. वह शीतलथी तिससे आरजा भयाहै. इसको सूर्यके निमित्त दानकरना. जो ⁼ कब्जुलखारिज हो तो कहीं गलीजकी जगह स्नान आदि करने गया था वहाँ छाया भईहै अर्थात् भूत प्रेतनाशक यंत्र बांधना चाहिये, और बलिदान करना तथा राहुके निमित्त दान, पुण्य, जप, पाठ करानेसे बीमारी दूर होगी. जो ≡ जमात आवे तो बुध ग्रहके निमित्त दान, पुण्य करनेसे फायदा होगा. जो ⁼ फरहा आवे तो सरदीसे आरजा हुआहै रातके वक्त पानी पिया है, बडेफजरमें कछु वस्तु खाईहै. अजीर्णसे बीमारी हुईहै. इसने शक्तिकेअनुसार दान, पुण्य करना चाहिये. जो ⁼ उकला आवे तो छाया (भूत प्रेतकी बाधा) है. पेट भारी है. दर्द रहता है खानेकी इच्छा करताहै. परन्तु गलेसे नीचे नहीं उतरता. इसने अन्नवस्त्रादिकोंका दान करना और शनैश्चरका दान पुण्य तथाजप कराना चाहिये. जो ⁼ अंकीश आवे तो इसका पेट भारीहै. भूंख थोडी लगतीहै. पितर आदि इष्टदेवका दोषहै. तिस अपने इष्टदेवके निमित्तदान पुण्य करै तब सुख होवै. ≡ यह हुम्रा शकल होतो इसके कछु रक्तकी बीमारी है, इसने मंगल ग्रहके निमित्तब्राह्मणोंको भोजन कराना और जप, पाठ कराना चाहिये. जो ≡ यह बयाज शकल आवे तो रोगीको सरदीकी बीमारी अथवा शीतज्वर या शीत आरहाहै. अथवा कफकी वृद्धि

है. इसने छायादान (कांसके बरतनमें घृत डाल, तिसमें सोना डालके, दान) करना चाहिये और चन्द्रमाका जप कराना. जो =: नुस्रुत् खारिज हो तो कछु चिकनी चीज खाईहै. अथवा क्रोध कियाहै इससे बीमारी भई है इसने पक्का इलाज कराना चाहिये और ब्रह्मभोज करावे तथा भूखोंको भोजन बाँटे. तब बीमारी दूर होवेगी. जो =: नुस्रुद्दाखिल आवे तो इसने किसी देव पितर निमित्त बोल कबूल कीथी सो याद नहीं रही यह ५ सेर चावल, पांच गज कपडाका दान करैं. और जिस देवनिमित्त बोल कबूल करीथी उसको पूरी करै तब आराम होगा. जो _: अतबे खारिज आवे तो किसी भूत प्रेतकी बाधा है. कभी बीमारी ज्यादे कमी कमहोतीहै इसके गलेमें भूतनाशक यन्त्र बाँधना और केतु ग्रहके निमित्त दान पुण्य तथा जप, पाठ कराना चाहिये आराम होगा. जो -: नकी आवे तो तापमें न्हाय लिया है. कछुलाल वस्तुखा-ईहै. तिसरे बीमारी हुई है. अब इसका जीव गोता खाता है. इसने मंगलग्रहका जप कराना और ब्राह्मणोंको भोजन करवाना चाहिये. आराम होगा. जो ‾: यह अतबेदाखिल आवे तो भूतनीप्रेतनीकी छाया है. हिया काँपता है. कफसे छाती रुक रही है. इसको शुक्र ग्रहके निमित्त दान, पुण्य करना चाहिये. आराम होगा. जो _: इज्जतमा आवे तो पेटमें दर्द है कभी दुःख कभी सुख होताहै. भूखे गरीब आदमियोंको भोजन खिलावे तब आराम होगा. यदि ⁝ यह तरिखा शकल आवे तो पानीके पीनेसे बीमारी बढी है भूंख नाहिं लगती है. ब्राह्मणोंको खीर, खांडका भोजन करानेसे आराम होगा. इति. ॥ २४ ॥

प्रश्न—यह बीमार आराम होगा, कि नहीं? तहां प्रस्तार बनाके पांचवें छठे घरको जर्ब करके एक शकल निकालै यदि ≡ लह्यान अथवा कब्जुल खारिज =: आवे तो बीमार दूर होवे. जो -: =:

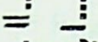 इनमेंसे कोई आवे तो बीमारी मरे जो 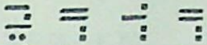 इनमेंसे कोई आवे तो आराम होजावेगा, यदि 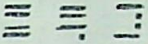 इनमेंसे कोई आवे तो बीमारी बहुत दिनोंतक रहेगी ॥ २५ ॥

प्रश्न—अमुक स्त्रीको यह पुरुष छोडेगा कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै 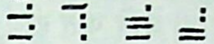 ये शकल आवें तो छोडेगा. यदि 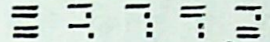 ये आवें तो नहीं छोडेगा. जी मुन्कलीब आये तो कभी छोडै कभी नहीं कहै. इति ॥ २६ ॥

प्रश्न—गया परदेशी मरगया है,सुखी या दुःखी है, रोजगारहै, या नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके, आठवें घरको देखै यदि आठवें घर शुभ दाखिल आवे तो सुखी है अच्छी गुजनार करता है.शुभ मुन्कलीब आवे तो भले हालसे गुजरान है. आया चाहता है. जो अशुभ मुन्कलीब आवे तो जीता है. परंतु कारबारमें कुछ हल चली है. अशुभ खारिज आवे तो जीता नहीं शुभखारिज 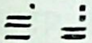 आवे जीता है. मगर हाल अच्छा नहीं है जो अशुभ साबित हुमरा आवेतो कड़ाई होके मरगया है.इति ॥ २७ ॥

प्रश्न—अमानत सौंपा देवेगा या नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके दूसरे छठे घरको जर्ब करै. जो शुभ दाखिल और शुभ साबित आवे तो अमानत देवेगा, अर्थात् जामिन होजायगा. और शुभ अथवा अशुभ मुन्कलीब हो तो देवे नहीं. देकर नटै जो अशुभ दाखिल अशुभ साबित तथा अशुभ खारिज आवे तो अमानत देगा नहीं, दिलासा करता रहेगा. इति ॥ २८ ॥

प्रश्न—मैं लड़ाई झगड़ाको जाता हूं फते होगी कि नहीं ? तहाँ रमल डाले प्रस्तार बनावे जो पहिली शकल शुभ दाखिल आवेतो फते होगी. जो अशुभ दाखिल आवे तो फते नहीं होगी जो अशुभ मुन्कलीब तथा अशुभ खारिज आवे तो फते न हो; जो अशुभ साबित होवे तो ढीलमें फते होगी. इति ॥ २९ ॥

प्रश्न-शत्रुसे लडने जाता हूं मेरी फते (जीत) या उसकी जीत (फते) होगी तहां प्रस्तार बनाके, आठवें घरको देखै जो शुभ दाखिल अथवा मुन्कलीव हो तो तेरी जीत है जो शुभ खारिज अथवा अशुभ खारिज हो तो दुश्मन (शत्रु) की फते होगी. जो शुभ साबित हो तो मेरी फते होगी जो अशुभ मुन्कलीव अशुभ साबित अशुभ दाखिल होवे तो शत्रुकी जीत होवेगी. और १-२-३-४-९-१०-११-१३-१५ इन घरोंमें शुभ शकल होवैं तथा जो बहुत रेखा हों तो पूछनेवाले तेरीही फते होगी और ५-६-७-८-१२--१६ इन घरोंमें शकल हों और बहुत रेखा हों तो पृच्छक तुम्हारें शत्रुकी जीत होगी. इति ॥३०॥

कोई मूक प्रश्नकरै तहां रमल डाले प्रस्तार बनावे फिर हुमरा शकलको देखै कि प्रस्तारमें कहां है जो पहिले घर होवे तो कुछ काम किया है लडाईका जुबाव देइ तुम्हारे जुम्मै हो रही है शत्रुका बल अधिक है. जो हुमरा दूसरे घर आवे तो रोजगारका प्रश्नहै रोजगार अच्छा होगा जो परदेशी होतो फिरजावे चलनेकी नियत है न चलै और मिलनेकी या व्याहकी नियत है तो न करै और दावा (झगडा) की नियत है तो न करै और जो तीसरे घर आवे भाई मित्रसे लडाई आदि जो तुझसे बुरे हालसे रहताहै सो तुझे बुलावे कितनेक दिन पीछे तुझको तकलीफही दिखावेगा. जो चौथे घर आवे तो कुछ चीज न मिलै. हाथ न आवे. लडाई होवे दुशमन तुझपर कोप हो रहा है. किसीके पासजाके फरयाद करेगा तो तेरी फरयाद न लगेगी,जो परदेशीकी बात पूछताहै तो दीलसे आवै, सफरकी नियत है तो न चलै. जो काम किया जाताहै सो ठीक करो यदि पांचवें घर आवे तो दिलगीरी है कुछ जानवर या अन्य कछु शोककी चीज खरीदा चाहता है सो न कर जो तेरी वस्तु गईहै सो पावेगी और जो प्यारा चला गयाहे सोभी आवेगा.

यदि छठे घर आवे तो बीमारको पूछताहै सो ढीलसे अच्छा होगा. जो गर्भवतीको पूछताहै सो कष्टसे बालक जनेगी और कुछ खरीदा चाहतेहो सो नहीं मिलेगा. यदि सातवें घर आवे तो परदेशीको पूछताहै. जो स्त्री किया चाहताहै तो नहीं करना खतराहै सीर (साझा) किया चाहताहै तो न करे. जानवर पक्षी खरीदा चाहताहै तो न रहैगा आठवें घर आवे तो शत्रुका जोरहै. और कर्जा लिया चाहताहै तो हमेशा दुःख रहेगा. परदेशीकी खबर आवे और आप नहीं आवेगा. जानवर पक्षी खरीदा चाहता है तो खरीद, फायदा होगा. बीमारको पूछताहै तो पुण्य धर्म करो आराम होगा. नववें घर आवे तो कहीं गमन करना अच्छा नहीं, परदेशकी खबर आवेगी, जो दशवें घर आवे तो बडे वृद्ध आदमीसे कुछ हाथ आवे. रोजगार होवे. परदेशीकी पत्री आवे. किसीसे मिला चाहताहै तो न मिले, बीमार देरीमें आराम होगा. ग्यारहवें घर आवे तो जो तेरी उम्मेदहै सो ढीलसे होगी, दोस्तमित्र नहीं मिलैगा. रोजगार तो मिलैगा, किसीसे कर्जा नहीं लेना. किसी बडेसे कुछ पूछा चाहता है, सो नहीं सुनेगा. जो बारहवें घर आवे तो दुशमन जोर कर रहाहै, होशियार होजाना और कोई जानवर खरीदा चाहता है, तो किसी दोषसे मरेगा. और किसीपर दावा किया चाहताहै, तो न कर. बीमारको पूछताहै तो पुण्य दान करो आराम होगा. जो तेरहवें घर आवे तो तेरे दुशमन लोग बहुत हैं, और किसीके पाससे रोजगार चाहताहै. तो वहां रोजगार न होवेगा बीमारको पूछता है तो आराम होगा. परदेशी ढीलसे आवेगा. जो चौदहवें घर आवे तो इलमकी बात पूछतेहो सो ढीलसे होवेगी कुछ धन लिया चाहताहै सो हाथ न आवे और तेरे ऊपर किसीने तोहमत लगाई है तो सावधान होके रहना, और बीमारको औषधी दिलावो तब आराम होगा. पंद्रहवें घर आवे तो शीघ्रही रोजगार

होगा. तेरा दोस्त नादान (बे समझ) है. कुछ मतकर कामतेरा आपही होगा. परदेशी आदमी ढीलसे आवेगा. गर्भवतीको पूछता है तो कष्टसे बालक जनेगी,जो सोलहवें घर आवे तो तूने जो काम विचार कर रक्खाहै उसमें कोई झगडा टंटा उठेगा किसीके पास जावेगा. वह मुखसे नहीं बोलेगा, जो कोई तुझसे बुरा हुआहै वह कितनेक दिन पीछे आपही बोलेगा. और आपही मिलेगा इति ३१

प्रश्न-कोई पूछे कि मुझको किसवस्तुमें फायदा होगा ? तब रमल डालके प्रस्तार बनावे जो दूसरे घर ☰ यह शकल आवे तो सराफीसे सोना रूपाके लेने देनेसे या लोगोंके झगडे चुकानेसे फायदा होगा. यदि दूसरे घर =: कब्जुल दाखिल शकल आवे तो बजाजीसे अथवा खेतीके कामसे फायदा होगा जो =: यह हो तो चोरीसे अथवा दगाबाजीसे अथवा जारीसे रोजगार होगा. जो ☰ यह आवे तो चीजें पालनेसे हकीमीसे फायदाहै.जो फरहा -⁝ आवे तो कलाहेपनेसे, पसारीपनेसे, अत्तारपनेसे अथवा लोगोंके हँसानेसे फायदा है. जो =: यह आवे तो चोरी, दगाबाजीसे, दुपया, चौपया जीव बेचनेसे फायदाहै. -⁝ नकीआवे तो शत्रुपनेसे अथवा कूटने पीसनेसे फायदाहै जो =⁝ हुम्रा आवे तो कासदपनेसे, इल्म पढनेसे; सँदेशा पहुंचानेसे, भिक्षामांगनेसे फायदा है, न्याव चुकावनेसे फायदा होगा. जो =: नुस्रुदाखिल आवे तो विद्या आदि पढनेसे फायदा होगा, जो -⁝ यह शकल आवे तो किसानपनेसे, दलालीसे अथवा दुकानसे फायदा होगा, जो -: यह आवे तो कपडा बेचनेसे अथवा ज्योतिष पढनेसे अथवा सौदागरीसे फायदा होगा. जो ☰: यह शकल आवे तो गाने बजानेसे अथवा इल्म पढानेसे फायदाहै. जो ⁝ तरीख आवे तो धोबीपनेसे या मेवा बेचनेसे अथवा जासूपनेसे फायदा होगा इति३२॥

प्रश्न-मैंने किसी जगह आदमी भेजाहै सो वहां पहुंचाहै कि, नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके पहला घर देखे. जो अशुभ दाखिल

आवे तो नहीं पहुंचा है अभी मिला नही जो शुभ साबितहो तो राहबीच मुकाम किया है बहुत दिनोंमें पहुंचेगा; जो शुभ खारिज आवे तो सुखसे पहुंचगया अशुभ खारिज आवे तो तकलीफसे पहुँचा है, जो अशुभ साबित तथा अशुभ मुन्कलीब आवे तो आदमी भेजा था सो मरगया है. इति. ३३ ॥

प्रश्न–स्त्री लडके रूसके चली गई है कौन दिशामें गई ? तहां प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखे तहां कब्जुल खारिज, लह्यान, नुस्रुत्खारिज ये शकल आवें तो पूर्व दिशामें गई है. जो फरहा, जमात, अतवे दाखिल, हुमरा ये आवें तौ पश्चिमादिशामें गई है जो 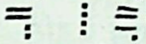 ये आवें तो उत्तर दिशामें गईजो जमात, कब्जुल दाखिल, नकी उकला, ये आवें तो दक्षिण दिशामें गई है॥३४॥

प्रश्न--मेरी वस्तु खोगई है ? अथवा मैं घरके भूल गयाहूँ सो मिलेगी कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके बारहवें घरको देखे जो शुभ दाखिल, नुस्रुद्दाखिल और अतवेदाखिल तथा अंकीश शकल हो तो घरमेंही खो गई है जो नकी अतवेखारिज तथा नुस्रुत्खारिज लह्यान ये आवें तो कहीं रास्तेमें खोयगई है. जमात, हुमरा, बयाज, इज्जतमा आवे तो गढबीच खोगई, गर्दनपर मिट्टी पडी है. फरहा, कब्जुल, खारिज, तरीख, उकला ये होंतो राह बीच तुमने निगाह नही रक्खी तहां खोई है इति ॥ ३५ ॥

प्रश्न--चोरने वह वस्तु धरी है ? तो प्रस्तार बनाके ७ सातवें घरको देखे जो 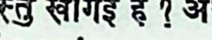 ये आवें तो ओले आदिमें धरी है. जो 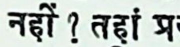 ये आवें तो छतमें अथवा धरतीमें गाडी है; जो 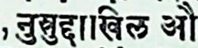 ये आवें तो पानीपार धरी है ३६॥

प्रश्न–परदेशमें जाया चाहता हूँ फायदा है कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके नववें घरको देखै जो 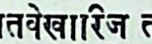 आवें तो गमन करना अच्छा राजी खुशीसे उलटा चला आवेगा. जो नुस्रुत्खारिज

तरीखा फरहा ये आवें तो मेल मिलाप करके आवे रास्तेमें कोई दोस्त मिले उससे कुछुप्राप्ति होवेगी. जो ≡ यह आवे तो गमन मत कर जानेको खतरा है. जमात तथा इज्जतमा आवे तो मत जावो फायदा नहीं होगा.तुम्हारा काम यहांही होगा जो हुमरा आवे तो मार्ग बीच खतरा है चोरके हाथ शरीरको क्लेश होगा. इति३७

प्रश्न–मेरा कौन दिशामें जाना अच्छा है?तहां प्रस्तार बनाके नवमें घरको देखे जो ≡ ≡ ≡ ≡ ये आवें तो दक्षिण दिशासे फायदा है; जो ≡ ≡ ≡ ≡ ये आवें तो पूर्व दिशामें जाना अच्छा है जो ≡ ≡ ≡ ≡ ये आवें तो पश्चिम दिशामें फायदा है. जो ≡ ≡ ≡ ये आवें तो उत्तरदिशासे लाभ हैइति.३८॥

प्रश्न--मेरा मिलना किन लोगोंसे होयगा?तहा प्रस्तारके नवमें घरको देखे ≡ आवे तो तो बडे आदमीसे मिलाप हो जायगा जो ≡ आवे तो मित्र लोगोंसे फायदा होगा मिलाप होयगा कछु फायदा होगा. जो ≡ यह आवे तो बडे लोगोंसे मिलाप होयगा जो ≡ यह हो तो धनवंतसे मिलाप होगा. जो ≡ ≡ यह हों तो भी किसी इल्मदारसे मिलाप होगा ≡ ये....शकल आवें तो बजाजोंसे मेल होगा जो ≡ ≡ ≡ ये आवें चोरोंसे मेलमुलाकात होके फायदाहोगा. जो ≡ हुमरा आवे तो किसी हिंसकदुष्टजनसे मिलाप होगा इति ॥ ३९ ॥

प्रश्न–वह पुरुष मुझपर प्यार करता है कि नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके पहले घरको देखै शुभदाखिल शकल आवे तो बहुत प्यार करता है कछु देवे भी गा.जो शुभ मुन्कलीब शकल आवे तो कभी प्यार करता है कभी नहीं करताहै और जो साबित, जमात, बयाज इज्जतमा, हुमरा आवेतो मुद्दत(बहुत दिनों पीछे)मेहरबान होवेगा. जो शुभ खारिज लह्यान नुस्रुतखारिज आवे तो थोडा मेहरबान होगा जो अशुभ खारिज हो तो सच्ची प्रीति नहीं करेगा इति. ४०

प्रश्न–मेरे हाथमें क्या वस्तु है? और कैसा रंग है? तहाँ प्रस्तार बनाके पहले घरको देखै. जो ⁝ यह आवे तो श्वेत रंग कहिये ल० ≡ आवे तो जर्द रंग है. जो ⁝ यह आवे तो सादा नेकरंग है जो ≡ आवे तो श्वेत रंग है जो ⁝ ⁝ ये हों तो जर्द रंग है जो ⁝ यह होतो लाल रंग है जो ≡ ⁝ यह होतो इसवस्तुका स्याह रंग है पहले घरको देखै जो वहाँ लह्यान, हुमरा आवे तो जर्द सुफेद रंग है और मीठी तथा कीमतकी वस्तु हैजो ⁝ यह आवे तो खाकी रंगहै स्वाद मीठा है जो ⁝ यह आवे तो सफेद स्याह है स्वाद खट्टा है जो ≡ यह आवे तो मुसुकसे, याने मिला रंग है बुस्क है जो ⁝ आवे तो श्याम रंग और कडुवा स्वाद है जो ⁝ यह आवे तो स्याह रंग कीमत खुसबोई है जो कब्जुल खारिज आवे तो सुफेद तथा हरा वर्ण है जो बयाज शकल आवे तो सुफेद तथा सुगंधिवाली वस्तु है जो ⁝ यह आवे तो लालरंग है जो ⁝ यह आवे तो लाल सुफेद खानेकी वस्तु है जो ⁝ यह शकल आवे तो जर्द सुफेद मीठी कीमतकी चीज है जो तरिखा आवे तो नीली वस्तु है. इति ॥ १ ४॥

प्रश्न–खोईहुई वस्तु कहाँहै तहाँ प्रस्तार बनाके चौथे घरको देखै जो दाखिल वा साबित शकल आवे तो पृथ्वी बीच वस्तुहै और खारिज तथा मुन्कलीव होतो घरमें नहीं है इति ४२ ॥

प्रश्न–परदेशीने स्त्री कीहै कि नहीं? तहाँ प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखे जो शुभ दाखिल आवे तो स्त्री की है जो शुभमुन्कलीव आवे तो कीहै अथवा किया चाहताहै जो शुभसाबित आवे तो स्त्री किये बहुत दिन हुए जो अशुभखारिज अथवा शुभ खारिज आवे तो नहीं कीहै बुरे हालसे है जो अशुभ मुन्कलीवआवे तो करी नहीं किया चाहताहै हाथ नहीं आतीहै जो अशुभ साबित तथा अशुभ दाखिल आवे तो वहाँ परदेशी बुरे हालसे है इति ॥४३ ॥

प्रश्न–राजा पादशाह मुझको इनाम कोई ओहदा, देवेगा कि नहीं? तहाँ प्रस्तार बनाके दशवें घरको देखे जो शुभ दाखिल आवै तो इनाम आदि देवेगा शुभ मुन्कलीब आवे तोदिया चाहता है परंतु तुझको अजमायके देगा जो अशुभ दाखिल अशुभ मुन्कलीब अशुभ साबित आवे तो किसी मुखबरने तेरी चुगली करी है जो खारिज आवे तो तेरामुरातबा या तेरी पहलेकीभी इनाम आदि खोसी जावेगी इति ॥ ४४ ॥

प्रश्न–चोर शहरमें है अथवा बाहिर निकलगया? तहाँ प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखे जो वहाँ शुभ दाखिलआवे तो शहरमें है बयाज, इज्जतमा, हुमरा आवे तो चोर शहरमें नहीं है जो जमात आवे तो वह चोर शहरमें है जो ☰ यह शकलआवे तो चोरबुरे हालसे है राह ऊपर बैठा है जो ⚍ ⚏ ये आवें तो कहीं कथा होनेकीजगह बैठा है इति ॥ ४५ ॥

प्रश्न–गतवस्तु मिलेगी कि नही ? तहाँ प्रस्तार बनाके चौदहवें घरको देखै जो कब्जुल दाखिल, अतवे दाखिल आवे तो कितनेक दिन पीछे मिलेगी शीघ्रही तलाश करेगा तो नहीं मिलेगी जो कब्जुल खारिज, अतवेखारिज, लह्यान आवें तो नहीं पावे जो फरहा तरीखा आवें तथा शुभ दाखिल आवे तो पावे जो मुन्कलीब आवें तो भी न पावे. इति ॥ ४६ ॥

प्रश्न–चोर कितने हैं और किस दिशामें गये हैं ? तहां प्रस्तार बनाके सातवें घरकी शकलको देखै वह शकल प्रस्तारमें जितने घरोंमें है उतनेही चोर हैं और प्रस्तारके सोलहों १६ घरोंको देखै तिन सब शकलोंकी शून्योंको इकट्ठी कर चारका भाग देवै एक बचे तो चोर पूर्वसें गया है दो २ बचें तो पश्चिममें गया है ३ बचें तो उत्तरमें गया चार बचें तो दक्षिणमें गया. इति. ॥ ४७ ॥

कोई पूछे कि मुझको फलानेके पाससे (अमुक जनसे) कर्जा मिलेगा कि नहीं ? तहां पूछनेवालेका १--२ घर है और जिसके पाससे कर्जा लिया चाहता है उसका ७-८घर जानना इनको शुभाशुभ विचार और प्रस्तारके छठे घरको देखै तहां शुभ खारिज होवे तो कर्जा देवेगा लाभ होगा. जो अशुभ खारिज आवे तो विलंब (देरीसे) देवेगा. जो दाखिल साबित होय तो कर्जा न मिले बहुत कष्ट पावे मुन्कलीब आवे तोभी कर्जा नहीं मिले. इति ॥ ४८ ॥

अथ मुष्टिप्रश्नकथनम् ।

रमल डालके प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै तहां जो अग्नितत्त्वकी शकल अथवा पूर्वदिशाकी शकल होतो धातुकी वस्तु है जो वायुकी तथा पश्चिम दिशाकी शकल हो तो जीवप्रश्न बताना जो सातमें घर उत्तर दिशाकी शकल होतो तृण, काष्ठ, फल आदि कहना यदि सातवें घर कोई दक्षिण दिशाकी वा पृथ्वीतत्त्वकी शकल हो तो मुष्टिमें पत्थर, मणि, मोती, मूंगा आदि बताना. ॥ ४९ ॥ इति मुष्टिप्रश्नः ।

अब मूक प्रश्न देखनेका विचार कहते हैं-प्रस्तार बनाके पहले घरको देखै तहाँ जो पहले घरमें दाखिल अथवा साबितशकल आवे तो उसका प्रश्न लाभका कहना माल अथवा किसी जगहकी प्राप्तिका प्रश्न कहना और किसीसे मिलनेका है अथवा उसके पाससे कोई चीज जातीरही है उसकी प्राप्ति होनेका प्रश्न कहना, जो प्रथम पर शुभ दाखिल हो तो चिंतायुक्त, पराधीन, दुःख संकट है, किसीसे कुछ कहसकता नहीं या किसी जगह जाना चाहता है मगर जाना नहीं होता, जो प्रस्तारमें पहले घर शुभ खारिजपडे तो कोई पदार्थ दूर है उसकी प्राप्ति होनेका प्रश्न है नित्य विचार करता है भली वस्तु तेरे पाससे दूर है-अथवा कोई चीज है उससे

छूटना चाहता है, अशुभ खारिज हो तो द्रव्यकी चिंतादूर होनेका प्रश्न है. मैं कुछ कार्य करता हूं भला होयगा अथवा बुरा-होयगा. यह प्रश्न है अशुभ साबित हो तो शत्रुके भयका प्रश्न है. वा चिंताके भय तथा बन्धनका प्रश्न कहना जो मुन्कलीव हो तो उसका प्रश्न किसी शुभकार्यके बीच है रहनेका अथवा जानेका प्रश्न है अथवा कोई भला काम है ऐसा जानना जो अशुभ मुन्कलीव हो तो शुभ चिंतायुक्त है, गढ (किला) बीच अथवा अपने घरमें सलाह करता है,कोई बनिनहीं आवती है ऐसे जानो इति॥८०

अब मूक प्रश्न कहनेका दूसरा प्रकार कहते हैं—कि प्रस्तार बनाके १ पहले घरकी शकलको देखै जो वह १ घरकी शकल अग्नि तत्त्वकी हो तो अग्नितत्त्वही खुला हुआ हो तो उसका प्रश्न द्रव्य-संबंधी कहना और वह शकल पुनरुक्त होके प्रस्तारमें जिस घर पडी हो उसी घरका हाल कहना और जो वायुकी शकल हो वायुकी बिंदुखुली हो तो जीवसम्बन्धी प्रश्न कहना, स्त्रीशकल हो तो स्त्रीका प्रश्न कहना, पुरुष हो तो पुरुषका कहना, जलकी हो और जलतत्वका बिंदु खुला हुआ होतो खेतीका काम अथवा बाग बगीचा लगाना इत्यादि प्रश्न कहना पृथ्वीकी शकल पृथ्वीका बिंदु खुला हुआ हो तो घरका मुलकका ग्रामका पृथ्वी प्राप्त होनेका प्रश्न कहना और जितने बिंदु खुले हुये हो तो उन सब तत्वोंके प्रश्न मिलायके कहना ॥ ८१ ॥ इति मूकप्रश्नप्रकारः

अब यथाक्रमसे सोलह शकलोंके नाम, स्वरूप खारिजादिक, वा द्विस्वभावादिक संज्ञा, स्त्री पुरुष विचार, दिनरात्री बलवान्, शुभाऽशुभ, दिशा, तत्व, राशि, स्वामी, चर स्थिर संज्ञा, इन सबोंको कहते हैं. लह्यान शकल ⚌ है खारिज है, द्विस्वभाव, पुरुष, दिनमें बली है, शुभ है, पूर्व दिशाकी है, अग्नितत्वकी है, धनराशि है, बृहस्पति स्वामी है चरसंज्ञक है ॥ १ ॥

कब्जुलदाखिल शकल —: है, दाखिल है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, शुभ है, दक्षिण दिशाकी है, पृथ्वीतत्व, सिंहराशि सूर्य स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ २ ॥

कब्जुलखारिज शकल ⁻: है, द्विस्वभाव है पुरुष है, दिनमें बली है अशुभ है, पूर्व दिशा, अग्नितत्व, कुम्भराशि है राहुकी है, चर संज्ञक है ॥ ३ ॥

जमात शकल ☰ है सावित है, स्थिर है, नपुंसक है, संध्या-समयमें बली है, मध्यम है दक्षिणदिशाकी है, पृथ्वीतत्त्व, मिथुन-राशि, बुधस्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ ४ ॥

फरहा शकल —: है मुन्कलीब है, चर है, पुरुप है, सन्ध्या समयमें बली है, शुभ, पश्चिमदिशा, वायुतत्व, तुला राशि है, शुक्र स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ ५ ॥

उकला शकल =: है मुन्कलीव है, चर है, नपुंसक है, सन्ध्या समयमें बली है, अशुभ है, दक्षिणदिशाकी है, पृथ्वीतत्व, मकर-राशि, शनिश्चर स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ ६ ॥

अंकीश शकल ☰ है दाखिल है, द्विस्वभावहै स्त्री है रात्रिमें बली है अशुभ है, दक्षिणादिशा, पृथ्वीतत्व, शनि स्वामी, कुंभराशि है, स्थिर संज्ञक है ॥ ७ ॥

हुमरा शकल =: यह है साबित है, स्थिर, पुरुप, तथा संध्या समयमें बली है, अशुभ है, पश्चिमदिशाकी है, वायुतत्व है, मेषराशि और मंगल स्वामी है, स्थिर संज्ञक है ॥ ८ ॥

बयाज शकल ☰ यह है. साबित है, स्थिर है, संध्यासमयमे बली है, उत्तरादिशाकी है जलतत्व है कर्क राशि है, चंद्रमा स्वामी है स्थिर संज्ञक है ॥ ९ ॥

नुसुत्खारिज शकल =: यह है, द्विस्वभाव है पुरुष है, दिनमें बली है शुभ है पूर्व दिशा है अग्नितत्व है, सिंहराशि है सूर्य स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ १० ॥

नुसुद्दाखिल शकल ⁝ यह है द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, शुभ है, उत्तरदिशा है; जलतत्व है, मीन राशि है, बृहस्पति स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ ११ ॥

यह ⁝ अतवेखारिज शकल है, द्विस्वभाव है; पुरुष है, दिनमें बली है, अशुभ है, पूर्व दिशा है, अग्नितत्व है, केतुकी है, चरसंज्ञक है ॥ १२ ॥

मुन्कलीव शकल ⁝ यह है, चरसंज्ञक है, नपुंसक है, सन्ध्या समयमें बली है, अशुभ है, उत्तर दिशाकी है, जलतत्व है; वृश्चिक राशि है मंगल स्वामी है चरसंज्ञक है ॥ १३ ॥

अतवेदाखिल ⁝ यह शकल है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, शुभ है, पश्चिम दिशा है, वायुतत्व है, वृषराशि है, शुक्र स्वामी है; स्थिरसंज्ञक है ॥ १४ ॥

इज्जतमा शकल ⁝ यह है, साबित है, स्थिर है, नपुंसक है, सन्ध्यासमयमें बली है मध्यम है पश्चिम दिशाकी है वायुतत्व है, कन्याराशि है, बुध स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ १५ ॥

तरीखा शकल, ⁝ यह है, मुन्कलीव है, चर है, नपुंसक है, सन्ध्या समयमें बली है शुभ है, उत्तर दिशाकी है, जलतत्व है, कर्क राशि है; चन्द्रमा इसका स्वामी है चरसंज्ञक है ॥ १६ ॥

ऐसी यह सोलह शकल जाननी इनकाही सब जगह काम आता है,

इति श्रीयवनमते रमलदानियाल भाषाग्रंथ समाप्त ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS